5797

हड़द सुकु

(तीता लौकी)

मुण्डारी–हिंदी कहानी संग्रह

मंगल सिंह मुण्डा

हड़द सुकु (तीता लौकी)

(मुण्डारी-हिंदी कहानी संग्रह)

हड़द सुकु (तीता लौकी)

(मुण्डारी-हिंदी कहानी संग्रह)

मंगल सिंह मुण्डा

प्रकाशक

झारखण्ड झरोखा, राँची

ISBN : 978-93-81720-31-8

प्रथम संस्करण : 2013

सर्वाधिकार : लेखक

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा

दुकान न.– डी. जी. 03

न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,

रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन न. 834001

मो. 09973112040, 09471160792

ई–मेल : jharkhandjharokharanchi@gmail.com

मुख्य वितरक : क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी

28, शॉपिंग सेन्टर, कर्मपूरा, न्यू दिल्ली–110 015

दूरभाष : (ऑ) 25465978, 65903449 (निवास) : 28542847

ई–मेल : classicalpc@gmail.com

अजिल्द : ~~150.00~~ 150/–

सजिल्द : 250.00

नोट : रचना से संबंधित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद के लिए प्रकाशक जिम्मेवार नहीं हैं।

HARAD SUKU (Tita Lauki)

Mundari-Hindi Stories By Mangal Singh Munda

दो शब्द

हड़द सुकु (तीता लौकी) मेरा प्रथम मुण्डारी–हिंदी कहानी संग्रह है। इसमें 10 कहानियां हैं जिनमें हड़द सुकु आकाशवाणी राँची से प्रसारित है। अब तक प्रकाशित मेरी अन्य कृतियां हैं :

1. **छैला सन्दु** (हिंदी उपन्यास) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. **महुआ का फूल** (हिंदी कहानी संग्रह) मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. **कामिनाला** (मुण्डारी–हिंदी नाटक) झारखंड झरोखा, राँची।
4. **रंगा चौडल रेन पुतुल** (मुण्डारी उपन्यास) झारखंड झरोखा, राँची।

फिलवक्त मुण्डारी भाषा की पढ़ाई में किताबों की कमी बताई जाती है। यदि यह पुस्तक इस कार्य को पूरा करने में सहायक सिद्ध हो सके तो इसे मैं अपनी सफलता समझूँगा।

मंगल सिंह मुण्डा

तिरला, खूँटी
अगस्त, 2011

विषय-सूची

1. जला पुतम – अंधी पँड़की	07–21
2. जादु सकम – जादुई पत्ती	22–32
3. असरए – आस	33–41
4. भोगमनः बुटि – भगवान की नाभी	42–51
5. कुला आरा – बाघ–दामाद	52–57
6. पम्पलद – तितली	58–63
7. लेखक बाईन रः रोग – छपास रोग	64–79
8. जपः रिनिः – पड़ोसन	80–84
9. सरजोम सकम रः पुडुः – साल पत्ते का दोना	85–90
10. हड़द सुकु – तीता लौकी	91–96

जला पुतम

गाँधी बाबाः जोनोम दिनाते गोनोए जकेद रः कनाजि। माने दिसुम रे गाँधी बाबाए तई केन हबिः रः जगर। इम तंग को दिसुम रेन सोबेन होड़ो कोअः मोचा कोरे मियद गे कजि अईउम बिउरोः तन तई केना। आर एना कजि दो तनः – 'कुटीर उद्योग।' आर चिकाते का कजि बिउरोः! पुण्डि साहेब कोतः ते हर दुः तद भारत र! धोन– कुटि हरा–माता रः केटेः होरा दो इनिः ने कुटीर उद्योग गेः कुमु हपे लः।

मेन्दो ने दिसुमा ते इनिः सेनोः जना ने कुटीर उद्योग को गेयो सोबेनेः इदि तोरसा तेदा। तिसिंग गपा ने दिसुम रे ने अलंग जुम्बुलि कुटीर उद्योग लूतुम कोदो सरकारा पर्चा चिलका – दो नरेगा, जवाहर रोजगार गारंटी योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, सर्वशिक्षा अभियान, कोरे दो नमोगा। मेन्दो पर्चा–फाईल चेतन कोरे लोटे जुड़ाः कन दुड़ा को जोः परचि कोदो बाबा गांधी आर नेहरू–पटेल कोलोः गेको तोपा मिसा केदा। तिसिंग गपा दिसुम रे कल कारखाना कोरः सोमय हिजुआ कना। 10–20 हातु को उजाड़ाए में आर 10–15 मील तक रः बिर दारू को मः ए मे। आर दिसुम आर बहरी रेन कुम्पनी को न्योता ओम–ओम केयाते इनकुअः मोचा रे चीनी–मिशिरी अजोम कोम। आर हन्ते, हातु रेन नवा दंगड़ा–दंगड़ि को, होन को हड़म को हतर–हेबे होन बुड़ि को ओड़ाः दुअर बगे केयाते, उरिः मेरोम, सिम सुकुरि को बागे कोकोआते पंजाब, हरियाणा, आसाम, भूटान, दिल्ली, पटना रेन बाबू–बाबूआईन को ताईन ते नगेन रिम्बिल तुरूब ओड़ा को बबई नगेन ईटा भट्टा कोरे को तेरसंग गोएवोः का। इनकुअः जुटा गसर कोरे गे नवा सिटिया दंगिड़ि होन कोअः जीवोन जबाव का।

पुतम मियद चेणें तनिः, पराय लेकानिः। तोबे दो पढ़ाव हागा को अपे पे मेन जदा जाः चि धोन कुटि रः जगर को तला रे ने पुतम चेणें कोतः ते हिजुः तना?मेन्दो का गे। किटिलेन रः जेतन कजि बनोः।

दिसुम रे हातु होड़ो को नाः जकेद कुटीर उद्योग, रः कजि को बराकाईती को, बाबा गांधीअः कटुः को, टुन्डा डन्डाः को, गोल–गोल चश्मा को काको रिडिंग तदा। अले हातु रेन हागा–मिसि कोरे जाँए मरंग बाबू–बाबूआईन कोदो बंग ले। आर जाएँ मेनई रेवो इनिः दिल्ली, पटना, मुम्बई रः होरा कोए सब जदा। हातु रे ओकोए तको सरेः जना?चौका हासा गोः नि,

थाड़ी गसर निः, निकु बारि।

मगर हाले को मियद सरतेयान जगर मेनः चि अबुअः मिद बीता लाई दो कागेः मनातिंग। केचः ओड़ाः कोरे रेंगेः ते गोए सुन्दुड़िन दो जाँएवो कए मोने। एना मेन्ते हातु–हातु नावा कमिनाला ते निर गिड़िन लेकन विषि दारू लेपालाड़ि तिंगुआ कना। हातु कोरा दसा नावोः एनका गेया। चिलका चि दिकु कोआः रिम्बिल तुरूब ओड़ाः कुन्डम रे तोला काई हड़म सदोम चि हुलाब गोएन का मोनेई। चिलका दो कोलकाता शहर रः हिंद मोटर कारखाना रे पुरना अम्बासडर गाड़ी बई का होकाव तना।

जाः बु मेन लेया, ने लेकन दुकु–दसा को लेल केया तेगे, अले ओड़ाः जपः कोरे ने पुतम चेणें गुगु–चू, पण्डु, चूए मेने कतेया। आर इनियः रः अईउम केयाते आईंग उडुतेईग बलय चबा तना।

तिसिंग गपा गोटा दिसुम रे ग्रामीण रोजगार रः माने दो अपन तीते कमि–उदम, नम–उदम। मेन्दो, अले हुड़िग पढ़ाव–लिखवा कन होड़ो को अपन तीते रः माने काले बुझाव दड़िया तना। आर एना का ठीक ले हिसब जदा। हाँ, हातु रेन गुरूआनी ने पुतमो गे अले के नेकागे इतु जद ले।

नरेगा सः ते उरोः तन पुकुरी अतोम, दारू रे दुबा कनातेः कोएवोः बेड़ा तना चि चिलका रकम ते सरकारी देंगा होड़ो रेगेः तन होड़ो कोअः अर मायोम कलम रे पेरेः केयाते अपिया के उपनियाए बई जदा। रानु दोकन ओड़ाः चेतन रे दुबा कन लोः ए कोएवोः जदा चि चिलका सरकारी हातु डाक्टर झाड़ा रूसः जन ते शहर तेः निर तना। चिलका सिसि कोरे रंगा दः पेरे केयातेः हटिंग जदा. ...। चिलका मियद सरकारी मिस्त्री मिद बोरा सीमेंट लो गेलेया करई गितिलेः दुल मिसा जदा....।

आर नाः अबु ने कानी रः असली ठांव तेबु बोलो तना। मगर ने कानी कोचा ते बोलो रः दुअर दो एनका गे मेनः चिलका चि मियद काउ मरः पिंच लगव–लगव केयाते मरः ए बई जना नाः दो ओड़ोः मियद मियद ते मरः पिंच कोए तुद गिड़ि जद चि मरः बाईन मोने जः ईया।

ने बपुड़ि काउ दो सोया–सिंडिः रे जीदेन तन चेणें तनिः। आर ठोरे पे नि कोतः रे सोया–सिंड़िः कोए नम जदा?ओकोता कोरे चि जीलु जंग कोको गिड़ि जदा, ओकोताः कोरे सोया–सिड़ि को गिड़ि जदा, ओकोता कोरे बे–बेपेः

तन होड़ो को मेनः कोआ...। नेकन–नेकन ठांव कोरे गेचा सोया–सिंड़िः नमोगा। आर नेकन कजि कमि को सिरजवे निः दो अबु मनोवा होन कोगे तन बु। ठोरे लेकन कजि–चेणें–चिपरूब, कुला–बिंग कोदो को गोए बारि गेया। इनकु काको गोगोए रिकाः। वेःया को मगर काको बेबेः रिका। सोया मगर काको सोसोया। ने पुतम चेणें अले इतु जः लेया चि गोएनाते गोगोए पुरः मरंग एदकन कमि। एना मेन्ते काउवाः जी शहर मुलि रचा गोः तना चियः चि हातु कोरे दो ने लेकन एदकन कमि को का होबा तना।

तिसिंग गपा हातु कोरे काउः को को खोम इदिवोः तना। मगर नेरे मियद उडुः नमे लेकन जगर मेनः चि ने लेका हातु कोरे काउः को खोम आर संगि रः व गे मियद माने–मोतलोब मेना। हातु कावा ते काउः को निरगिड़ि रः माने मोतलोब दो नेया चि अले हातु होड़ो को खूब बुगिन होड़ो तन ले। ईमान–धोरोम जोगव तन को। एदकन कमि को कले कामिया। एदकन उडुः वो कले ऊडुगा। याने कले सोवन–सिंडि, कले जोजोमा। सोवन सिड़िः रे जीदेन तन होड़ो को का तन ले...।

ओकोए कजि जदा चि बिर जानवर चेणें चिपरूब को हिसिंगा जाति को तनको?डोन्डो जाति को तन को?सिंह कुला जोनोः तन सिलिब होन केः बनचव जः ई (एंगा दो बोरो तेः निर तना।) पन्डु बिंग सरतलेन जना ते होड़ो को सों सों सड़ि केया तेः साड़ाए ओमाको तना। हाथी बोरो ते निर तन होड़ोअः तरन रे बाबा भारेः गोआको तना। ने जूग रेदो नः दो असुल तः ई सेता पहरा बारि गेदो का मलिकियः हका कन फोनोह ठीक जदा। आर होड़ोअः चोलोन लेलेपे–मदमाश, दोआ कन टेलीफोन गेः उल्टा तः। कारे दोए हका तः।

सिदारे आईग कजि लः चि अले हातु होड़ो को ईमानदार आर बुगिन मेनः लेया। मेन्दो नेरे हुड़िंग लेका बिनगा जगरो मेबः। हातु रेन ने अलेअः बुड़खा बड़ाए दो बिगना गेः सेणाँ कना।

बुड़खा बड़ाए होड़ो दो पुतम असुल निः को मेतईया। मेन्दो इनिः पुतम असुल होड़ो दो का मेतई रेजः ठीकवोः गा। इनिः पुतम फंसे होड़ो मेतई रेजः पुरः ठीकवोः गा। चियःचि पुतम असुल, पुतम फंसे वरन कजि से पुरः गे फरका मेनः। मियद जी जोबोन रे अपसुलोः रः असरसरए मेनः। एटगा रे जीवोन रे हसु, हिसिंगा आर गोनोए रः कजि को जमा कना। सिदा कनाजि रे

गूड़—गौतोम जोरो तना। तयोम तेयः कजि रे मिर्चा—मयोम लिंगि तना।

केयद आर मायनो लेका पुतम जाँ असुलो लेकन चेणें दो का तनिः। आर ना गे सेणाँ ते पटः गिड़िया कन काउः लेका गोगोए बेबे: तन शहर रेन होड़ो को नः अपिरेन रः हाया मेनः।

ने दुनिया रे (बुड़खा बड़ाए तको लेकन को सोबेन) निमिनुँग सादव, सिपिगिद होड़ो को मेनः कोआ चि यदि ने पुतम विषय रे दुकु तकलीफ कोईंग उदुबेया अपेयाः ती कटा कोरः उब गे दोन्दोआ। हागाको! आईग गोगोए बेबेः सोसोया लेकन कजि कोदो कईग कजि तना। नेकन कजि—कजि को दो इपय रबल कजि कमि को। आईंग दो जोद जोद गे सदव कोरः कोईंग जगर तना। चनः ने दुनिया रे ने पुतम लेका इमानदार सोंगाड़ा ताईन लगा तिंगआ? आर का रे दो ने पुतम रानी कुड़ी के निमिनंग जीद जीद चनः मेन्तेको सदव जःई? ने पुतम के असरए आर जीवोन रः सोना गरोवा रेको असुल जः ई। नि दो नरक रः पीड़ी रे को दुब जःई। लेकिन हागा को, नेया बुझावन पे चि नेरे खुला रः मोतलोब हन्देद आर हन्देद रः मोतलोब खुला होबाव तना। सुतम ते तोला कन असिद रमता चेतन दारू रः डन्डी रेको दुब नई। आर अयः सोंगे साथी जगर जोपोम नगेन को हिजुः रे दो को रमता रिकुबगेः। ओड़ो दो चना। इनकु गरोवा ते निः केन्दोआते ते शहर ने गोगोए, बेबे, सोपोया बाबू कोतः को इदिबोः तना। ने बुड़खा बड़ाए वो नेया गेः धन्धा तन होड़ो तनिः। मुसिंग होरा रेंग नः तःई चिंग कुलि जःईया।

"आईयः गोलू दों गोटा निदाए बुः आकन गेः तईना। अमः पुतम रानी दो दुरंग बेड़ाया चि का?"

"साब नि गाईदार तनिः जला पुतम रानी। मालिकियः कजि को पतियाः। खूब बुगिन चेणें होन तनिः। नि इदि केयाते सेतः रे उडुँगवोः में आर मियद—बरिया दो ती रेको हिजुः गेया मेने में...हें...हे....हे...। साब सनंग रेदोम अमो मिद जोड़ा लेका....। बुड़खा बड़ाए मिद सयद रेगे सोबेनेः कजि चबा केदा।"

"जला रानी लुतुमेम जोगव तदा?"

"हाँ साब! नि सरते गेः जला कना। तोबेदो चनः लुतुमेईग जोकया?"

"जोनोमा तेगेः जला लेना चि....?"

"का साब। एदकन कमि चियाः कमि तना?"

"लाईः नगेन साब। लाई नगेन एदकन आर बुगिन कमि रः माने चनः नि गाईदार तनिः। अए लो ओपोता हिजुः तन दुश्मन को लेल जको रेः बोरोया चि का? एना मेन्ते नि केईज जला तःईया।"

मिद बीता लाईः गाईदार, आर बोरो...

ने डोन्डो बुड़खा बड़ाएयः मोचा ने लेकन कजि को तुनुम नम नगेन गेचा दिसुम रे जनव सिरमा नरेगा रेन साब को समाज—कुटुम्ब रेन गियानी को, टाका पैसा, सोना—गहना, हिसब तन को स्कूल, कॉलेज, कोरेन गियानी गुरू होड़ो कोको उडुँवोः तना। मेन्दो, ने सोबेन लेकन गियानी गुरू होड़ो को ने बुड़खा बड़ाएयः फँसेया कन पुतम को लेका सोबेन शहर ते गोएन, सोयन आर बेबेन को सेनोः तना। ने लेका हालत रे, ने पुतमः रनः चिलका ते होकावगा? का रे दो निमिन सेणाँः ते पेरेया कन होड़ो कोअः दिसुम निमिन एदका का बईयोः तेयाः। मेन्दो एदकन कमि कोरे बईया कन होड़ो को काको लेला कना। लोन्दोर—फोन्दोर ते बईया कन होड़ो को, दिसुम को तिसिंग गापा सोबेन होड़ो कोको चिना—उरूम जद—कोआ। आर इनकु अको बई तद ओड़ा रेगे को ओन्डर गोएवोः तना। अको गः तद जलोम रेगे को फंसे वोः तना।

इदो जाः बु मेन लेया ने पुतमो गे ने अकादन्दा को उडुः विचार केयाते अईसी बदला जो जंग, बाबा जंग कोदे जंग कोरे गे जीदेन तना। अईसी दो मयोम बदला रे नमोगा। मयोम लिंगी दो मियद मरंग एदकन कमि तनः। बाबा जंग कोरे जंग दो सिंह बोंगा गे दुनिया रेः हेर तदा।

के पुतमः कुड़म रे, जी रे हसु मेनः। ओको जी रे हसु बनोः दुकु बनोः एन होड़ो मो रेः एन जी रे सुकु जीवोन चिलका ते नमोगा? एना मेन्ते ने पुतमः रनः रे आईंग जी जीवोन रः मरंग लेकन जलाकरेईंग लेल नम जदा। जलाकर रः लिवि—लिवि एकेला तन कुड़ाउ तन लहर को अईयः जी को एकेला गिड़ि जदा।

हाँ, अले हातु होड़ो कोले डोन्डो गेया, टोयंग गेया ले। रेगेः गेया ले। मेन्दो अले दिसुम रेन होड़ो किचिरि ले ओमा को तन, दिसुम बाबा चाउली ले ओमा को तना। कौसानी रः देवदार बुरू चेतन रे, कन्याकुमारी जलाकर रः गितिल अतोम रे, कोलकाता रः बिजिर बलंग मानसरोवर बंदा अतोम रे, चेन्नई कोवलम कोरः जलाकर अतोम कोरे कोड़ा होन कुड़ि होन कोआः टोयंग प्रीति पाला ईंग लेला कदा। टोयंग नेया मेन्ते चि जपः तेगे अकिंगः जोनोम एंगा अपु

किंग सेना कदा, अकिंगः मामु दादा तको सेना कदा। आर हन्ते मारू दांगिड़ि कोवाः कुड़म रः तोआ, लुंगम सुतम रः सोनोः रे चुडुकुदा कन, दंगड़ाः कुड़म रे गेसा–गेसा तना।

ने पुतम कजि तना चि नेकन चोलोन दो पुन्डि होड़ो कोआः दिसुम सः ते हिजुआ कना। पुतमः ने कजि अईउम केया ते अईयः जी अलय–बलय तना। होसोड़ो हेरेल का रेदो जाः एन पुन्डि होड़ो कोअः दिसुम तेः अपिर जन रेदो नेसः रः जगर को सोबेनः बदली जदा जाः। का रेदो इनकुअः दाना–पानी गे का नमोगा एन दिसुम रे।

मेन्दो अले डोन्डो होड़ो कोले बुझावन तना चि चारा पानी नगेन जी उडुँग गिड़ियोः तन लोः दो ने पुन्डि होड़ो कोअः पिरिति पाला रः ने लेकन टोयंग रचा गे उजड़ा गिडियोः वा। हाँ तिसिंग का रे गपा...।

लेकिन ओकोए जा नःए मेता ले, अले ने पिरिति पाला के उजड़ा रः बदला नवा जोनोम ले ओम जदा। एना के अले नाड़ी कोतो, बा मोए कोते ले सजव जदा। चन्डु–इपिल कोआः तोवा लेकन मरसल तेले रेड़ा गसर जदा। एना मेन्तेगे, अलिंगः पिरिति पाला जेतय अलो काको ठोर नमेका मेन्ते गे मन्दुकम जुम्बुलय को तला रः अटेदा कन सेरेंग रे अईयः गति रूपा के तला निदा परोम कोआ ते एनंग हिजुः मेन्तेईग कजि लिया। ने अटेदा कन दिरि ओको इमतंग अलेयः कोलोम तई केना। तिसिंग गपा जेटे चन्डुः रः मुलु–चन्डुः तनः। ओड़ोः कोते सोबेन होड़ो को अपन–अपन बाबा कोदे को को अदेर हन्डेद केदा। तिकिन मुलि सिंगि ने हेरेल पुतम नाः व गे चारा पानी नगेन गुगु चू पन्डु चूए मेने कतेया। ओते रे सकम गसर समय रः ठीक सोमय लेल उरूमे नगेन ते दारूबुटा को रे रोड़ सकम रोदोद रोदोद हुन्डी गिडिया काना।

ताला निदा कारोम जना। बोः चेतन रे गोटा चन्डुः लन्दा तना। एन लोः दो मियद साड़ा आईमोः तना– पुतम जाः कागे। कुद चेणें जाः कागे। डुर – असकल जाः कागे ...। का। कागे। आईंग कईंग इतुआना ओकोए हिजुः तना। नेया जगर दो लन्दा रसिका तन बोः चेतन मे चन्डुः इपिल एनं कजि दड़िया। रोंड रोदोद समक कोते पेरेया कन ने रोड़ जलाकर भला पिरिति पाला रः ओको लेकन डोंगा रे देः परोम केया ते मियद होड़ो जाति कजिया ईंग तना– "पुरः गेचि हेड़ा जना?"

"सेतः ते अईउब गे बुगिन। देला अईंग जपः रे दुब में।"

"ने लेका गे इनिः के दुब तिंगु तेः लन्दा जगर ते, एपेरंग ओपोड़े ते इदोड़ोः चिमिनंग दिन आर निदा सिगि चन्डुः आर इपिल कोको तुर हसुर जना।"

आर तिसिंग अईंग एसेकर गे, ने चपाचूप तिकिन सिंगि सोमय ने हसः दारू उम्बुल तला रेईग तिंगुआ कना। जपः रे एन अटेदा कन दिरि लेलोः तना। ओकोरे चि इमतंग को अईंग रूपाः लेबेः लेबे उका– सुपु के तकिया बई केयाते निदाईग बितब जद तई केना। मेन्दो तिसिंग इनिः बंगःईया। दारू चेतन रोड़ कोतो रे एन गुगू–चूः पन्डुः चुः बारि अईमोः तना। रूपाः लेबेः लेबे उका सुपु को बदला पुटुस जनुम कोते जी हसुगे रोगोः तना। अलेयाः कुटुँग कोरे रे अकिंग–अकिंग ते अपाउ रः चोलोन का लेका गे होबा तना। एना मेन्ते रूपा लोः जी रे सनंग ताईकेन रेवो कलिंग अपड़ांदि दड़िन जना। इनियाः अँड़दि एटः निः लोः होबा जका। आर अईयःव गे एटः निः लोः ते अँड़दि होबा जना। अलिंग बरन किंना अपन–अपन ओड़ाः दुअर को, होन बुड़ि कोलिंग लेल जना। आर सिदा रः ने पिरिति–सोंगाति रः जंग हरा माता लेवा बा–जो लेना। आर नः दो नेया ओते रे दुड़ा कोते टोपेवोः तना।

जेटे सिंगि लेकन दिन रे तिसिंग ने पिरिति–पाला रः जंग बुडुजु जंग लेका चटः जना आर संगिन पुरः गे संगिन कोरे पन्डिल जना। मियद जंग दो होएवो रेगे ओटंग बियुर तना। मियद दो बिजिर बलंग इकिर दः जलाकर रे डुम्बुई जना। आर मियद दो रूपाः केचः पैला रे अतंग जना। एन लोः गे इनियः कोड़ा ने एना के सेंगेल रे हँड़ब केदा आर रोंगो तोरोए जना। ओड़ो मियद जंग दो ने हेसः दारू बुटा रः विला कन सेरेग रे उइयूः जना। ओकोनः रेचि सिदा सोमय अलिंग नेरे लिंग दुनुब तन तई केना। तिसिंग जपः रे रूपा दो बंगःईया। इनियः लेबेः लपय कुड़म रः तोवा बदला पुटुस जनुप को दनंग कना। ने जंग दुडुम रेगे नेते हेन्ते गुलि बेडन तन लोः एवोन जना। आरेः ठोर नम केदा चि इदोड़ोः जाः नेका गे गोटा दिसुम रे चिमिन चिमिन नेकन नेकन पिरिति पाला रः जंग को पन्डिल परका जना। लेबे–लपय तोवा को बदला नेक गे जनुम कोते गुतु तना....।

अईगं बुडुजु जंग बईन जना ते कोतः कोतः कईंग सेनोवाः कना? ओते, सिरमा दः आर कुड़म पैला सोबेन तःई सेनोः जना। मेन्दो सोबेन तः रे

दुकु सिपिगिद रः जगर गे पेरेया कना। सिरमाईंग सेनोः जना। हन्रेवो चन्डुः केचः तनाए ओड़ोड़ए गोटा तनाए। नोलद तनाए नोपोला तनाए। इपिल दो इपिल गेको टोंए तना। दः जलाकर रेईंग बोलो जना। हन्डेव चोके हाई बिंग जोवोम नगेन मोचा को चाबा कदा।

अईंग जी जी रेगेईंग उडुः जना चि ओको ने पुतम गेजाः ने अपिया गलेद दिसम कोरे अपिर बेड़ा केना आर सोबेन को जीवोन रः टुन्डु–सुकु, ओपोम–जोपाम रः मोरोम–जोरोम कोए इतु तुका कः कोआ। अईयः जी उडुः तना, यदि दिसुम रेन सोबेन होड़ो को गे ने अपिया गलेद दिसुम रेन जीब जन्तु को लेका को उडुए बिचारे तो के दो चनः होबावंगा?

मेन्दो ने सवाल रः जवाब गे ने पुतम गेः ओम तदा। नेका हेनका जेतानः व का होबावगा। नागे होड़ो को ने जीव–जन्तु कोलोः को सोंगे दड़िन। नागे जाँ–गेता नेया कोरः बा–जो उडुँगोः। अगर यदि होड़ो होन को ने बिर कन्दर चेणें–चिपरूब हाई बिंग को लोः को सोंगेआ तो बे रेदो इसु बुगिन रः कनाजि। तोबे रेदो इनकुअः मोचाते एपेरंग सिपिगित रः जगर बदला रे सुगड़ सोवन बा लेकन जगर को पुतिदोवा। मेन्दो होड़ो होन दो चेणे कोए गोए कोआ, सोया सिड़िः कोए कमिया, बेदेगाए। लाईः नगेन चेणें कोए जआ कोआ अकिरिंग कोवा....।

एना मेन्ते होड़ो होनः मोचा ते जेता लेका रेवो सुगड़ बा सोवन जगर का मुडुँग दड़ियोः गा।

गुगू..चू.....पन्डु...चु....।

अन्धी पँड़की

गांधी बाबा के जन्मदिन से मृत्यु दिन तक अर्थात देश में गांधी बाबा के रहने तक। देश के हर नागरिक के जुबान पर एक वाक्य खासा चर्चित रहा था। वह था – कुटीर उद्योग। चर्चित भी क्यों न रहे। आजाद भारत के आर्थिक विकास में बाबा ने यही कुटीर उद्योग को, सपने में, मेरूदण्ड के रूप में देखा था।

लेकिन देश से बाबा गये तो यह कुटीर उद्योग भी साथ लेते गये। आज देश में कुटीर उद्योग जैसे वाक्य का नाम लेने वाले लोगों के नाम तो नरेगा, जवाहर रोजगार गारंटी योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना जैसे राष्ट्रीय ग्रामीण योजनाओं के फाइलों में मिल जायेंगे। पर, फाइल पर के धूल झाड़ने–पोंछने वालों के नाम तो बाबा, नेहरू, पटेल के साथ ही दफना दिये गये। आज औद्योगिकीकरण का जमाना है। 10–20 गांव को उजाड़ो, 10–15 मील तक का जंगल काटो, और एकराष्ट्रीय, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मुंह में घी–शक्कर डालो। उधर, गांव की अबोध युवतियां, जवान, बच्चे, बूढ़े शिशु को गोद लिये माताएं घर–बार, गोरू– बाछुर, मुर्गी–चेंगना छोड़, पंजाब, हरियाणा, असम–भूटान के बाबू– बाबूआईनों के लिए आलीशान मकान बनाने के वास्ते ईट–भट्ठे में तप मरें, उनके जूठन धोने में अपना बहुमूल्य जवानी गुजार दें।

पँड़की एक पक्षी है, कबूतर नस्ल का। तो भला किसी पक्षी के केंद्र में बुनने वाली कहानी से इस तरह के आर्थिक तंत्र की बातों का क्या ताल्लुक, पर चौंकिए मत।

भारत के गंवार–ग्रामीण अब भी कुटीर उद्योग की बात, बाबा गांधी के नंगे खड़ाउ, बैसाखी डंडा, गोल–मटोल चश्मे, वगैरह–वगैरह नहीं भूले हैं। हम गांव वालों में कोई ऊँचा–ओहदा वाला बाबू–बाबूआइन तो है नहीं और कोई है भी तो दिल्ली, पटना, कोलकाता, मुंबई की राह पकड़ लेता है। बस, बचे लोगों में थाली जूठन धोने, नाली साफ करने, चौका खोदने में दक्षता के सिवा और बचा क्या है?

लेकिन जनाब यह पापी पेट है कि मानता ही नहीं। कुटिया में दुबक कर मर जाना कोई नहीं चाहता। सो, यहां गांव में पलायन की फसल आज भी लहलहाने लगी है। गांव की दुर्दशा आज वैसी ही है जैसे कि आपके आलीशान बंग्लो के पिछवाड़े में बना अस्तबल में आपका बुढ़ा घोड़ा कतई मरना नहीं चाहता या कोलकाता के हिंद मोटर कारखाने में अम्बासडर कार

बंद होना नहीं चाहती। शायद इसी दुर्दशा को देख कर यह पँड़की हमारे घर के आसपास गुंटर गूँ करती रहती है और इसे सुन कर मैं बेहाल हुआ जाता हूं। आज सारे भारत में ग्रामीण रोजगार का मतलब स्व रोजगार योजना। लेकिन हम अल्प बुद्धि वाले भारतीय ग्रामीण स्व रोजगार को शैतान समझ बैठते हैं। हमारी ग्रामीण शिक्षिका पँड़की भी यही पाठ पढ़ाती है।

नरेगा के तहत खुदने वाले तालाब के किनारे बैसे–ठाले निगरानी करती है कि कैसे नरेगा का सरकारी सेवक गरीबों के खून भरे बेईमान कलम से तीन को तीस बनाता है। दवाखाने के मुंडेर, अहाते पर बैठे वह देखती है कि कैसे ग्रामीण चिकित्सक स्वयं डायरिया के चपेट में आकर शहर भाग जाता है या शीशियों में लाल, पीला पानी भर कर ग्रामीणों को बांटता है। वह देखती है कि कैसे एक तकनीशियन एक बोरा सीमेंट के साथ दस कड़ाही बालू मिलाने का हुकुम जारी करता है।

अब यह कहानी अपनी असली रूप के साथ हमारे सामने प्रकट होने की कोशिश करने लगती है। यह प्रकट होने की प्रक्रिया वैसी ही है जैसे कि कोई कौवा मोर का पंख लगा–लगा कर मोर बन गया था और अब एक–एक पंख नोच–नोच कौवा बनने की राह पर है।

यह बेचारा कौवा बिष्ठा पर जीने वाला जीव है। और इसे बिष्ठा कहाँ नसीब होता है? जहाँ का प्राणी मरना–मारना जानता हो, सड़ना– सड़ाना जानता हो, भूकना–भुकवाना जानता हो। हाँ ऐसी जगह पर ही तो विष्ठा प्राप्य है और यह उपयुक्त प्राणी मानव ही हो सकता है। हम गौर करें कि पशु–पक्षी तो केवल मारता है मरवाता नहीं, भूकता है भुकवाता नहीं, सड़ता है सड़वाता नहीं। यह पँड़की हमें सिखाती है कि मारने से जयादा मरवाना अपराध है, थूकने से ज्यादा थुकवाना ज्यादा दुष्कर्म है, सड़ने से ज्यादा सड़वाना अन्याय है। इसी लिए कौवो का रूख या कहें पलायन गांवों से शहर की ओर होता है। आज कल गांव–पड़ोस में कौवों की संख्या दिन–ब–दिन घटती जा रही है। यहां एक और गौर फरमाने वाली बात है कि इस तरह कौवों का घटना–बढ़ना भी एक खास मायने रखता है। गांव से कौवो का पलायन यह संकेत देता है कि हम ग्रामीण भद्रजन हैं, ईमानदार हैं, क्योंकि हम कुकर्म नहीं करते, कुविचार नहीं पालते, यानि हम विष्ठा नहीं छोड़ते।

कौन कहता है कि पशु–पक्षी हिंसक हैं, असभ्य हैं। जंगल का सिंह राज हिरण के प्रसव से निकला शिशु (मां, डर के मारे भाग खड़ी होती है) का पालनहार बनता है। नागराज फन फैलाये लोगों को अलख जगाता है। (बिना छेड़े नहीं काटता)। हाथी भयाक्रांत किसान के कंधों पर बोझ रख छोड़ता है...। खैर, पालतू कुत्ते तो अब घर की रखवाली के साथ–साथ लटकता टेलीफोन भी ठीक करता है और मानव! कम्बख्त वह तो रखा टेलीफोन को भी उल्टा लटका देता है।

मैंने कहा था कि हम गांव के लोग भद्रजन हुआ करते हैं। पर इसमें कुछ अपवाद भी हैं। गांव का यह बुड़खा लोहार अपवाद स्वरूप है। बुड़खा लोहार है तो पँड़की–पालक। लेकिन हम इसे सही–सही पँड़की पालक नहीं कहेंगे। इसे पँड़की–बंधक कहना ही उचित होगा। क्योंकि पालन और बंधन में आकाश–पाताल का फर्क है। एक में आशा और जीवन अपेक्षित है। दूसरे में निराशा एवं मरण समाहित है। एक में मिश्री का घोल है, तो दूसरे में मिर्च के हाय–हाय बीज।

तोता, मैना की भांति पँड़की कोई पालतू पक्षी तो है नहीं। और न चालाक कौवा की भांति मारने, सड़ाने, थुकवाने वालों के पास शहर उड़ जाने की ललक उसमें है। इस दुनिया में (बुड़खा लोहार जैसे लोगों सहित) मानव इतना क्रूर किस्म का जीव है कि यदि इस निरीह पक्षी के संदर्भ में दुख–तकलीफ का दास्तान सुनाऊँ तो आपके रोंगटे खड़े हो जायेंगे। जनाब, मैं मारने, सड़ाने की बात नहीं करता। ये सब कार्य तो आज के मानव समाज में शुमार हो चुके हैं। मैं तो जीते जी तकलीफ देह प्रक्रियाओं की बात कर रहा हूं।

क्या इस जगत में ईमानदार, शरीफ रहना गुनाह है? नहीं तो इस पँड़की रानी को इतनी निर्दयता से सजा क्यों दी जाती है? इस पक्षी को आशा और जीवन के सुनहले पिंजड़े में नहीं पाला जाता है। इसे नरक–बैरक के खुले आसमान पर बैठा दिया जाता है। मगर जनाब यहां खुला का मतलब बंद, और बंद का मतलब खुला होता है। भौतिक तकनीक पर आधारित बांस और सूत से बना कम्बख्त यह ऐसा यंत्र है कि खुले आसमान पर बैठे ही किसी साथी पँड़की को फांस लेती है। फिर बंद पिंजड़े में से किसी को खोलता है। कोई साथी पँड़की इससे मिलने आयी कि नहीं, पलक मारते एक छिपे जाल में

कैद हो जाती है। फिर खोल कर हाट–बाजार में, शहरी बाबुओं के हाथों मारने मरवाने ले जायी जाती है।

'अपना गोलू तो रात भर भूंकता रहता है। तेरी पँड़की रानी तो गाती–उती भी है या नहीं? ग्राम–बन्धुत्व की भाषा में मैंने बुड़खा लोहार, पँड़की बन्धक से कहा।

'साब, यह गाहक है, अंधी रानी। बड़ा चालाक चुस्त और मालिक का अन्धा वफादार है। सबेरे निकलो तो दिन चढ़े दस जोड़े हाथ आया ही समझो। साब, चाहो तो आप को भी एकाद जोड़े.....? वह एक ही सांस में अपना सारा पत्ता खोलते जा रहा था।

'अंधी रानी' नाम रखा है?

'हां साब, यह अंधी ही है और क्या नाम रखूँ?'

'जन्म से अंधी है या....?'

'कोई भी गाहक पँड़की को हम ही अंधा बना देते हैं।'

'ऐसा बुरा काम क्यों करते हो।'

'पेट के खातिर साब! पेट के खातिर अच्छा या बुरा क्या? यह गाहक है गाहक। जब आता दुश्मन को देखेगी तो यह डरेगी कि नहीं? यहां इससे लड़ने–भिड़ने के लिए ही तो साथी पँड़की आया करती हैं।'

पापी पेट, गाहक और डर।

अनपढ़ ब्याधा बुड़खा लोहार के मुंह से निकले इन शब्दों के विश्लेषण के लिये ही देश में हर साल नरेगा के अफसर, समाज शास्त्री, अर्थतंत्र के विषारद एवं मर्मज्ञ, विद्यालय, महाविद्यालयों से बाहर निकलते हैं। मगर, ये शख्स उस बुड़खा ब्याधा के हाथों फंसे पँड़कियों जैसा शहर में बिकवाने, मरवाने, थुकवाने और खुद को सड़वाने जाते हैं। ऐसे में इस पँड़की का रोना रूके तो कैसे? नरेगा मरेगा नहीं तो क्या?

या फिर, दिन–ब–दिन शिक्षित होते विश्व परिवेश में अपनी चालाकी पर चलना कितना प्रासंगिक बन गया है। पर चालाकी कभी फलता भी है क्या? विश्वविजयी बनने की ललक रखने वाले चालाकियों को आज दुनिया दिन के उजियाले में खूब पहचानती है। वे खुद के बुने जाल में ही फंसे पड़े होते हैं। क्या पता पँड़की ने इसी आलोक में मांसाहारी के बदले शाकाहारी

बनना स्वीकार किया हो। मांस खून के एवज में प्राप्य है। खून बहाना एक असभ्य अपराध है। इधर, दाने उगाना धरती को श्रृंगार देना है। यह आग्रहशील न्याय है।

पँड़की के जीवन में दर्द है। जहां जीवन में दर्द न हो वहां उसकी सुखद अनुभूति कैसे संभव है। इसीलिए पँड़की के क्रन्दन में मुझे जीवन का अथाह समन्दर दिखाई देता है। समन्दर जिसकी लहरें मेरे रूह की कहानी है। हम गंवार नंगे हैं। पर नंगे को आवरण देते हैं। कौसानी की ऊँचाई पर, कन्याकुमारी के धरातल पर, कोलकाता के सरोवर झील तीरे, चेन्नई, कोवल्लम के समन्दर पर, मुम्बई के मदहोश मॉलों में मैंने नायक–नायिकाओं के विशुद्ध प्रेम को नंगा होते देखा है। नंगापन इसलिये कि बगल के बाईपास से उनके जन्मदाता माता–पिता शुभचिंतक, मामा–भाई वगैरह भी जा रहे होते हैं और उधर है कि बांके जवानों की छातियां सिल्क जॉकेट से उभरे उरोजों से रगड़ खा रहे हैं। पँड़की बताती है कि यह पश्चिमी सभ्यता है। पँड़की पर तरस खाते हुए मेरा मन कुलबुलाता है, कम्बख्त वहां जाकर यह अपनी बोली ही बदल देती होगी। नहीं तो इनके प्रेमांगन में दाना–पानी ही नसीब न हो। लेकिन हम गंवार मानते हैं कि दाना–पानी के मोहताज से पँड़की के देह त्याग से पहले इनके प्रेमांगन ही उजड़ जायेगा। हां, उजड़ जायेगा, आज नहीं तो कल!

लेकिन हम इस प्रेमांगन को उजाड़ने के बजाय, इस विशुद्ध प्रेम को नंगा होने देने के बजाय बनफूलों, लता–लरंगों से सजा–संवारते हैं। चांद–सितारों के धवल चांदनी से नहलाते–धुलाते हैं। हमारे एक–दूजे के प्रेम को किसी की नजर न लगे– इसी ख्याल से मैंने अपनी प्रेयसी रूपा को आधी रात बीत जाने के बाद ही, महुआ के झुरमुटों से घिरे इस चट्टान पर आने को कहा था। यह चट्टान हम गांव वालों का खलिहान हुआ करता है। आज कल जेष्ठ महीने का शुक्ल पक्ष चलता है। किसान फसल के दाने कब के घर पर समेट चुके हैं। दिन के भरी दोपहरिया में कम्बख्त यह पँड़की दाने–पानी की आशा में अभी भी गुटर–गूं करती रहती है। धरती पर पतझर के सटीक नमूनों के रूप में सूखे पत्तों का अम्बार लगा है। आधी रात बीत गयी। सरके ऊपर चांद हंस रहा है और यह किसी इंसान के आने का आभास। पँड़की! बुलबुल! तीतर–बटेर! नहीं मैं नहीं जानता। अल्हड़ चांदनी के फैलाव में चांद–सितारे

ही जानें कि इन सूखे पत्तों का समन्दर प्रेम के किस नैया से पार कर मेरे पीछे कोई आकृति बोल रही है–

'बहुत देर हो गयी प्रिये।'

'हूं, सबरे से देर भली। मैंने इसे पास बिठाते हुए कहा।'

...इसी तरह उसे बिठाते–बैठाते, हंसाते–रूलाते जाने कितनी बार चांद सूरज, सितारे उदय और अस्त हुए होंगे।

और आज मैं, अकेले सुनसान दुपहरिया में इस पीपल के छांव तले खड़ा हूं। सामने यह पत्थर जहां कभी रूपा के मुलायम बांहों की तकिया बनाकर रात गुजारा करता था। पर, आज वह नहीं है। ऊपर सूखे ठूंठ डालों पर पँड़की का वही गुटरगू...। रूपा के मुलायम बाहों के बजाए पुटुस के काँटे चुभने लगे थे।

हमारे समाज में प्रेम–विवाह नहीं के बराबर हुआ करता है। इसी कारण हम चाह कर भी परिणय सूत्र में एक दूसरे को बांध नहीं पाये। उसका विवाह किसी और से हो गया। मेरा किसी और से। हम अपनी– अपनी दुनिया बसाने में मगन रहने लगे। हमारे प्रेम–धारा से सिंचित यह प्रेम–पौधा अब तक पुष्पित–पल्लवित होकर झड़ जाने के कगार पर है।

और जेष्ठ महीने के प्रचण्ड धूप में एक दिन यह कोहिनूर के बीज की तरह प्रचण्ड वेग से चहु दिशा में, छिटक पड़ी। एक तो नभ के बवण्डर में फंसे, हवा में ही उड़ती ही रही। दूसरा समन्दर की अथाह गहराईयों में जा डूबी। तीसरा, रूपा के फटे आंचल पर जा गिरी, जिसे फौरन उसके पति देव ने आग के हवाले कर डाला और वह वहीं खाक हो गयी। चौथा, इस पीपल के छांव तले गिरी। बीज को शीतलता में शुकून मिलता और इधर–उधर झांकने लगी। होश आने पर अपने को पायी कि ऊसर जमीन के बदले उस निर्जन पत्थर की चादर पर पड़ी है, जहां रूपा के संग, गोद पर सोया करती थी। आज रूपा का अता– पता नहीं है। उसके मुलायम उरोजों से टकराने के बदले पुटुस के कांटे चुभ रहे हैं। बीज ने आगे ताज–बीज किया कि न जाने इस संसार में इस तरह, कितनों के प्रेम–आशियाना उजड़ चुके होंगे, कितनों के पूर्व– मिलन स्थल पर इस तरह कंटीले झाड़ी उग आये होंगे।

मैं कोहिनूर के बीज बन कहां–कहां नहीं गया? जल, थल, नभ और

मानस अंचल पर, सभी जगह गया। पर सभी जगह दुख–दर्द की बात ही भरी पड़ी है। नभ में गया तो वहां भी चांद के दागदार बनने और सितारों के टूटने, कराहने की दर्दनाक दास्तान सुना। अथाह समंदर की गहराई में गया। वहां जलचर एक दूसरे की जान लेने को मुंह फाड़े तैर रहे हैं।

मेरे मन को शक हुआ कि कहीं यह पँड़की ही इन तीनों लोगों के प्राणियों से दोस्ती बढ़ा कर जीवन का यह रहस्य सिखायी होगी। मन सोचने लगा, यदि जगत का इंसान भी इन तीनों लोकों के प्राणियों से दोस्ती बढ़ा ले तो! तो क्या परिणाम होगा? पँड़की ने इस प्रश्न का जवाब दिया है– नहीं, ऐसा कुछ न होगा। न इंसान इन तीनों लोगों से दोस्ती बढ़ायेगा न इसका परिणाम निकलेगा। यदि ऐसा कुछ हो भी गया तो परिणाम यह होगा कि इंसान के मुंह से अपराध की बू के बदले यास्मीन की सुगंधित खुशबू निकलेगी। मगर वह तो प्राणी को मारेगा, काटेगा, सड़ायेगा। अंधा बना कर गाहक बनायेगा, अपना पेट पालने के गरज से.....। इसलिए उसके मुंह से यास्मीन की खूशबू तो कभी नहीं निकलेगी। निकलेगी तो बस, अपराध बोध की सड़ान्ध ही। गुंटर–गूँ...गूँ....।

जादु सकम

सोना बेटा तईंग। न दो अईयः सिरमा दिसुम सेनोः सोमय तिउः जना। अईयः कजि पतिया मे। ने, अलिंगः सना–सम्पोड़ो को। मजा लेका जोगव जोम में। बेटा, नेया बारि सरेय कना अमः नानाः निसाना। ने...अईंग सनंग चि अईंग गोए जन तयोम ते नेया के अईयः बोः सः रे जोगव तम।

सिरमा दिसुम सेनोः जपः रे तिंगुअ कन अईयः नानी ने कजिः कजि लिः ईंग। आर अईंग तिंगु–तिंगु तेगे, मेद रः पिरिल–पिरिल तन लोः इनिः केईंग लेला कःई। एकेला तन डँड़ोः कोते एना चीजिंग सब केदा। मेन्दो पुरः दिन जकेद कईंग ठोर नम लः चि ने जाँ–लेकन चीज रे भला चनः मेनः? आर निमिन दिन रोको–कोम्बो तनः रेबेद दुकु लः?

ने चीज मियद पैसा जोगव तेयः रिकुब बुगुली तनः। हे, नेया रबल कजि गेदंग तनः। पुरः ते पुरः नेया रः बनई कोरे, रंगा रेन्चो कोरे बिनगा होबा दड़ियोः गा। मेन्दो नेया रः मोतोलोब दो मिद गे–कुचुरा पैसा को जोगव तेयाः उकु–दनंग तेयाः बुगुली। ओड़ोः होड़ो–होड़ो को नगेनो गे नेया रः बनई बिनगा होबा दड़ियोः गा। हातु कोरेन डोन्डो होड़ो कोतः कोरे एटाः रकम बुगुली। शहर रेन साहेब कोतः कोरे एटाः रकम बुगुली। मिसा जोन्डा उरि तन लो मियद दोरगाः कुड़ी लेल किःईंग। लेल किःईंग लोः गे जगारईंग तना–अते रे जोन्डाम ओमाईया?आर इनिः के हे ईगं मेनः ई। इनिः जोन्डाईंग ओमः ईया। एन लोः अएयः सोनोः बितारा ते मियद पैसा जोगव तेयः बुगुलीः उडुँग लः। बुगुली रः बरन ओड़ोः होड़ो–होड़ो को नगेनो गे नेया रः बनई बिनगा होबा डड़ियोः गा। हातु कोरेन डोन्डो होड़ोः कोतः कोरे एटाः रकम बुगुली। शहर रेन साहेब कोतः कोरे एटाः रकम बुगुली। मिसा, जोन्डा उरि तन लो मियद दोरगाः कुड़ी लेल किः ईंग। लेल किः ईंग लोः गे जःईंग–अते रे जोन्डाम ओमाईया? आर इनिः के हे ईग मेतः ई। इनिः ओन्डाईंग ओमःईया। एन लोः अएयः सोनोः बितारा ते मियद पैसा जोगव तेयः बुगुलीः उडुँग लः। बुगुली रः बरन मुन्डि मिसा तेः रचः लः दो मियद चार आना सिकी उडुँग जना। एना तेईंग मुण्डि केदा चि गोल–गोल रिकुब बुगुली को गे मेनः।

मेन्दो ओड़ो गेः मियद सिपई रः किंग। आरे कजियईंग तन एई होन नेते हिजुः में....। आर ने मिद टाका। एन जपः रेन तमाकु हड़म तः तमाकु किरिंगआउ कोः में।

चर...चर....चर...चर... ।

ने टुन्डुआते हन टुन्डुए रचः केदा। मिद टाकाए उडुँग केद चि ओड़ोः चर... चर....चर... । ओड़ो नसः हँन्सः तेः रचः कोटोंग केदा। नेया दो मेंड़ेद ते बईया कन चेन लगावा कन तईकेना। नेया दो जिलिंग आर जुड़ागोः लेकन बुगुली तई केना।

मेन्दो अईयः नानीयः बुगुली दो नेया कोआते बिनगा तई केना। नेया रः मोचा दो नेका जुगुतु ते बईयाकन तई केना चि मियद टोन्डोमेम रचः लेरे हन्डेदोः गा। मियद टोन्डोमेम रचः लेरे निगोःगा। होना तेगे नेया के नानीयः होटोः रे हका कदेईंग लेलाउ जःई तई केना। मेन्दो, इमिन रेवो, एना विषय रे जाँन जगर कईंग जगारई तन तई केना। हाँ, नेया लेल केते जी रे मियद किटिल दो तई केन गे। मिसा नः दो नेया ले केते जगर पुतिद जन गेया। कुलि किः लोः गे ओको कजि बई होड़ो लेका कानी–कोन्तोरीः एटेः केदा–

चनःईंग मेता मेरे बईयोगा बेटा? ने बुगुली बितर रे मियद जी लो तन लेकन कानी उकुआ कना। आर कजि जद लोः दोए पिरिल पिरिल एटेः जना। इनि दुकु तन लोः ए कजि एटेः केदा, 3 माई उनीस सौ पिछत्तर बोछोर रः मियद अकाल दिन रः आईउब सोमय तई केना। अमः नाना लोः गे ने 'सोना पेट' गाड़ा ते सोना चापी लिंग हिजुः लेना। एन सोमय कोरे सोबेन सः रे रेगेः रबग, होड़ो को रेंगे बलय तन को तई केना। ने तला रे नेया धंधा बारि असुलेन तेयः होरा तई केना। होड़ो को बिर कोजाते बिर संगा–सारू कोको उराउ जद तई केना। सान–सकम, बा–जो कोअकिरिंग केयाते लाई को असुल जद तई केना। अलिंग दो गड़ा रे सोना चपी रः धंधा लिंग सब केदा। गड़ाः लोसोदा ते सोना दाँड़ा होन कोअः इनुँग लेकन कमि दो का ताई केना। इकिर दः रे ओकोए सयद दड़ियाः इनिः गे बराकाईतिः नमेया। आर ओकोए गड़ा अतोम रेः तिंगु पेड़ेःपेड़ेया–कनोगा, इनिः दो समा ती गेः रूड़ाः। नेया कोदो जी केटेः कुड़स केटेः रः कजि कमि को तनः बेटा रे। अमः नानाः कुड़म दो दिरि लेकन कुड़म कन केना। रनंग बुरू लेका सलंगी उडुः–विचार नई केना।

एन हुलंग जनव लेका गे बुरू बोंगा, इकिर बोंगा, रंग रूड़ी महादेव, बुचा, महादेव हनुमान ओड़ोः जपः कोरेन सोबेन चण्डी–चौरा को रः जद कोलोः गाड़ा रे कुड़िल केदा– 'चुड़बुई'। अईंग दो गाड़ा अतो रे रसिक तन गेईंग तिंगुआ तदा। दुड़िग कोन तयोम तेदो दिरि–लोसोद–जम्बर जटः कोलोःर तर उडुँग तद। अईंग उडुः तना चि दिरि–लोसोद कोलोः जिरपी–जलंग अरः चिरपी हाई कोए तेर उडुँग तद को। कागे, बेटा रे। नेया दो जुल तन समडोम

दिरि होन ताई केना। नेया लेल केद चि अलिंग बरन किंग सुकु–रसिका तेलिंग कोंका गिड़िओ तना। अचका गे अईयः लब्दा सिद जना। आर जी, कोते जलाकर से डुम्बुई जना। अलिगेः आँड़दी रे बमाड़े बोंगा तन रेः कजि लः – पुरः जुम्बुड़ी बाईन का ठीकिया। नेया को उडुः केया ते इनिः केईंग अर्जी किः दोला नः दो, इमिउंगे। नः दोलंग होबा जना। ओडः तेलंग रूडः। पुरः जुम्बुड़ी का ठीकिया।

मेन्दो, इनिः अईयः कजि मियदो कए पतियादा। कजि केदाए–होकाए में नेकन कजि को। तिसिंग अलंगः कजि बोंगा को पतिया कादा। ओकोए कजि दड़िया चि गपा हुलंग को पतियः? आर नेया तेदो अमः होटोः रः माला बारि बईयोगा। मोहनाः होन किमिन रः नगेनेम उडुःअ कदा चि का? एन लोः दो ओड़ोःए डुम्बुईन जना–चुड़बुई।

बेटा रे, निसुकन दो विधि पुरः गे एदकाए बईन जना। अम जाः उडुः तना, निसुकनो गे, एनाते मरंग लेकन सोना रः दिरिः तेर उडुँग तदा। मेन्दो का। अतोम रः मरंग लेकन हुटुब दिरि गाड़ा ते गुली जना। आर अएयः उडुँग वोः तेयः दुअर गे केसेद जना। अलो जाः ए उडुँगवोः अलो जाः ए उडुँगओः मेने लोः इसुकोनेः गे एनतः रेईंग होरोआ कःई। मेन्दो इनिः काएगे उडुँग रूड़ा दड़ि जना। अईंग रः तन लोः ओड़ाःईंग रूड़ा जना।

गाड़ा ते उडुँग किः चि इनिः ले हसा–गड़ा किःया। तयोम ते अईयः उडुः हिजुः जना चि ने सोना दिरिंग चिकाया? कोताः रेईग जोगव–उकुइया? मालाईग बई रिकाए रेदो कुम्बुड़ी–जुम्बुड़ी रः बोरो। ओड़ा रेईंग तोपाए रेदो डाकु कोरः बोरो। मुसिंग हुलंग अईयः जी रे उडुः हिजुः जना। उलि जोम हिरूई–दिरूई होन को जो रेगे चको टोटेया, दारू रे दो गा गे। चते का ने समड़ोम दिरि रः तार बई केयाते एना रः रिकुब बुगुलीइंग बई रिका तः। आर एन चेतन रे लिजः रे तुकुई जेरेद तका। कुम्बुडु कोदो चेतन गे दंग को लेला! एन लेका ते बितर रः समड़ोम दो बनचवा कन गे ताई नोवा। पंसारी नेया को जगर तन रेः अईउम चोटेः ले लिंग।

तिसिंग सेतः सिमको रनः रे नाना बगई जना। हातु अतोम कन्टाड़ा बुटा रे इनियाः हसा गड़ा तैयार कना। हतु रेन सोबेन ओड़ोः जपः कोरेन सोबेन हगा–कुपुल को हसा गड़ा सोमय रेको जमा कना। पंसारी गड़ा लतर रेः हड़ा गुआ कना। आर मियद–मियद ते सोबेन अयः चीज कोए जोगव इदि जदा। एन रे मिदनापुरी हुक्का, वृंदावन रः मद ते बईया कन टुन्डा डन्डाः शकूर वुड़कू

ओमा लिः उर रः सुनुम सिसि। नेया कोलोः गे के समड़ोम रः रिकुब बुगुलिवो ताई केना। एनए नम तद लोः गे कुम्बुडुः सेंणा ते अए–अए गे बुदबुदाव जदा–ओह! अच्छा ठीक गे। नाः नाःदोईंग जोगाव नः। तयोम ने नेया दोईंग उर उड़ँग गेया, अहा समड़ोम।

अपि निदा तयोम ते पंसारी अयः गोरे गोतेयाने मियद अरः रंग तेयः बुगुलीः उडुँगे। मिसय अदेरे। अयः अपुते लेल नम तःई। आरेः कजियाई तना बेटा नेया बुगुली दो ओकेरेम नम लः?

पंसारी – मड़िते आबा मड़िते कजि में।

अपुते – हाँ हाँ कजि में, नेया बुगुली ओकोरेम नम केदा?

पंसारी – एन हुलंग नाना, बुड़िया तोपा तन रे...। ठोरे में आबा, तिसिंग ते बार हिसी मोड़े सिरमा सिदा रः जगर...। ओको इमतंग चि अईयः उमर मोड़े सिरमा होबा कना तई केना....।

अपुते – ओ हो ठोर केदाइंग मोड़े सिरमा होबा कन तई केना.।

पंसारी – हे आबा। नाः जकेद हातु रे जेतय काको इतुअन। मेन्दो...।

अपुते – हाँ मेन्दो?

पंसारी – मेन्दो तोपा गड़ा ते नेया आगु दो होन कोअः फुदि इनुंग दो का तई केना। जाँ जेतय रेदो होनंग एनतः रेगे गोए सेंगेर जन तेयः।

अपुते – गोए सेंगेर जन तेयः? बाबा रे बाबा! हाँ ओड़ोः गे अयर ते कजि में...। ओको होड़ो गोगोए को...?

पंसारी – का गे गा। एन कन कजि दो का नई केना। ताला निदा जाः होबा कन तई केना....।

अपुते – ताला निदा!।

पंसारी – हे! चिलका गे ऊ चलु नगेन कुदलमिंग दोन्दो लः सिरमा ते सुड़ा सकम को गसर उईयुः जना।

अपुते – सुड़ा सकम को उरूडु जना! एनाते?

पंसारी – हुड़िंग दूर अयर रे मियद पुण्डि होड़ोए हिजुः जना।

अपुते – एन होड़ो चिलकाए ताई केना?

पंसारी – खूब बोरोआन गेः लेलोः तन ताई केना आबा। सदोम चदलोम लेका ओर तनगे बोः रः ऊब। कोकोर को लेका बोरोआन गेः मेदा कना। अटकिर सकम लेकाए लुतुरा कना। रूका को लेकाए डाटा कना....। इमिन

रेवो, अईंग ऊर तन गेंयईंग....ऊरतन गेयईंग.... ।

अपुते – एन होड़ो जाँनःए कजि लः?

पंसारी – हे गा आबा। इनिः कुलि किः ईंग। इनिः कुड़ि मोचा तः कुलि जःईंग – एई! ओकोए अईयः ओड़ाः ओटः जदा? अम चनम नम तना?अई नेसः रेईंग तिंगुअकना।

अपुते – एना ते चनः होबा जना?

पंसारी – इनियः कजि ते कईंग सेसेन जना। आर ऊर तन गेईंग ताईन जना। एन लोः दो ओड़ोः मियद पुण्डि होड़ो हिजुः जना।

अपुते – इनिःयो जाँनःए कजि लः?

पंसारी – हे। इनिः दो कोड़ा मोचा ते ककला जद तई केना–ए डोन्डो मनोआ पाजी, शैतान! अलिंगः ओड़ाः रे कुम्बुड़ु बोलो रः जी रे अलोम अगुईया। का रे दो अमके रोको बई केयाते बदुली तः लिंग कुल दराड़ा मा। आर इनि अमकेः जोम रपुद में। एना मेन्ते अमः बुगि नोअःम सनंग तन रेदो मजा लेका ते अलिंग असि लिंग में। ओकोअम नम तना एना बुगिन लेका ते असि लिंग में। कम इतुअना अलिंग ओकोए तन लिंग? अलिंग दो सुखुवा आर दुखुवा तन किंग।

अपुते – हँ, सुखुक आर दुखुवा! एना ते चना होबा जना– बेटा रे?

पंसारी – जी रेईंग उड़ुः केदा, निकिंग दो हतु रेन होड़ो किंग गे। बोरो रः कजि दो का गे। आर इनकिंग तः रे अर्जी जद लोःईंग कजिया किंग जना – ए सुखुवा आर दुखुवा नकिंग अईंगः मियद कजि अईउमेवेन। ओड़ाः रे अईंगः आबा एया दिना ते रूवा तना।

रानु रिका तेयः ओड़ाः रे मिद पैसा बनोगा। अईंग एन हुलंग नेतः रे मियद समडोम रः बुगुलीईंग बगे लः। एना ओम रूड़ाईंग बेन।

अपुते – एनाते चनः किंग मेतः में?

पंसारी – मेतःईय चि अम नेयव ठोर जोमेन में चि एना बुगुलीव गे अलिंग सः तेगेम नम लः। कारे दो अमः नानाः एदकन कुड़ि अएयः एंगा–अपु ओड़ाए इदि केदा होनंग। सिंह बोंगा सिंह बोंगा अम दो बुगिन मनोवा होन लेकम अटकरोः तना। मर चनः मन नम तना असिलिंग में।

अपुते – एनाते?

पंसारी – एन तयोम ते बेगर होएवो तेगे, मियद सकम सिरमा ते उईयुः तन लोः अईयः होड़ो रे जुड़ाः जना।

अपुते – आर?

पंसारी – एन सते–सते रेगे, मियद हम्बल चीज गड़ा रे उईयुः जन लेका अईउम जना– 'फेथ'। अरिंग बुझव जना, नेया गे अकिंग सः ते बरदान नम जना।

अपुते – एना ते चनः चिका जना?

पंसारी एनईंग सबे लोः दो ओकोरे अद जना। आर एन तः रे बरिया पन्डु विंग किंग सरनला कन चिकिंग सो–सो जदा।

अपुते – आउच! गोएः सुन्दुई जनईंग बिंग किंग। पन्डु बिंग किंग।

पंसारी – हे आबा बिंग किंग। ए मुका जिलिंग बरिया पन्डु विंग किंग कुचा कना।

अपुते – एना ते?

पंसारी – एना ते किंग कजि केदा – एई मनोवा होन अलोम बोरोया। बरन तीते इनकिंग दोन्दो परका तकिंग में। आर एन तः रे मियद चीजिम नमेया।

अपुते – एना ते चनः म चिका केदा?

पंसारी – एना ते, सिंह बोंगा बुरू बोंगा इकिर बोंगा, महादेव को रः के कोवाते इन किंगईंग दोन्दो परका केद किंग।

अपुते – एना ते?

पंसारी – एना तेईंग लेल जदा दो एनतः रे एन सोना रः बुगुली दोड़ोमा कना।

अपुते – एना ते?

पंसारी – एनाईंग सब केदा आबा।

अपुते – आर इनकिंग दो?

पंसारी – एन रेकिंग चयमान जना।

अपुते – अदोः सिदा रे जॉनः किंग कजि तुका लेः मा?

पंसारी – हे गा आबा। मेला लिःईंग किंग चि ने सकम सोना पेटं गड़ा रे अतु तम। आर अलिंगः लुतुम ने डुम्बुईन में। बितर रे अम पुरः लेका सोनाम नमेय। चिमिउगेम नमा इमिगुंग अगुई में।

अपुते – हूं, चिमिऊँग नमा इमिऊँग सोना नमोगा! नो तो दो दे सकम इदि केयाते अईंग गड़ा सोनोवा।

पंसारी – का गे गा आबा अईंग सेनोगा। चियः चि सकम दो अईंग नम लः।

अपुते – काःका। नेया का होबा दडियोगा। ओड़ाः रेन मरंग होड़ो अईंग तनिः। एना मेन्ते ते अई सेनोः गा। आर इनिः होन के जादू सकमेः रेः जःई। अपु तेयः कचरा लेल जलोः होनो गे खयरव जना। आ रेः कजियई तना का

आबा का। जेता लेका रे नेका का होबा दड़ियोगा। गड़ा ते अईगे सेनोगा।

होनाः मोचा साड़ी रे केटेः ताई केना। हनते अपु तेयः होड़ोमो रेवो हँटी तई केना। कजियाई तनए–का गे बेटा। का गे। नेया जेता लेका रेव का होबावगा। गड़ा अईगे सेनोगा। ओड़ाः रेन मलिकी अईन तनिः। अईयः जी मेनः ते नेया जेता लेका रेव का होबावगा। सोना अईगे अगुईया।

नेया जगर को अईउम जद लो होन पुरः गे खयरव जना। आर पुरः गे केटेः तेः कजियई तना–

कागे आबा। जेता लेला रेव नेया का होबावगा। होनः मोचा रः जोमेयः रेः अपुअः कमि का तनः। अईन नेया जादू सकम जी लगव केयातेईंग नमाउ तदा। एना मेन्ते ने चेतन रे अईयः गे हक बईयोः तना। सोना अईंग गे अगुईया। नेया कजि केद लोः गे होन अपु के होटोः रेः लिम्बुद कराये–कोरोए जःई।

ई..अँ...बराबरीः...बरा...अपुते गोएवोः तन लोःए कजि तना।

कागे आबा, कागे सोबेन अईगे.....

पंसारी, अपुअः उडुः होका केयाते, जादू सकम सब केयाते गड़ा मुलिः निर केदा। नते, ओड़ाः रे अपुते दोए गोए संगेरा कन।

जादुई पत्ता

'बेटा रे, अब मेरी अंतिम विदाई स्वीकार कर लो। यह लो मेरी अमानत, इसे संजोए रखना। बेटा रे, तेरे नाना की एक मात्र यादगारी की निशानी है। मैं चाहूँगी कि मेरे स्वर्ग सिधारने के बाद इसे मेरे सिरहाने रख देना।'

मृत्यु के सम्मुख खड़ी नानी ने मुझसे बातें कही थी। मैं खड़े–खड़े अपनी सजल आंखों से उसे निहारता रहा। कांपती ऊँगलियों में उस चीज को मैं कैद कर लिया था। पर एक लम्बी अवधि तक समझ नहीं पाया था कि इस साधारण चीज में आखिर कौन सी विशेषता है। जिस पर नानी का इतना गहरा लगाव था।

वह वस्तु एक बटुवा था। साधारण ही तो बात थी। हां, इसके आकार–प्रकार–रंग–रूप आदि में भिन्नता हो सकता है। पर इसका अभिप्राय तो एक ही है– फुटकर पैसों को रखने का सुरक्षित जगह बटुवा, फिर व्यक्ति विशेष के ख्याल से भी इसके किस्म में फर्क पड़ सकता है। ग्रामीण के पास अलग किस्म के बटुवे हुआ करते हैं। शहरी बाबुओं के पास अलग किस्म के। एक बार एक थानेदारिन ने मकई के छिलके छुड़ाते हुए मुझे देख लिया था। चट कहा ए छोरा भुट्वा देगा रे? मैंने तपाक से कह दिया हां, मेम साहिबा। मैंने उसे मकई दे दी और उसने चट से अपने ब्लाउज में हाथ डाल कर एक गोलाकार बटुवा निकाला। उसके दोनों छोर साथ दबाई तो बीच में से चवन्नी का सिक्का निकल आया। तब से मैं जान गया कि गोलाकार बटुवा भी हुआ करता है। पर वहीं एक बार एक थानेदार ने मुझ पर रोब जमाते हुए चिल्लाया – अबे बच्चे हेने आ। और ले ए गो रूपईया। उस चौराहे वाले बुड्ढे के यहां से खैनी ला।

चर...चर....चर... ।

इस छोर से उस छोर खींचा। एक रूपया निकाल कर फिर चर...चर.. ..चर....उसने उस छोर से इस चैन को खींचा। और बटुवा किसी कटी हुई पत्ते की तरह बंद हो गया। यह लंबा और सटने वाला बटुवा था। पर मेरी नानी का बटुवा इन बटुओं से एकदम बे–मेल था। इसका मुंह तो मजबूत डोरे से इस तरकीब से बंधा था कि एक के खींचने पर बंद होता था। दूसरे के खींचने पर खुल जाता था। बाल्यावस्था से ही इसे नानी को गले में लटकाए फिरते देखता आ रहा था। पर उसके विषय में कोई विशेष जानकारी रखने की जरूरत नहीं समझा था। हां, इसे लेकर मन में एक कसक तो हमेशा बनी रहती थी। एक बार साहस बटोर कर पूछ ही बैठा तो किसी माहिर कथाकार की तरह कहने लगी।

–'क्या कहूं बेटा रे इस अभागा बटुवे के भीतर एक लम्बी और दर्द

भरी कहानी बन्द पड़ी है' और उसके साथ ही उसकी बूढ़ी आंखें भर आयीं। वह भारी मन से कह रही थी, 3 मई सन् 1975 साल के एक अकालग्रस्त सांझ की बात है। तेरे नाना के साथ हम दोनों इसी सोना पेट नदी में सोना खोजने निकल पड़े थे। तब इलाके भर में यही एक मात्र धंधा था जिससे हजारों ग्रामवासियों की जान बची थी। चारों ओर भुखमरी थी, बच्चे सभी एक मुट्ठी अन्न के लिए बिलबिला रहे थे। लोग वन, जंगलों से कंदमूल खोज लाते। घास–पात खाकर किसी तरह दिन काट लेते थे। हम तो नदी से पंक निकाल कर उसमें से सोना छान कर निकालने का धंधा अपनाने लगे थे। नदी में से सोना निकालना कोई बच्चों का खेल तो न था। जो गहरे पानी में पैठ लगा सके उसी का पौ बारह समझो। और जो नदी की ऊपरी सतह देख कर ही गहराई की बात सोचने लगता, वह खाली हाथ घर वापस लौट आता था। यह साहस और दिलेरी का काम था। तेरे नाना का करेजा तो लोहे का बना था, फौलादी था। पहले की तरह उस रोज भी हनुमान जी का नाम सुमिरन कर नदी में कूद पड़े छपांग। मैं किनारे आस लगायी खड़ी रही। दो क्षण बाद कंकड़–पत्थरों के साथ मेरे सामने कुछ फेंक दिया। मैंने समझा कंकड़–पत्थरों के साथ लाल पोठी मछली निकल आयी होगी। नहीं यह तो सोने का चमकदार पत्थर था। हम दोनों खुशी से पागल हुए जा रहे थे। पर अचानक मेरी हंसी थम सी गयी और मन विचार के अथाह सागर में डूब गया। हमारी शादी के मंडप में पंडित जी ने मंत्रोच्चारण करते हुए कहा था, अति लोभ न कर्त्तव्य। मैंने उससे आग्रह पूर्वक कहा– चलो जी अब काम बन गया। महीने भर तो फिकर न रहेगा। घर चलें। अधिक लालच में न पड़ना। पर वे मेरी एक न माने। कहा अरे छोड़ो। आज हनुमान चालीसा के एक–एक शब्द सिद्धि करके आये हैं। ऐसा दिन फिर जो थोड़े ही आता है। इससे तो तेरे गले का हार केवल बनेगा। मोहना के आने वाली बहू के लिए कुछ सोची है कि नहीं?' फिर एक बार डुबकी लगाया........ चुड़बुक। इस पर विधाता ने घोर अन्याय कर डाला। किनारे पर एक एक वृहत पत्थर का गोला नदी में जा लुढ़का और नाना के निकल आने का रास्ता बंद! मैं घंटों खड़ी प्रतीक्षा करती रही। पर वह न लौट सके। मैं रोती--रोती घर वापस चली आयी। नाना को नदी से निकाल कर उनका अंतिम संस्कार भी कर दिया गया। मैं फिर सोची इस पत्थर का क्या होगा? हार बनवाऊँ तो चोरी होने का डर। घर पर गाडूं तो डकैत ले भागेंगे। एक दिन मुझे एक तरकीब सूझी। नटखट बच्चे आम पर ही तो निशाना बैठाते हैं। पेड़ पर नहीं। क्यों न इसे तार के जाली के रूप में एक बटुवा बनवा दिया जाये। ऊपर से कपड़े का तह लगा दिया जाये। चोर,

उचक्के तो ऊपर की चीज ही तो देखेंगे न! इस तरह सोना तो बचा रहेगा। लड़का पंसारी को इस तरह रह–रह कर नानी की एक–एक बात याद आ रही है। आज तड़के नानी का देहांत हो गया था। गांव के बाहर कटहल वृक्ष के नीचे उसका कब्रगृह बनकर तैयार हो चुका था। गांव के सभी शुभचिंतक भाई बंधु इस अंतिम विदाई की सभा में उपस्थित थे। पंसारी नीचे उतरा और नानी के चिरपरिचित सामानों को एक–एक कर सिरहाने रखने लगा था। उनमें प्रमुख थे– मिदनापुरी हुक्का, वृंदावन से लाया बांस की लाठी तथा शकूर मियां का दिया हुआ ऊँट के चमड़े की तेल शीशी आदि। अब पंसारी के हाथों वह बटुवा पड़ा था।

मन ही मन कहा, अच्छा अभी इसे रखे देता हूं। पर बाद में इसे उड़ा लूंगा। तीन दिन बाद पंसारी अपने कोख से एक लाल रंग की पोटली कभी निकालता था, कभी छिपाता था।

हां तो यह माल कहां हाथ लगा? पंसारी कहा – आहिस्ते पिताजी! आहिस्ते। वह नानी बुढ़िया के सिरहाने रखते–रखते यह बटुवा भी हाथ पड़ा था। याद करें, आज से पच्चीस साल पहले....जब मैं मात्र पांच साल का नाबालिग बच्चा...। आउच! याद आया। वह सोने का बटुवा। हां पिताजी। ईश्वर की अपार कृपा है कि आज तक इसका रहस्य किसी को पता नहीं चला। पर...। पर बेटा! उसे लाना तो गुली डंडा का खेल न था पिताजी! कोई होता तो मुआ वहीं अंत हो जाता। अंत! क्या कोई गुण्डे बदमाश...। ऐसी बात न थी पिताजी। आधी रात का समय रहा होगा। आधी रात! बाप रे बाप! हां आगे आगे। ज्यों ही कब्रगाह खोदने को कुदाल उठाया ऊपर से हरी–हरी कच्ची पतियों की वृष्टि होने लगी। फिर! कुछ फांसले पर एक सादा आकृति प्रकट हुआ। आकृति की रूप शक्ल क्या थी? लंबे–लंबे सिर के बाल। बड़ी–बड़ी डरावनी आंखें। अटकिर के पत्तों जैसे बड़े–बड़े कान थे उसके। पर मैं कब्र खोदता रहा खोदता रहा....। आकृति ने कुछ कहा भी? हां, कहा था पिताजी। वह नारी की आवाज में कह रही थी – ऐ कौन मेरा घर उजाड़ रहा है? क्या चाहता है, तू बोल। मैं इधर खड़ी हूं। फिर क्या हुआ? मैं उसकी बातों में न आकर कब्र खोदता ही रहा....खोदता ही रहा...। इतने में दूसरी आकृति दिखाई पड़ी। वह पुरुष की आवाज में दहाड़ने लगा – हे मूर्ख, पापी, शैतान! हमारे खजाने को लूटने का प्रयास न क़र। नहीं तो तुम्हें मक्खी बनाकर चमगादड़ के हवाले कर देंगे। हां भला चाहते हो तो हमसे मिन्नत कर। जो चाहो मांग लो। नहीं जानते हम कौन हैं? हम सुखवा और दुखवा हैं। सुखवा और दुखवा! फिर क्या हुआ? मैंने सोचा ये तो गांव के ही हैं। डरना किस बात

का। मैंने उनसे मिन्नत करते हुए कहा कहा हे सुखवा और दुखवा, एक मेरी विनती सुनो। मेरा बाप घर में सात दिन से बीमार पड़ा है। इलाज के लिए पैसे नहीं। मैंने उस दिन यहां एक सोने का बटुवा छोड़ा था। हां तुम्हें यह भी मालूम होना चाहिए कि वह बटुवा मेरे ही बदौलत तुम्हें मिला हुआ था। वरना, तेरे पोते की चरित्रहीन वधू मायके ले भागती। शिवम–शिवम। तू भले मानव लगते हो। लो वरदान। आकृतियों ने समवेत स्वर में कहा – ले वरदान! ठहरो पिताजी। ओह फिर क्या हुआ? फिर वायुरहित क्षण में एक हरी पत्ती गिर कर मेरे बदन में चिपक गयी। और? इसके साथ ही कोई भारी चीज गड्ढे में गिरने की आवाज आयी। समझ बैठा यही वर वरदान है। उठाने को हुआ तो होश गुम ही हो गयी। दो नाग–नागिन फन फैलाये फुंफकारने लगी–सों सों सों।

'आउच!' मरघट के मॉय बाप–सांप। हां पिताजी। सात–सात फुट के लंबे लंबे दो सांप वहां कुण्डली मारे बैठे थे। 'फिर?'

'आकृतियों की ओर से आवाज आने लगी ऐई डरो मत। अपने हाथों से इन्हें उठा कर एक तरफ रख दे। यहां तुम्हें एक चीज पड़ी मिलेगी।' तब मैंने हनुमान चालीसा का मन ही मन पाठ किया और सांस थामे उन्हें एक किनारे रख दिया। फिर? देखता हूं यह बटुवा वहां पड़ा है। मैंने उसे उठा लिया पिताजी! उन्होंने ओझल होने के पहले कुछ कहा – इस हरी पत्ती को सोना पेट नदी में बहा देना। फिर हमारे नाम लेकर उसमें डुबकी लगा वहां तुम्हें सोने का भारी खजाना मिलेगा। जितना चाहो ले लो। पत्र लेकर मैं नदी में डुबकी लगाऊँगा। घर में अभी मेरा राज चलता है तेरा नहीं। बाप ने उससे पत्ते हथियाते हुए चिल्लाया। बाप के अस्वाभाविक हरकत देखते ही बेटे का माथा ठनका। कहने लगा, असंभव पिताजी, असंभव। यह नहीं हो सकता। नहीं मैं जाऊँगा। बेटे की आवाज में दृढ़ता की गूंज थी। उधर बाप के अड़ियलपन भी जोर था। कहा, नहीं बेटा नहीं। यह नहीं हो सकता। घर का मालिक अभी मैं हूं। मेरे जीते जी संपत्ति पर अधिकार मेरा है। सोना मैं ही लूंगा।

इस पर बेटा तन कर बोला – नहीं पिताजी नहीं। यह असंभव है। बेटे के मुंह का कौर छीनने का अधिकार बाप को नहीं। मैंने अपनी जान की बाजी लगा कर सिद्धि पाई है। इस पर पहला अधिकार मेरा है। सोना मैं ही लूंगा। यह कहने के तत्क्षण बाद उसने बाप के गले को कस कर दबा डाला। ई...अँ...आडा–आडा (आधा–आधा) बाप कराहते शब्दों में चिल्ला पड़ा। नहीं पिताजी नहीं। पूरे पूरा सोना मैं ही लूंगा। पंसारी बाप की परवाह किये बिना पत्ते लेकर नदी की ओर भाग चला, इधर बाप फर्श पर निष्प्राण पड़ा था।

असरए

'अले बगे केयाते कोतेम सेनोः तना?'

'तोबे दो चनःईंग चिकाः? नेरे दो हुड़िंग गे पैसा नमोः तना।'

'आर हनरे?'

'अईउम तदाईंग हनरे दो पुरः पुरः टाका नमोः तना।'

'कोतःम सेनोः तना?'

'पंजाब।'

'चिटि कम ओलेया?'

'चिटि! ओलेयईंग। का। का--का फोन माईंग। मोबाइल ते हा...हा....हा.... ।'

'जू तोबे।'

'आर इनिः नेया कजि जद लोः गे अचोड़ो ते अयः मेद दः ए गोसोः केदा।'

निकिंग अईगः कन्सट्रक्शन रेगे, ओड़ोः एटः सोंगे कोलोः जनव हिसब कमिनाला तन कमिया किंग तन किंग। नेरे ओकोए राज मिस्त्री दो ओकोए रेजा, ओकोए दो कुली....। डोन्डो सेणां, आधा छोड़ा...। सोबेन लेकन होड़ो को कमि तना।

अईउम तदाईंग जतरू प्राईमरी स्कूल रः दुअर तड़ोम केयातेः हिजुआ कना। एना मेन्ते इनियाः हिंदी जगर रे हुड़िंग लेका सुधराव लेलोः तना। मगर पुरः केटेः कुड़म तीया। नि अधछोड़ा सेणाँ होबा जना दो चनः चिका जना? जीन्हुनर को दो पूरा--पूरा गे मेनः। कजिया को चि टाका--पैसा ते पेड़ेः कोरे जेतनः का होबागा जब चि होड़ो मो रे, जी रे कुड़म--कुकरू रे जेतनः बनोः दो। ने जतरू कोड़ा लोः निमिन दिन ताई केयाते, रिम्बिल तुरूब ओड़ाः बबई रः नेयागे सेणाईंग नम तदा! ओड़ोः मियद जगर मरंग होड़ो बबईन नगेन मपारंग मपारंग कुमु लगा तिंगअ। गुरू जन कोअः देंगा आउ लगातिंग अ। मेन्दो ने डोन्डो जतरू अः ओकोए गुरू ताई केना भला?आर इनियाः केटेः जगर को दो अईमेपे-- अईब पंजाब, हरियाणा सेन--केयाते पुरः पुरः टाका--सिकाईंग कमि हुन्डीया आर अईयाः मां आबा ओड़ोः सोंगे कोलोः मोबाईल फोन तेईंग जगारा.. .अजन्ता रः जूता मोजाईंग तुसिंगया....कमीज पैंट कोईंग किरिंगया...।

चनः मे मेन जदा? इमियः ओड़ाः रे तोवा मन्डी बनोगा...मालपुआ रसे मिठाई को बनोगा। मेन्दो इनियः जी बगईचा तला रे ढलाई रः जोर कोणार्क सिमेंट ते बईयाः कन जुपुड़ा मसला आर जी केटेः ते तिंगुआ कन चुडुःचुडु

रतंग बुरू तिंगुआ कना। ने डोन्डो होड़ोअः जी कुकुरू रे सब दड़िन रचः दड़िन रः सेणा जगर निः गुरू स्वेट मार्डेन उकुआ कना। बुगिन जीदन होरा को उदुब निः गुरू श्री श्री रविशंकर उकुआ कना। आर जुगनु? जुगनु दो इपिड़िपियुंग को मेताईया। निदा मरसलेन इपिड़िपिकंग। इनि नुबः रे मसकल इदि जदा। नुबः रे इनियः होड़ोमो ओकोए लेल जदा? मेन्दो इनियः मसकल रे गोटा दुनियाए लेल जदा। नेया कमि गे सेवा दंगा को मेतः। नेया कमि गे इपुडु नेया कमि किः गे भोगोमन सिंहबोंगा को मेताईया....।

मेन्दो जतरूअः सोंगे जुगनु दो धोरोम कोरोम सते–सते लेल तेव सुगाड़ा मेनः ईया। जुल तन लेकन एसेल होड़ोमो। चोको मोको लेल सुगाड़ा मेद मुडा। नाना–चि्रबिड़ः मयंग। अटल बा लेका तरल तरल पुन्डी रेसे पेसे डाटा को। एदेल बा लेका रंगा रंगा लाचो। रः रपाः तन लेका इनियः मेद किंग। सरते गे अईंग जाः जाँ दुरंग हरिया रेदो नियः लेके ते हिसि बरहिसि दुरंग वणिता कोईंग ओल केद तेयः होनंग। मेन्दो नेया को अइयः नसीब रे बनोगा। अईग ओको राधिकारमण प्रसादो का चि उकुनिः चि ने जुगुनु लेकन डोन्डो कुड़ि होनः विषम रे मियः कानी 'कानों में कंगनाएं' कोल केदा। एना मेन्ते निदा रेन हेन्दे होड़ोमो जुगनु लेका गे ने कुड़ि होनः सुगाड़ा बारिंग कजि दड़िया तना।

ओको हुलंग का ते ने कुड़ि होन ने रे अई लोः ए कमि एटेः तना अईंग लेल कीया ते किटिल गिड़िओः तन लेकाईंग अटकर जदा। हां, अईय जी किटिल रः माने दो जां हेरेल मुदई मुरकाटा लेका दो का गे। ओको सुगाड़ा कुई होनः होडोमो ओड़ोः मजा चाईल–चोलोन को लेल केया ते आईलेकन बहरी होड़ो कोसः ते उडुः देपेंगा बारि गे। अईगवो गे इनियः अपुते लेका मियद ठिकादार अपु तनिः। जुगुनू रूकि मनियः होन रेदो अईयःओ होन गे होबा जना। एना मेन्ते अपे एटः होरा ते अलो पे उडुःईया। जुगनुअः बपुड़िः हालत लेल केयाते अईयः जी कए मनातिंग जना। आर मांते रूकिमणि केईंग कुलि कए किः गे–

'चि रे रूकिमणि तिसिंग गपा अमः बदला रे होनेम कुल जः ईया?'

'चिकायम बाबू। जी दो निः के का कमि रिकाई में सनाईंग। मेन्दो चिकाईंग?'

'ने लेकन सुगाड़ा कुड़िहोन कोदो रेजा–कुलि कमि कोरे दो का कुल लगातिंगआ। नेया जगह का ठीक जगा तनः इतुआ नम दो?'

'इतुआ नईंग बाबू इतुआ नईंग। मेन्दोईंग चिकाया? लाई रेगे: र: कजि मेन:।'

'ओड: रे ओकोए ओकोए मेन पेया?'

'चन: म: मेने बाबू। ओड़ा: रे दो दुकु बारि गेया। अम: दादा दो सोमय रेगे सेनो: जना। मरंग होन ओड़ा: कोर: दशा लेल केयाते शहर ए: निर गिड़ि जना। ना: ओड़ा रे अईंग आर जुगनू बारि गेया लिंग।'

'अच्छा अम चिका जना?'

'चन:म कजि बाबू। हुड़िंग दिना ते अईंग के गठिया रोग सब कि: ईंग। काटा ली ते हसुईय। ईटा को दोन्दो कई दड़िया। एना मेन्ते: होनोंईंग कुल ज:ईया।'

'एका दो हेगे। मगर....।'

'इतुआ नईंग बाबू इतुआनईंग। अम चन: कजिम सनंग तना? ममतय: खबरोईंग इतिआना।'

'ममता! ओको ममता?'

'इनि: गे सुसुन बेड़ा ममता। कुड़ि होन कोअ: जेतन ठेकान बनोगा।'

'चिका जनए ममता?'

'चिकान:म कजि बाबू हे...हे...हे। काजिवो गिउ: गेया। अय: दादा: होन लो: रे: तईन तन तई केना। निदा बोडो होन के बाहरेंईंग सेनो: तनाए मेत: ईया। हन्डे दो इनि: के गुली तेको ठोटे गोए कि:या। ओहरे कुड़ि होन: जोनोम। ओकोए ओकोए: कजि कोए मना तिंग? हाय भोगोमन कुड़ि हानेम जोनोमा कन।

'हां, कजि में इनि: चिका जना?'

'अच्छा बाबू एन जतरू ओकोएआ: होन तनि:?'

'भोला नाथ महतोअ: नि:। चिलका तेम कुलि तना? चन: होबा जना?'

'एन हुलंग पीट रे इनि: अईय: होन लो: लन्दा–लन्दाए जगर'

तन नई केना। अईंग दो लेल के: किंग चि बोरो हिजु: तना।

कागे रूकिमिणि का। अम इपय–इपय अलोम बोरोया। अईंग इनि: केईंग इतुआना। इनि: खूब बुगिन होड़ो तनि:। आर हाँ, अम: होन केदो अमा ते पुर: अईंग इतुआना। इनि: दो सोबेन कोलो: लन्दा–लन्दा गे जगारा। अम जी अलोम खरापेया। लन्दा जगर दो खूब बुगिन चीज। नेया कोदो अपन: उम्र के

वोए संगि तः इतुआ नम?

'हे बाबू, अईयः दो निः बारि कुड़ि होन मेनः ईया। नि नगेन गे उडुः उडुः तेईंग बलय चबा तना। जाँरेः जाँ चिका जान रेदो!'

आर हेगे! रूकिमणियः कजि गलती दो कागे। जुगनू सोबेन कोलोः लन्दा–लन्दा गेः जगारा। दुकु–तकलीफ सोबेन रिडिंग केया ते। बोः चेतन ईटाए दुपिल तदा। एन लतर रे कश्मीरी सेब लेकन रसे–रंगा जोवा। मेद मुड़ा तला रे बिरिंग–बिरिंग हेन्दे लारि गुल–गुल मेद। रंगा–रंगा लाचो कोआ ते हेड़ेम–हेड़ेम जगर। जगर रे सिबिल रसे। सेन दो तलंग जुड़ि–जुड़ि हंस किंग लेका। हे, लन्दा–जगर दो एदकन चीज दो का तनः। नेया दो केवोल प्रेम रः चिना तनः। मेन्दो अबु दिसुम रेन डोन्डो कोड़ा होन को ने इसीड़ि–सिकिड़ि लन्दा जगर को दो हिरूई–दिरूई, चेंगोल–मेंगोल उपरीया कमि गेको हिसब तदा ओकोआ। चि बिल्कुल सेणांन कमि दो का कजिओः तना। नेलेकन चोलोनान कोड़ा होन को कुड़ि होन सः ते लेकन लन्दा जगर को एटः को बुझव तना। आर नेलेकन हिरूई–दिरूई इसिड़ि–सिकिड़ि कजि कजि कोते गे इनकिंगः मजा लेकन प्रेम पिरिति–चबाव तना। रूकिमणियः जूली ने लेकन हिरूई दिरूई होड़ोअः तीरेंगेः टोः लेना आरेः गोए जना।

मेन्दो, अईग दिसुम होड़ो को नेया उदुब सनंग जःईया चि जतरू आर जुगनू तकिंग तला रे घटावो तन हिरिति–पिरिति दो जाँ पिरिति पाला दो का तनः। इमिन रेव अईंग लेल नम जदा चि जपः जपः कोरेन होड़ो कोअः मेद को जी कुड़म को इनिः लेल ते रचः तना। मरंग जगर दो नेया गे चि ने लेकन होड़ो को तला रे अईगवोगे मिद होड़ो मेनःईया। रूकिमणिवो मेनःईया। जतरू मेनःईया। ओड़ो सोबेन रेजा कुलि को गे मेनः कोआ। चिकन भोरसा ने अपेवो जाः मेनाः पेया?

इनियः चाईल–चोलोन लन्दा जगर ते गोटा दिसुमेः रसिका तना। अए तेगे अएसः ए रचः आगु तना। ने का लेलोः तन, उकुआ कन अयः जी कुकुरू रः पेड़ेः रः बुटा, बा–जो कोतो रेद को कोतोः रे मेना गा, अईयो कुईंग कजि दड़ियाः। ने उकुआ कन पिरिति–पाला गे जाः बु मेन लेबा, विज्ञानी आईस्टाइन के एटम बम रः पोथि ओल रे देंगा लिया। कबि टैगोर के कादम्बरी ओल रेः देंगा लिया। आचार्य रजनीश के दार्शनिक बबई रेः देंगा लिया.... । एना मेन्ते ओकोमियद साहित्यकार ठीक गेः कजि तदा–कुड़ि जानी कोअः जेतन जाती बनोगा। इनकुअः सुगाड़ चाईल–चोलोन लन्दा–जगर गे अकोअः

जाती। गोटा ओते दिसम गे इनकुअः ओड़ाः।

मेन्दो होड़ो होनाते दिसुम मरंग तनः। होड़ो दोए हिजुः तनःए सेनोः तनःए। ओते हासा बगे केया ते। एना मेन्ते में ओते हासा रे जुगुनु लेका ओड़ोः गे, इनियाते लाः सुगाड़ा होड़ो को मेनः कोआ। अर अयर तेको पैदाववा। एना मेन्ते ने कुड़ि होन के पुरः बड़ई बोंकोरे रः दरकार का। बनोगा। इनियः हिरिति–पिरिति रः बड़ाई जगरो का गे। चियः चि सोबेन चीज कोरः पुरः तन, परिड़ितन का ठीक चीज तनः।

नेया पेड़ेः वो कबु मेतः। चियः चि जी रे नेया उरिः मेरोम को लेका जा नः गे उदुर हँदिड़ि रः पेड़ेः तनः। बालू कोंका बु मेता रे! का नेयाब का गे। चियाः चि पुरः परिड़ि कोए न्योताया ओकोवा चि जीवोन रे पुरः गे का ठीक कमि कोए कमिया। तोबेबेदो ने हिरिति–पिरिति चनः बु मेतः? हे, हिरिति–पिरिति रः माने मोतोलोब यदि ओकोए इतुन मोने जः ई रे दो ने जतरू तः ते इतुन का। ओकोए चि हिरिति–पिरिति गे पिरिति पाला गे इनिः केः पिचा दुब जाः ईया। ओड़ाः गा ते पंजाब हबिः। ओड़ो पंजाबा ते ओड़ाः जकेद–

'चिटि कम ओलेया?'

'आर ने मेददः जोरो रः चिकन मोतोलोब?'

'असरए!'

'हे, अईंग दोईंग बुझव नम केदा चि पिरिति–पाला जेतनव का गे अकिंग तला रे असरए बारिगे ओकोआ चि गोटा जीबोन रे जी जी र हुनर ते जोनोमोः तना।'

• • •

आस

'हमें छोड़ के जा रहा है?'

'तो क्या करता! हियां बाउत कम पाईसा मिलता है।'

'और वहाँ?'

'सुना है हुआँ खूब बगरा रूपिया मिलता है।'

'कहां जा रहा है?'

'पंजाब।'

'पत्तर नहीं लिखेगा?'

'पत्र! लिखेंगे! नहीं–नहीं फोन करेंगे। मोबाईल से, हा...हा...हा...हा....।'

'जाओ।'

और उसने आंचल से आंसुओं को पोंछ लिया।

ये दोनों मेरे कंस्ट्रक्शन में औरों के साथ, दिहाड़ी मजदूर हैं। कोई मिस्त्री है, कोई कुली। कोई रेजा है...। अपढ़, अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित। सुना है जतरू प्राईमरी स्कूल का दरवाजा लांघ कर लौटा है। इसलिए उसकी हिंदी में कुछ–कुछ सुधार के लक्षण दिखाई देते हैं। मगर गजब का बुजदिल। इसका मगज अर्द्धशिक्षित है तो क्या हुआ! मन तो सम्पूर्ण है। कहते हैं कि पैसे के धनी होने से कुछ नहीं हुआ जाता यदि आप मन के धनी न हों! इतने दिन साथ रहते मैंने तो इस छोरा से गगनचुंबी टिकाउ इमारत खड़ी करने की बात सीखी। फिर यह कि बड़ा आदमी बनने के लिए बड़े–बड़े सपने देखने होते हैं, गुरू–घंटालों का सहारा लेना पड़ता है। मगर इस गंवार जतरू का गुरू कौन रहा है? उसके बुलंद सपने तो देखिए–वह बगरा पाईसा कमाने के लिए पंजाब पलायन कर जायेगा। वह अपनी मां और संगी–साथिन जुगनू से अपने मोबाईल से बात करेगा, अजंता का जूता पहिनेगा...क्यों! उसके घर में दूध–भात की कमी हो सकती है, मालपुआ की कमी हो सकती है। मगर उसके मन–आंगन पर ढलाई की जान कोणार्क सीमेंट से बने मसाले का फैलाव और पक्के इरादे का हिमालय खड़ा है। इसके मासूम हृदय में बुझती दुनिया को संवारने वाला स्वेट मार्डन के शिक्षक पैठ बैठा है। आर्ट ऑफ लीविंग के गुरू श्री श्री रविशंकर विराजमान हैं और जुगनू? जैसा नाम वैसा गुण–धर्म! जुगनू रात के अंधेरे में ज्योत फैलाता जाता है और वह आगे बढ़ता जाता है। अंधेरे में उसका रंग–रूप, शक्ल–सूरत कौन देखता? मगर उसके प्रकाश में दुनिया सब कुछ देखती है। यही सेवा है, यही मानवता है, यही

ईश्वर है..... ।

मगर जतरू का संगी–साथिन जुगनू तो गुण–धर्म के साथ– साथ रंग–रूप का भी अपार धनी है। दमकता गोरा बदन। सुंदर नाक–नक्श। छरहरा पतली कमर। चटक चाल। जस्मीन की पंखुड़ियों सरीखे पतले–पतले उजले दांत। गुलाबी ओंठ। नशीली नयन। सच कहता हूं अगर मैं कोई कवि–कथाकार होता तो इस हसीन चेहरे पर दर्जनों कविता रच डालता। मगर यह मेरे नसीब में नहीं लिखा है। मैं कोई राधिकारमण प्रसाद सिंह भी नहीं हूं जिसने अपने इसी तरह के मासूम सहनशील नारी पात्र किरण पर हृदयस्पर्शी दिल छुअन कहानी 'कानों में कंगना' लिखा है। इसलिए रात के कुरूप जुगनू की भांति मैं भी किसी के लिए कहानी की ज्योत भर दिखा जाता हूं।

जब से यह लड़की मेरे जमात में आयी है मैं विचलित सा होता रहता हूं। मुआफ करें मेरे विचलित होने का कारण इसके प्रति मेरी कुदृष्टि नहीं, वहशीपन नहीं, वरन किसी सुंदर नारी–देह पर मुझ जैसे कोई बाहरी पुरुष का मानसिक हमदर्दी या एहसास, उल्लाहना भर है। मैं एक पेशा से ठेकेदार बाप हूं। जुगनू रूकिमणि की बेटी है तो मेरी भी बेटी ही ठहरी। इसलिए आप अन्यथा न समझें। जुगनू के प्रति मेरे आंदोलित मन से न रहा गया। और एक दिन रूकिमणि से पूछ ही बैठा–

'का रूकिमणि, आईज काइल तो तोर जायगा बेटी के भेजीसिला।'

'का करबे बाबू! मन तो इके भेजेक नई कराथे। मगर, का करमू?'

'ईसन सुंदर–सुंदर छोड़ीमन के हियां रेजा–कुली काम में नी भेजेक चाही। ई जगा ठीक नखे, जानिसला तोयँ?'

'जनाथों बाबू जनाथों। मगर का करमु? रोजी–रोटी केर सवाल है।'

'घर में के–के आहे।?'

'का कहबे बाबू। घर में विपती ही विपती भरल आहे। तोर दादा तो जुआन समय में ही मोईर गेलक। बड़का छौआ मोना घर के दशा देइख के आसाम भाइग गेलक। एखन मोंएँ आउर ई बेटी जुगनू अही।'

'तो, तोके का भेलक?'

'का कहबे बाबू। कुछ दिन से मोखे गठिया धाईर देलक।'

'हाथ–गोड़ दरद कराथे। ईट–गारा ढोएक नहीं पराथों। से ले....।'

'से तो ठीक आहे। लेकिन....।'

'जनाथों बाबू जनाथों। तोए का कहबे, जनाथों। ममता केर खबरों जनाथों।'

'ममता! कौन ममता?'

'वोही 'स्टेज शो' करेक वाली ममता। जनी जात केर का ठिकाना।'

'का भेलक ममता के?'

'का कहबे बाबू हें..हे...हे...हे। कहेक में सरम लागेला। आपन भतीजा के साथ में रहत रहे। राइत के बाहर जाथों कह के भतीजा के कहलक। हुआँ तो के उके गुली माईर देलक। हाय रे जनी जात केर जनम। केकर–केकर केर बात मानबे? जनी रे जनी।

'हाँ कह, का भेलक?'

'अच्छा बाबू उ जतरू छौआ केकर बेटा है?'

'भोलानाथ महतो केर। काहे, का भेलक?'

'उ दिन बाजार में मोर बेटी उकेर संगे हंइस–हंइस के बात करत रहे। मोके तो डर लागथे....।'

'नइ रूकिमणि नइ। तोएँ बेकार डर ना करबे। मोएं उके जनाथों। उ अच्छा छोंड़ा है और हां, तोर बेटी के तो तोर से ज्यादा मोएं जानोना। उ तो सब केर साथ हंइस–हंइस केई बतियाएला। तोएं मन खराब न करबे। हंसी–मजाक तो अच्छा चीज आहे। ई तो आपन उमर के बढ़ायँना, केमोन!'

'हां बाबू। मोर एहे भर बेटी अहे। एहे ले सोईच–सोईच के मोईर जाथों। कहीं कुछ होए गेलक तो।'

और सच! रूकिमणि का कहना गलत नहीं। जुगनू हंस–हंस कर ही सबों से बात करती है। दुख–दर्द भूल कर। सिर पर दुखता बोझ। उसके नीचे कश्मीरी सेब से गोरे–गोरे गाल। गालों के बीच शराबी आंखें। गुलाबी ओठों पर प्रेम–वाणी। वाणी में मिश्री का घोल। चले तो हंस की चाल। हां, हंसी–मजाक करना तो कोई खराब चीज भी नहीं। यह तो विशुद्ध प्रेम की निशानी है। पर हमारे देश का अशिक्षित वर्ग नारी की इस भोलेपन को उसका 'सेक्स अपील' समझ बैठता है जो सरासर असभ्यता का लक्षण है। पशुवृत्ति के लड़के इस दिल्लगी–प्रवृत्ति को अपने अधिकृत सेक्स आफर मान बैठते हैं। और यही पशुवृत्ति विशुद्ध प्रेम को बर्बादी की ओर धकेलती है। रूकिमणि की ममता इसी पशुवृत्ति की शिकार हो गई।

और जुगनू दोनों के बीच का हँसी–मजाक बीच में पनपता कोई प्रेमालाप नहीं है। फिर भी, मैं देख रहा हूँ कि आसपास की दुनिया की ओर से, जुगनू के प्रति कुछ समाँ बँधने लगा है। मजे की बात यह है कि इस दुनिया का सुलभ सदस्य मैं भी हूँ। रूकिमणि भी है। जतरू भी है। और–और रेजा–कुल्ली भी हैं। क्या पता आप भी हों। उसके व्यवहार का नाम–धाम–परिणाम क्या, कहाँ है मुझे भी नहीं पता। इस अदृश्य प्रेम–पाश ने विज्ञानी आईंसटाइन को एटम बम का थीसिस पास कराया। कवि टैगोर को 'कादम्बरी' लिखवाया। आचार्य रजनीश को दार्शनिक बनाया....। इसलिए शायद किसी साहित्यकार ने कहा है– नारी की कोई जात नहीं होती। उसका सद्व्यवहार ही उसकी जाति है। धरती ही उसका घर। लेकिन इंसान से दुनिया बड़ी है। यहाँ जुगनू से हजार गुणा सुंदरतम नायिकाएँ हो सकती हैं। इसलिए यह पूजनीय नहीं हो सकती। प्रेम, जुनून और जरूरत भी नहीं। क्योंकि ये अतिवाद को न्योता देते हैं जो कि अति भयानक हैं! ताकत! नहीं नहीं! यह तो आपके भीतर की पशुता दर्शाता है। होबी, टाईमपास! नहीं! ये भी नहीं। यों भी प्रेम–पात्र तो कर्म करते हुए प्रेम करता है। यह पागलपन भी नहीं। क्योंकि यह अतिवाद को ही बुलाता है।

प्रेम करना कोई सीखे तो प्रेम के प्रति अनजान जतरू से सीखे, जहाँ कि प्रेम ही उसका पीछा नहीं छोड़ रहा है। घर से पंजाब तक और पंजाब से घर तक–

'पत्तर नहीं लिखेगा?'

और इन अश्रु–बूंदों का क्या मतलब?

आस!

मैंने तो जाना कि प्रेम आस है और कुछ नहीं, जो प्रत्येक जीवधारी की मनोदशा और दिशा से पनपता है।

भोगोमनः बुटि

हेन्दे ल्लारि को चेतन, इपिल को लतर रे मियर सोना लेका जकामका जुल तन बंगला। एन रे मियद हड़ामेः बसा कद। मयंक कुबा। मयंग हबिः पण्डु ऊब अड़ाः कन। कुड़म तः कोते हरा कन पन्डु गुचु। इबिल लाचो चेतन रे रदोड़ा गुचु। होटोःअते कटा जकेद किचिरि तेः तुरपुअ कन। मुसिंग सेतः रे ओते दिसुमाते सेना कन अपिया–बिर–जीव कुड़ि होन कोए लेल नम तद को। इनकु चनः मेन तेको सेना कन तई केन, चेतए कबु कजि दड़िअः। मेन्दो एन हड़म तः ते अकोवः दिसुम को हिजुः रूअड़ जना दो अकोवः जी–जीवोन के बदली गिंड़ी जन। चिलकन सोना कजिः कजियद को, भला! देबु लेल लेय–

अटामटा बिरको तला रे मियद मरंग लेकन लेपालड़ि बड़े दारू तई केना। एना रेयः कोतो नते–हेन्ते दलोब गिड़िय कन तई केन। एना रेयः बुटावगे मरंग तई केना। कोतो कोवाते जोरोए को गोटा मुलि हका बेड़ा कन तई केन। एना मेन्ते नेया जोरोए बड़ेवो को लुतुमा कद तई केना।

ने बड़े दारू रे अपिया बिर– जीव कुड़ि होन को अपन–अपन ठाँव कोरे को बस कद तई केना। चुटि कोते रे मियद गाड़ी तईन तन तई केना। कोकरो रे मियद कोकोरेः तईनतन तई केना। सकम कोरे मियद रोकोए जुड़ाः बड़न तन तई केना। सोबोन कोअः अपन–अपन कमि–उदम। अपन–अपन ओड़ा दुअर। हुड़िंग दिन नि खूब मजा तेको अपा सुलो तन तई केना। मगर तिसिंग दो अकोरे रूपेरंग– सिपिगिद उड़ुँग कना।

कोकोरेः कजि केद–अमदना रोको मेंग – मेंग, सोया–सिंड़ी गेम जोम तन–नू तन। जू अमः दिसुम मक्का–मदीना सेनोः गिड़िमं में। नेरे अई लेकन साब होड़ो कोलोः दो जेता लेका रेव कम जुड़िओः गा। नागे अई मरंग – मरंग सेणाँ बोः लेया। नागे अई लेका गोटा दिसुम लेले लेका मरंग – मरंग मेद तमा। जू–जूम। नाः गे.....।

रोको कजि उड़ा केद–पेंद, खूब साब होड़ोम बईन तना। लुन्डू–लुन्डू कारे। अम बोले जिलु कम जोजोमा?बोड़े–बोड़े बना कटा कारे। अम दो सुकुरि–सुकुंद कोम जोजोम, छिः छिः। भला ओकोए सुकुरि को जोजोम? जू–जू अईयः उम्बुलातेव परकन में। अमः रतंग दिसुम ते अपिर गिड़ि में, हूँ। निकिनः एपेरंग अईउम केद्ते गाड़ीव खयरव किः आरः कजि केद–अबेन दना बरन किंग से किंग गे। बरन किंग आईसी जोनोम किंग तन बेन। जू नेतः ते सेकेड़ा परकन बेन।

एन लोः दो बड़े दारू अईउम नम तद् को। आरेः पंच ईटी केद् को।

दारू कजि केद् – चेनः पे एपेरेंग तन?

गाड़ी–जाति–पाति रेयः ले कपाजि तन गोमके। रोकोबः दः ते कोकोरः जाति डुबव तन। कोकोरः दः ते रोकोवः जाति डुबव तन। हूँ, ने ओते हासा रेयः चारा किंग जोमे आर अपन–अपन दिसुम रेयः किंग सयेद।

दारू – अमदो गाड़ी मईया कोतः दिसुम होड़ो आर अमः अमा–मां–आबा तको दो चिकन बोंगा को बोगाई तन?

गाड़ी – अईंग दो रतंग बुरूअतेईंग हिजुअ कन। अले दो लटकम हड़म लटकम बुड़िया आर खसरा कोड़ा तको ले बोंगा को तन्।

दारू – अमदो कोकोर?

कोकोर – (मरंग– मरंग मेद को उडुँग जद लोः) अइंग दो सोबेन कोआ ते पुरः सेणाँन होड़ो तनिः। गोटा दिसुम रेयः जगर को इतुअन निः। अलेयः बोंगा दो यीशु। अलेयः होड़ो को दो एया जलाकर परोम रे मेनः कोवा। अलेयः बोंगावो एया जलाकर परोमतेः हिजुअकन।

दारू – अम दो रोको ओकोअतेम हिजुअ कन्?

रोको – अईयः मरंग बोंगा दो मो. पैगम्बर। दिसुम रे नियते मरंग जेता बोंगा बंगःईया।

दारू – अच्छा, लटकम हड़म, लटकम बुड़िया, खसरा कोड़ा यीशु, आर मो. पैगम्बर ओकोएगे बई लेद को?

नेय कजि को अईउम केद् लोः गे अपन–अपन को अपारिद तन्। आर जेतन जगर काको पुतिद दड़ि तन। एन तएओम रे इनकु अपन – अपन बोंगा तः से बईकिनिः यः लुतुम इतु नेगेनेः कुल रूअड़ केद को। सोबेन कोअते सिदा रे कोकोर रूअड़ लेन। आरेः मेतईय चिं अईया बोंगा दो सिरमा दिसुम रेन परमेश्वर। एन तएओम ते रोको हिजुः लेना। आरेः मेतईय चि अएयः बोंगा दो अन्हा। इनि दो चण्डु को इपिल कोलोएः तईना।

टुण्डु रे गाड़ी हिजुः लेन। इनिः मेतईय चि अएयः बोंका दो सिंहबोंगा। आर इनिः सिरमा दिसुम रेः तई ना।

दारू – अच्छा, यीशु, अल्हा, आर सिंहबोंगा ओकोए बई तद को?

नेय कजि रेदो जेतः का को पुतिद दड़ि जन। हपेगे को हपे गिड़ि जना। आर दारू सोबेन को अपन–अपन बोंगाः लुतुम इतु नगेन सिरमा दिसुम

सेनोः रेयः हुकु मेः ओमको तन। मेन्दो दिसुम ते सेनोः नगेन होरा बनो, उपाय बनो। एन तओम रे दारू मेतः कोवचि मियद मियद ते जू चूटि दाड़ा ते देः पे। एया सिमन दपले लेकन मियद सरदुल चेणों हिजुगा। इनियः देयां रे दूध केते सिरमा दिसुम पे सेनोः दड़ियः।

सिदा उतर ते गाड़ी सेनोः जना। आर सरदुलः देश चेतन रे दूब केते सिरमा दिसुमेः सेनोः जना। मेन्दो सिरमा दिसुम रेन बोंगा बबई होड़ोअः ओड़ाः दो तिउः गे का तियुगोः। गाड़ी सेन होरा सेन होरा ते मेद कोए पिरिल पिरिल गिड़ि यो तना। टुण्डू रेदो इनियः सनगे चबाव तन। आर इनकिंग कुपुलि जपागर इदि तनः।

कोरेः सरदुल कोरेः सिरमा दिसुम सिंह बोंगाः ओड़ाः दो?हनेः दाना कुड़ि होन लारी चेतन, जुड़ि इपिल लतर रे। नेका गे, इसकुकोन रेदो का तिउगोः चि कुलि कतिय। आर चेणें एनका गे जवाबेः ओमईय। इसु कोन तयोम तेदो इन किंग सिंहबोंगाः ओड़ाः किंग तिइयुः केद। आर सिंहबोंगाः रचा रे गाड़ी केः दूब तुकई चि चेणें ओड़ोः ओते दिसुम तेः अपिर जन। निसुकन दो कोकोरः पड़ी हिजुअ कन। एनका गे, इनिवो चेणें अः देय रे दूब केते मरंग आबाः ओड़ा दाणां सिरमा दिसुम ते सेनोः जन। मेन्दो होरा सांगिन लेका ते आबाः ओड़ाः तियुगे का तियुः गो। ने लेका आलय–बलय तन रे कोकोर सरदुल चेणें केः कुलि जईः कोरेः सरहुल कोरेः ने सिरमा दिसुम आबाः ओड़ाः दो?

हयेः दाना कुड़ि होन अंगओः – तुरोः इपिल लतर रे। एनका गे, सेन–सेन लगा गिड़िओः रेवो सिरमा रेन मरंग आबाः ओड़ाः तियुःगे तियुःगो चि कुलि कते जई। कोरेः टुण्डू रे आबा ओड़ाः तिय जन। आर इनिः केव रचा रेः दूब तुकई चि ओते दिसुमेः रूअड़ जन। अनरेदो सिदा रे हिजुअकन गाड़ी लोः किंग नपम जना। सिदा लेकागे किंग एपेरंग– ओपोड़ेः तना। गाड़ी मेने लुण्डू–लुण्डू मेद तम, बना लेका सर–सर तेम, रो तई पोटाः तई जिलिंग चदलोम जोम निः। जू नाः गे निर उकुन में नेतः ते। नि दो अलेयः सिरमा रेन सिंहबोंगा तनिः। कम निर रे मोद तींग तबिड़ि में।

कोकोर मेने, शैतान मंगड़ा–मुंगडू गाड़ी। अमः मोचा रे चदलोम ते लगोमेन में। अईंग ओकोए तनिः कम इतुअना? पुण्डि साहेब कोअः होड़ो। नि दो अलेयः मरंग सिरमा रेन आबा परमेश्वर तनिः। जून सेकेड़ा नेतः ते निरमे। का रेदो मिद कोर्राईंग हंड़सा में। नेकागे जनव अंगोः ते निकिन एपेरंगः।

नाः दो रोको, एनकागे, चेणें देया रे दूब केते अयः अल्हा तालाः ओड़ाः

ए हिजुः तन। आर इसुकोन रेवो ओड़ा का तियुगोः इनिओ चेणें केः कुलि जईया --

कोरेः कोरेः सरदुल कोरेः ने सिरमा दिसुम अल्हा ताला ओड़ाः दो?

हनेः दाना कुड़ि होन इपिल जपः केचाः चण्डु बितर रे।

हुड़िंगकोन तयोम तेवो अल्हा – तालाः ओड़ाः तियुलेन। आर इनिः केव रचा रेः दूब सुकई चि चेणें। दो ओते दिसुमेः बअड़ जन। अनरेदो सोबेन को मोदतः रेगे को जमा हुण्डियं कन। आर सिदा लेकागे एपेरंग– ओपोड़े तेको बलय तन। जनव अंगओः ते नेकागे गजउ – गजउ एपेरंग कन गेको तईतन। मुसिंग दो नः दो ओड़ा गोमके अईउम नम तदको आ। आरेः कुंलि जद को। सोना– समड़ोम ते पेरेयकन। जकामका जुल तनगे।

गोमके – अपे दो ओकोए तनको आईयः रचा रेपे रूगुम – रूगुमे?ओकोरे अपेयः हातु कतु दो?

सिदा गाड़ी जगर केद – अईंग दो गोमके कुम्बुडु कागे, जुम्बुड़िओ कागे। पाताल रेन लटकम डड़म लुटकुम बुड़िया किंग कमिड़ि होन तनिः। आलो गेम दल– रू इंगा। आलोगेम एरंगिः। अईंग दो अम लेल नम कोएवोः किंग कुल तईंग। अम दो अलेयः मरंग गोमके सिंहबोंगा ले हिसब तद में। गोमके – लेंगा ती सिरमा दोंदो केयाते इनि आशीवार्देः ओमई तन। एन वाद रे कोकोर केः कुंलि किः।

कोकोर – (मेद को मरंग – मरंग बईजद लोः ओड़ोः जोमती अयरेत इति जद लो) अइंदो गोमके ओते रेन मसीह राजाः होड़ो तानिः। अईंग दो इनियः हुकुम मनातिंग ओड़ोः। तिसिंग दो अईवोगे अमलेल कोएवोः नगेन गे अमः तः ए कुल तईंग। अम दो अलेयः सिरमा रेन भाईनन मरंग गोमके तनमे।

गोमके – खूब सुकु -- रसिका रेयः जगर तनः। मर दूब में (आशीर्वाद ओमई तन लोः) नः दो रोकोए कुलि किः। रोको –अईवो गे पाताला तेगेईंग हिजुअकन। अलेयः गोमके दो मो. पैगंबर। इनीः मेतद लेया चि मरंग उतर गोमके दो अल्हा – ताला गे। इनिः दो सिरमा दिसुम रेः तईना। इनियः हुकुम तेगे तिसिंग अईग अम लेल– कोएवोः नगेन हिजुअ कन।

गोमके – खूब बुगिन कजि। अपे सोबेन अईः पाताल रेन सोगे को तनको। मियद ढेलका बुडू हासा रे ओमोना कन अपिय बा दारू लेका मेनः पेय। मगर अपे रे नेय एपेरंग – सिपिगिद चिलकाते?

गाड़ी मेन केद – अमदो अलेयः सिरमा रेन मरंग उतर गोमके सिंह बोंगा। ने कोकोर आर रोको दो होसोड़ो किंग जगर जद। अमदो अकिंग : गोमके दो कागे।

कोकोर – हे सिरमा रेन आबा, अमगे अलेयः परमेश्वर दो। ने गाड़ी आर रोको दो होसोड़ो किंग जगर जद।

रोको – अल्हा – ताला, अमगे अलेयः मरंग गोमके दो। ने गाड़ी आर कोकोर अई लोः दुब–जतरू तन होड़ो किंग दो का तन किंग।

सोबेन कोअः कजि अईउम केद चि इनिः मुरगुई – मुरगुई लन्दा तन लोः गे जगराको तनः– हे पाताल दिसुम रेन कुटुम – कुपुल मिसि होन को, अईयुमेपे। अपेयेः ओते दिसुम रेदो इसुपुरः होसोड़ो हेन्दो मेनः। इसु पुरः हिसींगा–चेन्टा मेनः। ओते दिसुम रेयः जीवोन होरा दो अपिया मेनः होसोड़ो–हिसिंगा – हेन्दो। सिरमा दिसुम रेयः जीबोन होरा दो मियद गेय–बुगिन सरते होरा। ने सरते होरा पापी होड़ो कोअः नगेन अपियईंग कोतो तद। अपेयः ओते रेन अपेयः पापी गोमके को ने अपिय होरा तेगे अईंगतः को कुला कद पे।

हे पापी होड़ो कोअः मिसि होन को, अईयुमेपे – अईगे सिंहबोंगा, अईगे परमेश्वर आर अईगे अल्हा–ताला। आईगे सुकु अगुनीः। अइगे दुकु हेर निः। अइगे ईमन बईनिः। अईगे हिसिंगा – होसोड़ो जगर रिका निः। अइगे बिर – दारू जो बा रे असुल रिका निः। अइगे सोया– सिंड़ी रे असुल रिका निः। ओते दिसुम रेयः नेयगे जीबोन जातरा। आर जू, ने अईयः बुगिन सरते होरा ओतनेंग केते अपेय ओते दिसुम रूअड़ा पे। अपेयः सरदुल चेणें हिजुः तनगेया जाः। इनकु सिरमा रेन मरंग गोमके तः ते नेय गेको इतुवउ लः चि सोबेन होड़ो होन, चेणें होन, कुला – बिंग, दिरि– दारू तसद – रूड़ाः, होएवो – गामा, दः सेंगेल को बई निः दो मियद गे मेनई तबु।

भगवान की नाभी

काली काली घटाओं के ऊपर और तारों के नीचे सोने जैसा चमकता एक स्वर्ण बंगला दिखाई दे रहा है। वहां एक बूढ़ा ठहरा हुआ है। कमर झुकी हुई है। कमर तक लटकते सफेद बाल। छाती तक लटकते पके दाढ़ी। मोटे होठों के ऊपर घने मूँछ। सर से पांव तक कपड़े के चोगे ढंके हुए हैं।

एक दिन सबेरे धरती से आये तीन जानवर कन्याओं को वह देख पाया। ये वहां क्यों गई थीं कौन जानें? लेकिन जब वे स्वर्ण महल से धरती वापस आ गईं तो उनका जीवन उस स्वर्ण महल की तरह ही चमकने लगा। यह सब कैसे हुआ, आईए देख लिया जाए।

बियावान जंगल के बीच एक बड़ा सा बरगद का पेड़ था। उसके डाल इधर–उधर काफी दूर तक फैले हुए थे। उसका धड़ भी काफी बड़ा एवं मजबूत था। डालों से निकले जड़ इधर–उधर जमीन पर फैले हुए थे। इसीलिए इस पेड़ का नाम भी जड़ वाली वृक्ष रखा गया था। इस पेड़ के विभिन्न डालों पर तीन जीव वास करने लगे थे। फुनगी पर एक बंदर रहता था। खोडरो में एक उल्लू रहता था। पत्तों पर एक मक्खी रहा करती थी। सब का अपना काम–धाम था। अपना रहन– सहन था। अपना–अपना घर–द्वार था।

कुछ दिन तक ये आपस में प्रेमपूर्वक रहे। पर आज उनके बीच झगड़ा उत्पन्न हो गया है और आपस में ये झगड़ने लगे हैं।

उल्लू राजा – मक्खीचूस कहीं की! तुम तो हर समय विष्ठा में ही जीती हो। जाओ अपना देश–धरती मक्का लौट जाओ। यहां मेरे जैसा साहब लोगों के साथ तो तुम कभी नहीं रह सकती। न मेरे जैसा बड़ा बुद्धिमान वाला सिर है, न मेरे जैसी दुनिया देखने वाली बड़ी–बड़ी आंखें है। जाओ जाओ। जल्दी जल्दी जाओ। इस स्वर्ग लोक से जल्दी चलते बनो.....।

मक्खी रानी – मेंग...मेंग....उल्लू कहीं की। मेरे सामने अपने को बड़ा बुद्धिमान समझते हो? तुम भी तो खून पीने वाला, मांस खाने वाला, दुष्ट, पापी पक्षी हो। कम से कम मैं तो किसी की हत्या नहीं करती। अतः मैं तुम से लाख भली। स्वर्ग में तुम जैसे पापियों की कोई जगह नहीं। तू मुझसे पहले नरक की धरती भाग जा।

बंदरी – तुम दोनों क्या झगड़ा लड़ रहे हो मेरे सामने? तुम दोनों तो दोनों समान स्वभाव के हो। दोनों मांस खाने, खून पीने वाले हो। जाओ यहां से

दोनों दफा हो जाओ।

इसी समय बरगद वृक्ष तीनों को पाता है और फटकार लगाता है।

बरगद – तुम मेरे घर आ कर क्यों झगड़ा करने लगे हो?

बंदरी – पांव लागी मालिक। हम जात–पात का झगड़ा करने लगे हैं। यहां बात यह है कि उल्लू के पानी से मक्खी की जाति जानी जाती है। मक्खी के पानी से उल्लू की जाति जाती है। ये दोनों बेवकूफ हैं। मालिक। ये यहां का चारा–पानी खाते–पीते हैं और अपने–अपने देश की बात करते हैं।

बरगद – अच्छा तुम बंदरी बोलो कहां से आयी हो और कौन तेरा आराध्य भगवान है?

बंदरी – मैं हिमालय पहाड़ से आई हूं और मेरा आराध्य भगवान सिंगबोंगा है। हम पिता लटकम और माता लुटकुम भाई खसरा की पूजा करते हैं।

बरगद – उल्लू तुम बोलो। कहां से आये हो? कौन तुम्हारा देवता है?

उल्लू – (बड़ी–बड़ी आंखें निकालता है।) मैं सभी लोगों से ज्यादा बुद्धिमान हूं। सारी दुनिया की गतिविधि जानने वाला हूं। हमारा देवता तो यीशू है। यह सात समंदर पार में रहता है। मैं वहीं से आया हूं।

बरगद – और तुम मक्खी रानी बोलो। कहां से आई हो और तेरा भगवान कौन है?

मक्खी रानी – हमारा आराध्य तो मो. पैगम्बर साहब हैं। हमारी धरती पर इससे बड़ा और कोई भगवान नहीं है।

बरगद – अच्छा तुम सब यह बताओ कि लटकम पिता, लुटकुम माता, भाई खसरा, यीशु, मो. पैगम्बर इन सबों को किसने बनाया?।

ये बातें सुनते हैं वे आपस में ताकने लगते हैं। कोई भी इसका जवाब नहीं दे पाता है। इसके बाद सभी को अपने–अपने देवता को बनाने वाले का नाम–धाम जानने के लिए धरती पर भेज दिया जाता है। सबसे पहले लौट कर उल्लू चला आता है और उससे बरगद पूछता है। वह बताता है कि उसका देवता परमेश्वर तो स्वर्गीय आकाश में रहता है। इसके बाद मक्खी रानी आती है। वह बरगद को बताती है कि उसका आराध्य अल्हा है और वह आकाश के स्वर्ग महल में रहता है। वह चांद और तारों संग रहता है। आखिर

में बंदरी आती है। वह बरगद को बताती है कि उसका सिंहबोंगा भी स्वर्गीय आकाश में ही रहता है। फिर बरगद तीनों से सवाल करता है – तुम सभी के भगवान स्वर्गीय आकाश में ही रहते हैं। जरा बताओ वह स्वर्ग महल कैसा है? इस सवाल पर फिर वे चुप्पी साधते हैं। तब बरगद कहता है मेरी फुनगी पर एक–एक कर बैठ जाओ। वहां एक सात सीमाओं को ढंकने वाला पक्षी सरदुल आयेगा। इसके पीठ पर बैठ कर तुम लोग भगवान का स्वर्ग महल देख सकोगे।

सबसे पहले बंदरी आती है और सरदुल की पीठ पर सवार हो कर स्वर्ग महल जाती है। लेकिन स्वर्ग महल पहुंचने का नाम नहीं लेता। बंदरी परेशान होती है और सरदुल से पूछती है –

बंदरी – कहां सरदुल कहां सिंहबोंगा का स्वर्ग महल कहां हैं?

सरदुल – देखों देखों वो आ ही गया तारो भरें आकाश के नीचे।

इसी तरह बंदरी बार–बार पूछती जाती है। सरदुल भी यही जवाब देता जाता है। अंत में वे दोनों सिंगबोंगा का महल पहुंचते हैं और उसे महल पर बैठा कर फिर धरती को लौट आता है। इस बार उल्लू परमेश्वर के स्वर्ग महल देखने आता है। पर रास्ता लंबा होने के कारण महल पहुंच ही नहीं रहा है। वह सरदुल पक्षी से कहता है –

उल्लू – कहां सरदुल कहां परम पिता परमेश्वर का महल कहां?

सरदुल – देखो देखो वो आ ही गया ध्रुव तारा के नीचे।

इसी तरह बहुत दूर चलने के बाद वह दोनों पिता परमेश्वर का महल पहुंचते है। पहले जैसा सरदुल उसको भी महल के अहाते पर बैठा कर खुद धरती पर चला आता है। लेकिन वहां पहले से आया हुआ बंदरी को देख कर दोनों में फिर झगड़ा होता है। बंदरी कहती है कौड़ियों के समान आंखें तुम्हारी, भालू के समान नाखून हैं तुम्हारा। जलाये और उतारे गये चमड़ी वालों का भक्षक। तू अभी यहां से ओझल हो जा, नहीं तो एक चांटा रसीद करती हूं। तू जा...।

उल्लू प्रतिवाद करता है, नटखट शैतान बंदरी मुआ कहीं की। मुंह में लगाम लगा के बात किया करो समझी? तुम नहीं जानती मैं कौन हूं? गोरे साहबों का पैरवीकार हूं। यह देवता जो तुम्हारा अपना कहती हो, झूठ बोल रही हो। यह तो हमारा परम पिता परमेश्वर है। जा जल्दी यहां से भाग नहीं तो एक हंटर लगाता हूं।

इसी तरह ये दोनों हर सबेरे झगड़ा करते रहते हैं।

अब मक्खी रानी की बारी आती है। लेकिन अल्हा ताला का महल पहुंचने का नाम नहीं लेता है। वह भी दूसरे दोस्तों के जैसा सरदुल से पूछती है–

मक्खी रानी – कहां कहां मेरे अल्हा ताला का स्वर्ग महल, कहां?

सरदुल – वो देखो आ ही गया, अर्द्धचंद्र के बीच तारा जो दिखाई देता है, वहां है।

अंततः वे दोनों अल्हा का स्वर्ग महल पहुंचते हैं। मक्खी रानी वहां पहले पहुंचे अपने दोनों पड़ोसियों को देख कर उन पर बरस पड़ती है। सरदुल धरती पर लौट आता है। ये आपस में मिल जाते हैं और पहले के जैसा ही आपस में लड़ते–झगड़ते हैं। एक दिन महल का मालिक तीनों को सुन लिया और आपस में झगड़ने का कारण पूछा–

मालिक – तुम लोग कौन हो, मेरे सामने हल्ला मचा रहे हो? कहां है तुम लोगों का ठौर–ठिकाना, तुम सब चोर, बदमाश....।

बंदरी – नहीं मालिक हम चोर नहीं है, बदमाश भी नहीं। मैं तो पाताल देश के लटकम पिता और लुटकुम माता के देश के रहने वाली हूं। आप मुझे मत मारिये। मैंने आपकी प्रशंसा सुनी है। इसलिए आप के दर्शन के लिए पाताल देश से यहाँ आई हूं। हम आपको हमारा सर्वशक्तिमान देवता मानते हैं, आप की पूजा करते हैं।

मालिक – (बाएं हथेली उठा कर उसे आशीर्वाद देता है) तुम्हारा मंगल हो। तुम उल्लू!

उल्लू – (बड़ी–बड़ी आंखें निकालता है) मालिक मैं पाताल का मसीह राजा का आदमी हूं। मैं उसका पुजारी हूं। वह स्वर्ग लोक में वास करने वाले परम पिता परमेश्वर का चेला हूँ। उसने ही आपके दर्शन के लिए यहां भेजा है। आप हमारे परमेश्वर हैं।

मालिक – (हथेली से आशीर्वाद देता है) खुश रहो।

और तूम मक्खी रानी तू किस लिये आयी हो?

मक्खी रानी – अल्हा–ताला आप ही हमारे सर्वशक्तिमान अल्हा हैं। ये बंदरी और मक्खी मेरे दोस्त नहीं दुश्मन हैं। ये आप को नहीं मानते हैं, बल्कि घोर निंदा करते हैं। अल्हा को सलाम दुआ कबूल हो।

सबकी फरियाद सुन लेने के बाद मालिक अपना फैसला सुनाता है – हे पाताल से आये भाइयों एवं बहनों, सुनो। पाताल देश में जीने के तीन रास्ते हैं –

झूठ, डाह एवं निंदा। पर स्वर्ग लोक में जीने के एक ही रास्ता है – सच्चाई का रास्ता। मैंने इस सच्चाई की राह को पाताल तक जाने के लिए तीन दिशा दी है। मुझे मालूम है, तुम्हारे पाताल के पापी देवता मेरे पास आने के लिए इन्हीं तीनों मार्गों को बताया है। और तुम सब उन मार्गों से मेरे यहां आये हो। आप के ये तीनों मार्ग अलग नहीं एक में मिलते हैं। इसलिए तुम सब अब मेरे मेहमान हो। तुम्हारे लिये मैं ही सिंगबोंगा हूं, मैं ही परमेश्वर और मैं ही अल्हा हूं।

मैं ही सुख लाने वाला। मैं ही दुख बिखेरने वाला। मैं ही प्रशंसा करने वाला। मैं ही निंदा करने वाला। मैं ही मान। मैं ही बेईमान। मैं सृष्टि हूं। मैं विनाशक भी हूं। जाओ। मेरे द्वारा बताए गए सच्चाई के मार्ग पर चल कर पाताल का लौट जाओ। वाहक सरदुल पक्षी आता ही होगा। जाओ (आशीर्वाद देता है)..........।

ये तीनों पातालवासी स्वर्ग महल से लौट कर यही सीख कर लौटे कि पाताल देश में सभी मानव, पशु–पक्षी, लता–लरंग, नदी–नाले, सांप–बिछ्छू, हवा–पानी से प्रेम करो। क्योंकि उन्हें बनाने वाला सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता तो एक ही है।

• • •

कुला आरा

हातु होड़ो को काजि तना – 'अले कुला कए चंकी लेया।'

चिलका ते कए चंकी कोआ? निकुअः दो हागा जाति वो कागे। होड़ो जाति वो कागे। भला चिलकाते नेया काजि को कजि केदा? नेया रेयः मियद वर्णिका मेनः चि मियद बिर कुला, ने हातु होड़ो कोआः आरा होन ओड़ो हागा जाति ई बई जना।

सिदा सोमय रेयः कनाजि–ओको सोमय चि ने हातु एटेः एटेः डीडुंगरीओः तन तई केना। इम तंग ने हातु आटा–माटा बिरको ताला रे बसाव तन केना। गोटा मुलि बिंग गे सों–सों। कुला गे हंग–हंग। ने लेकन सोमय रे ने हातु डेरा–बसाव तन तई केना।

हातु रे मियद सुगड़ा लेकन कुड़ि होनेः होबा जना। दंगड़ी जन चि इनियः अँडदि रेयः को दुतम जना। आर नेंडा दिन तिउः लेन चि इनियः खूब गे सुकु–रसिका ओड़ोः गाजा–बाजा लोः ते अंड़दि होबा जना। ओड़ाःव गे बेस–बुगिन नम जना।

जोम–नू, किचिरि–लिजाः टाका–पैसा, उरि–मेरोम, सिम–सुकुरि–जेतानः ते इनियः घाटी–बाड़ी का तई केना। इनियः जी सुकु रेगे बितव तन तई केना। मेन्दो, जाँ–चिमिन मेनः रेवो इनि अएः किसन कए सुकुवई तन तई केना। आर मुसिंग अएः एगा अपु ओड़ाः ए निराउ लः। एन हुलंग तः ते दो इनिः किसनः ओड़ाः रूड़ा गे कए नम जना। खाने–खाने किसन हिजुः जन रेवो कुड़ि होन कागे रूअड़ा जना।

नेया लेल केते अएः एगा–अपु किंग खूब किंग खरदव जना। खूब किंग समझव–बुझाव किया। मेन्दो इनि कए गे रूअड़ा जना। मुसिंग दो अपु ते इनिः के एरंग जई लेकाए कजियई तना–

अपु– अम दो बिटि होड़ो होन चि बिर जनवर? होड़ो कोलोः दो ताईन कम मोनेया। बिर कुला कोलोः चिम अंड़दि ना?

कुड़िहोन – (खींस कोलोः ते) हे गा आबा। अईंग दो कुला लोः गेईंग अँड़दि ना। बिर जनवर कोलोः गेईंग तईना।

एनका गे, मुसिंग दो अपुते हातु रेन होड़ो को जमा केकोवा ते इनिः के कुला लाता जपः तेको इदि तुकाःईया। अनताः रे सिदा ते मियद सिंह

कुला इनिः गे लेल होरा तन तई देना। कुला लोः जिमा जई लोः गे इनिः को कजियई तना –

हातु हागा को – हे कुला आरा तिसिंग–आते अलेय होन कुड़ि अमः तः रे जिमा तुकाई तना। मजा लेका जोगाबई में। जोम नू, किचिर–लिजः मजा लेका ओमई में.... ।

कुला – 'हाँ' मेने लो बोः ओए डोबोः डोबोःए।

इन किनः दिन मजा लेकागे सेसेन इदि जना। रोज जाँ चेणें, तुडु–कुलए, सिलिब सुकुरि, नेकन–नेकन जनवर कोए आउ को। कुड़ि होन इनकुई रो– रपः को। पीट–पलन कोआते हिजुः तन होड़ो को तला रे कुड़िल तः। आर बोरो–सोरो ते सोबेन सम्पोड़ो को निरबागे तः। एन कोरे किचिरि डेंगाव ताईन तन तई केना। एना को अयः ओड़ाः होड़ोए इदियई तन तई केना। एन लेकाते किचिरि लिजः तेव कए रिंगा लेना।

ने बीच रेगे, हातु हागा को उडुः नम केदा चि बिर रेदो इसु कुला को ओड़ोः मेनः कोवा। आर इनकु को सेन्देरा जद कोवा। ओको जा आ अबुअः आरा होने को सेन्देरा तई रेदो। नेया बोरो–सोरो कोलोः तेगे इनकु इनियः होटोः रे घंटी तोल रेयः को मोतलोब केदा। मुसिंग हुलंग, घंटी इदि केयाते कुड़ि होन तः को सेनोः जना। आर कुड़ि होन को बुझव किया। कुड़ि होनो गे नेया जगर कोए पतिया दा। घंटी को तोल किया।

हुड़िंग दिन तएयोम ते मियद एटः कुला हातु रेन उरिः के सब किया। आरेः हातु रेन होड़ो जोम किया। को नेया घटना होबा जन चि खूब को बोरो केदा। आर इनिः सेन्देरा गोए को मोने केदा। गपा तेरे बिर ने सेन्देरा को सेनोः जना। बिर रे मियद कुला को नम किः। खएरू कोलोः ते इनिः को थुईंग गोए किःया। मेनदो, जपः तेको लेल किया दो नि आरा कुला होन। होटोः रे घंटीः तोला कना। घंटी रे लोसोद पेरेया केना। आर गोटा होड़ोमोए लोसोद गेया। घंटी रे लोसोद पेरेया कन लेका ते घंटी का साड़ी जना।

नेया गलती कमी जन लेका ते हातु होड़ो को जी रे खूब को दुकु जना। एना मेनते होड़ो कोअः नियम–धोरोम लेका तेगे इनिः को हासा गाड़ा किःया। आर ऊ रे दिरि को रकब केदा। एन रे कुलः आ को रोः गाड़ा केदा। कुड़ि होने नः दोए रंडि जना। आर अएः एगा–अपु ओड़ाःए हिजुः रूड़ा जना।

इनिः होड़ोमो कोरेः तई केना। हुड़िंग दिन तएयोम ते हातु रेगे होने को होबा जना। इनकु हातु रे होड़ो होनको लेका तईन को इतु जद तई केना।

हुड़िंग दिन तयोम ते एगातेः गोए जना। होन को तावा काको नम केद कारण ते इनकु गे खूब दुकु बलय ते गोए जना। आर इनकु गे अपु जपः रे को हासा–गाड़ा केद को चि दिरि को रकब केरा। आर एन गाड़ा केर को चि दिरि को ओल बड़ा केदा। नेया कोरे निकुअः वर्णिका को ओल बड़ा केदा। नेया घटना होबा जना ते इबु पुरः सोमय सेनोः जना। पुण्डि साहेब को अः राज रे, ने ऊ ससंग मुलि ते सड़का बई रेयः जगर सरकारेः गोटा केदा। मियद पुण्डि साहेबः लेलेन मेद रे नेया संडका बईओः तन तई केना। हातु होड़ो को सः ते ने साहेब खाने–खानेः मना लेना। मगर कए पतिया जना। आर संडका बई जन गेया। ऊ ससंग दिरि को नेते–हेनते तेर गिड़ि बेड़ा जना। एन हुलंग निदा तेगे बिररे कुला हंग--हंग गरजावोएः एटेः केदा। हातु तेवो होड़ो कोए हिजुः नम केद कोवा। होड़ो कोवः जी रे बोरो हिजुः जना। आर हातु रे पंचाइटी को दुब केदा। पंचईटी रे आरा होन तः ते क्षेमा असि रेयः को फैसला केदा। ऊ ससंग तः सेन केयाते इनिः तः क्षेमा को असि किया। आर ससंग दिरि को सिदा लेका को बिद रूड़ा केदा। आर एन निदा तेगे कुला गरजव होका जना। कजियाको, नाः जकेद ने हातु रे नेया सोत्तो तो सेसेन आउ तना। नाः आ जकेद ने हातु रे कुला कए जोम तद कोआ।

बाघ – दामाद

हमारे गांव के लोगों पर बाघ नहीं झपटा करते – यह कथन है इस गाँव के लोगों का। अब कैसे नहीं झपटा करते यह जानने की बात है। हिंसक बाघ और ये गाँव वाले! न उनके जाति का। न उनका सगे भाई–बंधु। फिर ऐसा वो क्यों कहने लगे?

हाँ, इस कथन के पीछे एक मिथक है जो वे सदियों से मानते देखते आये होंगे और यह बाघ राजा गाँव का सम्माननीय दूल्हा बन गया।

सदियों पुरानी कहानी है। जब यह गाँव बसने जा रहा था। उस समय यह गाँव बियावान जंगलों से घिरा था। चारों तरफ जंगली जानवरों का बोलबाला था। कहीं तो बाघ चिंघाड़ रहा है, कहीं तो सिंह राज गर्जन। कहीं नाग–नागिन फुंफकार रही है, कहीं बंदर उधम मचा रहे हैं। ऐसे ही समय में यह गाँव बसाया जा रहा था।

गाँव में एक अति सुंदर कन्या जन्म लेती है। बड़ी होने पर उसके विवाह–शादी की बात सोची जाती है। वर की खोज खबर की जाती है। कालान्तर में उसकी शादी खूब गाजे–बाजे के लिए हो जाती है। ससुराल में वह सुखमय जीवन व्यतीत करती है। घर में खाने–पीने की कोई कमी नहीं है। रूपया–पैसा, कपड़ा–लता, सोना–गहना, गाय– बाछुर सभी मौजूद हैं। लेकिन इतना धन सम्पत्ति रहने के बावजूद वह अपने पतिदेव को पसंद नहीं करती है।

एक दिन वह चुपचाप अपने मायके चली आती है। उस दिन से पति का घर लौटने का नाम नहीं लेती है। बार–बार पति के आने के बावजूद वह उसके साथ लौटने को इंकार करती है। यह देख उसके माता–पिता बहुत दुखित होने लगते हैं। वे उसे समझाते–बुझाते हैं। पर वह ससुराल लौटने से इंकार करती है। उसके पिता क्रोध के मारे कुछ कह जाते हैं।

पिता – बेटी, तू आदमी है कि जानवर? आदमी के साथ रहना नहीं चाहती! क्या तुम जंगली जानवरों के साथ विवाह रचाएगी।

बेटी – (क्रोध भरी आवाज में) हाँ पिताजी! मैं बाघ के साथ शादी रचाऊँगी। मैं जंगली जानवरों के साथ रहूँगी।

और एक दिन पिता गाँव के लोगों को जमा कर बेटी की इच्छा के अनुसार ही उसे बाघ के खोह के पास पहुंचा देते हैं। अचरज की बात यह कि

वहाँ पहले से ही एक सिंहराज उसकी प्रतीक्षा में खड़ा था। इस सिंह राज को बेटी का जिम्मा देते हुए गाँव वाले उससे कुछ कहते हैं –

ग्रामीण – हे बाघ दामाद, आज तुम्हें अपनी बेटी को तुम्हारे जिम्मा दे रहे हैं। तुम दोनों खुशी से रहना। खाना–पीना, कपड़ा–लता, रूपया–पैसा सब कुछ इसे देना।

बाघ 'हाँ' में सिर हिलाता है।

उनका दाम्पत्य जीवन खुशी से बीतता जाता है। रोज दूल्हा महाशय पशु–पक्षी का शिकार कर लाता। दुल्हिन उन्हें पका कर खाती। हाट–बाजार जाती स्त्रियों के आगे डेग मारता और वे कपड़ा–लता मिठाई, तरकारी साग–सब्जी छोड़ डर के मारे भाग खड़ी होतीं। बाघ उन्हें पत्नी के लिए उठा लाता।

इसी बीच गांववालों के दिमाग में एक युक्ति आती है। वे लोग सोचते हैं कि जंगल में तो और भी बाघ रहते हैं। शिकारियों के हाथों मारे जाते हैं। हमारे दामाद बाबू भी कहीं मारे न जाएं। इस ख्याल से वे उसके गले में एक घंटी बाँध देने की बात तय करते हैं। एक दिन घंटी लेकर बेटी के यहाँ जाते हैं और उसे इसके विषय में समझाते हैं। बेटी भी इनकी बातों को मान लेती है। और उसे घंटी बाँध दिया जाता है।

कुछ दिन बाद एक अन्य बाघ उसी गांव के एक बैल को खा जाता है। गाँव वाले इस घटना से विचलित होने लगते हैं और इस खूँखार बाघ के शिकार में निकल पड़ते हैं। जंगल में एक वैसा ही बाघ से सामना होता है। मारे क्रोध वे उसे मार डालते हैं। लेकिन अफसोस कि यह तो उनका बाघ दामाद ही था। गले पर घंटी बंधा हुआ था। पर घंटी में कीचड़ भरे होने के कारण वह बज नहीं रहा था। इस महा गलती के कारण गाँव वाले बहुत दुखित होते हैं। इस लिये उसका दाह संस्कार अपने रीति–रिवाज के अनुसार ही कर देते हैं। मसान पर 'हड़गड़ी–पत्थर' गाड़ा जाता है। उस पर 'बाघ दामाद' खोद कर लिख दिया जाता है। बेटी तो अब विधवा हो जाती है और अपने मायके लौट आती है। वह गर्भवती होती है। गांव में ही बच्चों को जनती है। कुछ दिन बाद मां की मृत्यु हो जाती है। बच्चा भी दूध एवं देखभाल के अभाव में मर जाते हैं और उन्हें भी माता–पिता के इर्द–गिर्द दफना दिया

हड़गड़ी पत्थरों के बीचों–बीच सड़क निर्माण की बात तय करती है। एक गोरे अफसर के देखरेख में सड़क का निर्माण आरंभ किया जाता है। ग्रामीणों की ओर से बार–बार सड़क–निर्माण को टालने की कोशिश की जाती है। पर उनकी अनसुनी कर दी जाती है। अंततः सड़क बनकर तैयार हो जाती है। हड़गड़ी पत्थरों को इधर–उधर फेंक दिया जाता है। पर उसी रात से जंगल में सिंह गर्जन सुनाई पड़ने लगती है। गांव में भी रात को वह आने लगता है। लोगों को हुंकार मारता। ग्रामीणों में डर समाने लगता है। वे ग्राम पंचायत बुलाते हैं और पंचायत में हड़गड़ी जाकर उससे क्षमा मांगते हैं। फेंके गये पत्थरों को फिर से भलीभांति गाड़ दिये जाते हैं। तब जाकर सिंह गर्जन बंद हो जाता है।

लोगों का ऐसा मानना है कि यह घटना आज भी इस गाँव में उतना ही सच है जितना तब था। आज तक इस गाँव के कोई भी व्यक्ति की मौत बाघ के द्वारा नहीं हुई है।

पम्पलद

ईगाईंग कजियाईंग तना -- 'बेटा, ओको इमतंग लाईया ते उडुँग जनाते न ओते हसम तेगा केदा, एन हुलंग त तेगे ने पम्पलद अमः तयोम रेः जुड़ाः कना।' एना मेनते नाः जकेद एन पम्पलदः विषय रे जानःव कईंग कजि दड़ियः। इनियः विषय रे इतुन बु सनंग तन रेदो एगाईंग गेबु कुलि लीया। आर इनिः कजि एटेः जदा –

'मेद--मेद लेपेल कुम्बुबुडु तन लेका, गोटा चण्डुः लोः प्रेम ननम निः लेका, ऋणी--कड़ी केयाते बण्डालेले रः मेद सुगड़ा रँगा आउ निः मेद सुगड़ा, जी रसिका ने हुड़िंग लेकन होएवो रे ओटेंग--दोपालि बेड़न पम्पलदः सुगड़ा दो चिका लेकाईंग उदुब दड़ियाः बेटा रे? न इनिःईंग लेल तःई न इनिःईंग उरूम तःई। इनिः दो अटकर बारिंग अटकरोः जःई। अटकर नेका अटकयेः तना चि अईयः मेद--कुड़म किंग लेल जःईया चि चिलका इनियः बा--रंगा छपा कन अपरोब को झिलमिल पलद--पिलिद लेलोः तना। इनियः हुडिंग लेकन लाई होन मेने में चि मियद समड़ोम, जका मका जुल तन डेला होन। आर अएयः काटा को! मेने में चि ओको बिन्दिर जाल आउ केयाते अमके इदिः हिजुआ कना। बेट आईंग दोईंग अकादन्दा गिड़ि लेना चि ओको डाईन बेसाई अईयः मेद रेन इपिल लेका जुल तन होन के लो पोटः सेंगेर नगेनेः हिजुआ कना? आर उडुः बलय तन लोः ते अयः दिसुम रूड़ा नगेनईंग हेयारि--योआरि किः–

जु--जु अपिर गिड़ि मेरे पम्पलद
जाँव कम कुलिंग अपोरोब जलद
मोने मोने जी रेम बोलोवा चिमद
हपे हपे हिजुआ कनगेम ताईन
हुरूम सुकु लेका जुम्बुड़ीम बाईन
ग्युः बनोः तम अम मरंग मुरखाई
बाईरा! रः मेरेः हाईवोः कम हाई।

मेन्दो बेटा रे, इनिः अपिर गिड़ि बदला अमः जी रेगे जोंड़ेनेन जना। अमः जी ओड़ गे अएयः सरना सके मनातिंग केदा। जनव जनव, अईंग सः लन्दा तन बकड़ी रः बा कोते अम के हेयारि--गोवारि जद में। एन लोः दो अमः जीयाते ने रसिका रः रसि जोरो जना। आर एन रसि ते अईवो गे गोटा जी--बुड़म--होड़ोमो कोईंग लुम चका जना। जी रे गोटा--चण्डु रः मसकल बोलो जना। एन मसकल रे अम गेईंग लेल नम रे। बेटा रे नः दोम हारा-- माता जना। ठीक का ठीक सोबेन लेकम उडुः दड़ियः। एना मेन्ते नः दो अम गे दिसुम रेन होड़ो होन, मनोवा होन को ने पम्पलद रः बारे चियः कम उदुबा को?

एना मेन्ते, ए दिसुम रेन सोबेन होड़ो होन, मनोवा होन को! सेंणा दोईंग सेणा जना। मेन्दो सेंणा–बुद्धि रः इकिर दः रेदो आउरिंग बोलो। एकादन्दा रेगे मेनः ईया। एना मेन्ते न पम्पलद रानी होन गे अईयः सेंणा–संगोम रः कानी–कोन्तारीईग कुलि जःई।

ए पम्पलद रानी होन, सेंणा–संगोम रः सोमय – सगुन दो ओको इम तंग?

पम्पलद रानी – सेणा! हें....हें...हें.....हें...। दः जलाकारेम लेला कदा?

दः जलाकार! का रानी। दः जलाकार कई लेला कदा। उरिः मेरोम? सिम–सुकुरि?

पम्पलद रानी – बोका का रे। जलाकार दो इकिर दः जलाकार को मेताः। एन रे इकिर मेनाः। हाई–चोके तेते सोन्सोरोद को मेनः कोवा....।

ओड़ोः चनकु मेनः कोवा?

पम्पलद रानी – इकिर दः बितर रे मोतीव तोपा कना।

मोती! चिकन मोती?

पम्पलद रानी – दूत, डोन्डो होन। जलाकारेम सेनोवा तोबेइंग उदुबा में। हे हेईंग सेनोवा। मेन्दो सेंणा...।

रानी – सेणा! जलाकार चेतन ते सेसेन तेयाः जहाज!

जहाज! चिकन जहाज रानी?

रानी – जहाज! दः चेतन रे बाईया कन ओड़ाः। एन रेवो अमः ओड़ा रे लेका होड़ो होन को ताईन तना। एंगा– अपु होन–होपोन...। मियद दिसुम... । जहाज रः खुन्टा दो मस्तूल को मेतः आर अम सेंणा नम तनिः अतोम रे दुबा कव मनोवा होन!

ए पम्पलद रानी, अमः जगर को कईंग बुझाव तियुः गोः तना। सेंणा–संगोम रः मोतलोब मजा ते बुझावईंग में।

पम्पलद रानी – सेणाँ! हेनेः जहाज हिजुः तना, लेले में। सिदा खुन्टा लेलोः तना। एना ते ओड़ाः एना ते एयंग–आबा–होने होपान...।

हे सरते गे।

रानी – ओड़ोः, सेनोः तन जहाज लेले में। सिदा ते खुंटा अदोः तना। एना ते ओड़ाः। एना ते एयंग–आबा होन होपोन....।

–अरे वाह! चिलका मनोवा होनः सेंणा बोलो तना। आर चिलका उड़ुँग गिड़िओ तना।

अच्छा पम्पलद रानी ने दिसुम रे जहाज आर एयंग आबा, होन को बारि..।

रानी – बोका होन! कागे। ने दिसुम रे ओड़ोगे मेनः कोवा। दिरि बुरू, चेंणे–चिपरूब तसद– रूड़ाः दारू सिंह....। बा–जो...।

ए पम्पलद रानी, एन कोरे पुरः ते पुरः बुगिन चिकना?

रानी — बा।

बा! बा ओको कोरे बा तना?

रानी — बुरू चेतन हँगी लतर कोरे।

ने बुरू हंगी को ओको रेया?

रानी — अटमदा बिरको ताला रे। लेलाउम सनंग तना?

हे, पम्पलद रानी। दोला इदिंग में...।

....आर अलिंग अटामटा बिरको मुलि लिंग सेनोः जना। मेन्दो, ए दिसुम रेन मनोवा होन को बुरू रेव दुकु बलय मेनागा। रंका रोड़े दिरि चोलपंग, कुला हाँग–हाँग, बिंग सों...सों... जोला रनाकब– जनर सिड़िगिर...। सेन सेन तेईंग लगा चबा जना। अयर ते अईंयः कटागे का चंडंग को तना। हाईर मनातिंग केया ते ओड़ोः पम्पलद रानी केईंग गोवारि जःई–

ए पम्पलद रानी, नः दोईंग उरूम केः मा। अम दो मरंग होसोड़ो रानी तन में। अम काजि लः सुगड़ा–सुगड़ा बा को....। नेरे दो सोबेन मुलि दिरि बुरू. ...। कोरेः अमः सुगड़ा–सुगड़ा बा को?

रानी — ए डोन्डो होन। अम दो पुरः गेम डोन्डो गेया। बा–जो कोदो हँगी कोरे नमोः। सिड़िगिर कोरे नमोः। दिरि रेबेद कोरे...। दोला ओड़ोः बरिया बुरू परोम....।

हे सिंह बोंगा राजाः बरिया बुरू चुटा चिलकईंग दे रकाबे?

रानी — ओह! अमः सिंहबोंगा कए दौड़ी अगुई। इनिः गोए जना। ने दिसुम रे जीदेनेम सनग रेदो ने दिरि दारू को लेल केया तेगे जी आलाए में।

ए पम्पलद रानी, पुरः गे होसोड़ो रानी। भला दिरि को लेल केयाते चिलका जी आलावा?

रानी — ए डोन्डो होन! नाः बुरू चुटी रे मेनः मा। बुरू बोंगाः ओड़ाः रे मेनः मा। गड़ा दिरि–बुरू सिंह सुबा रे मेनः मा। इनकु लोः सोंगेन में। इनकु लोः सेसेन में...। जनुम रेगे कटा चण्डंग में...। दिरि रे गे मण्डा बाई में...। आर हनेः लेले में...। सिडिगिर दिरि रेवेट रे....अरः ससंग...पुण्डी लन्दा तन बा को...।

आर सरते गे। एना को लेल केद चि जी रसिका ते पेरे चबा जना। बा को अरः ससंग–पुण्डी...। आर पम्पलद रानी केईंग कजियाई तना–

सरते गे पम्पलद रानी, सरते गे। दिरि रेगे जी आलाक तना, जनुम रेगे कटाईंग चडंग जदा–तुलम लेका लेबेः....होएको लेका रबल...पम्पलद रानी सौ सौ जोअर।

तितली

मां कहती है – तू जब पेट के गर्भ से निकल कर इस दुनिया में कदम रख रहा था उसी समय से यह तितली तुम्हारे पीछे पड़ी हुई है। अतः मेरे जन्म से होश संभालने तक इस तितली के विषय में कुछ भी कहने से लाचार हूं। इसलिए तब तक सारे बखान हम मां के ही जुबान सुनें–

चंचल चितवन बन के, चंद्र–प्रेमी चकोर सा प्रेम उड़ेल के, इंद्रधनुष से सतरंग उधार ले के, नयना विराम, मनमोहक इस छोटी सी आकाश परी की सुंदरता, चंचलता–चपलता को मानवीय शब्दों के माध्यम से कैसे व्यक्त कर सकती हूं, बेटा रे? मैंने उसे कभी देखा न सुना, बस, आभास ही एक मात्र सहारा है। आभास ऐसा कि मानो मेरे अंतर मन आंखों से देख रही है कि यह छोटी सी तितली रानी, जिसके मुलायम पंखों पर सतरंगा इंद्रधनुष लिये हुए झलमल करने लगी है। उसके छोटे से उदर मानो कोई चकमक करता स्वर्णपिंड हो। और पांव! मानो कोई मकड़ी का जाल लेकर तुझे ले जाने के लिए आया हो। मैं तो चौंक गयी थी– न जाने कहां से यह यमराज मेरे नयन–तारा को भस्म कर जाने को उतर आया है। इसलिए मैंने उससे अनुनय–विनय करते हुए स्वदेश चले जाने का भी आग्रह किया था –

उड़ जा उड़ जा रे तितली
मुझे कुछ नहीं बताती पगली
अपने मनके धुँआधार मतवाली
मेरे नयन तारा की अबुझ पहेली
छुप–छुप कर आती रहती हो
माया नगरी में उड़ती फिरती हो
शर्म नहीं करती तू महा निर्लज्ज हो
कुछ नहीं मुझे बता चलती हो।

मगर बेटा रे, उसने कहीं उड़ जाने के बजाय तेरे तन–मन को ही अपना मन–मंदिर बनाने का मन बनाया। तेरे मन–देवता को ही अपना आराध्य बनाने का मन बनाया। रोज सांध्य सबेरे, प्रफुल्लित उद्यान से हंसमुख फूलों की पंखुड़ियों, स्वादिष्ट कंदमूलों का नैवेद्य बना–बना कर तुम आराध्य के कोमल चरणों पर अर्पित करती है तो तुम्हारे चांद से मुखड़े के बीच बसा मुख मंडल का आभा मेरे सूने हृदय के मनहूस कोने को आलोकित कर जाता और उस आलोक में मैं सर्वत्र तुझे ही एक मात्र संबल सहारा के रूप में देख पुलकित हो उठती हूं। अब तुमने होश संभाला है। क्या कुछ इस तितली के विषय में

दुनिया को नहीं बतलाओगे?

तो हे दुनिया वालों–

होश तो संभाला। पर होश क्या बला, मुझे नहीं पता। फिर यह एक क्षणांश में तो नहीं आया। मैं अचंभित हूं। तितली रानी से मेरे होश आने का समय पूछता हूं।

मैं – तितली रानी, तितली रानी। होश आने–जाने का समय संस्कार क्या है?

तितली – होश! हें....हे...हे.... । समंदर कभी देखा है?

मैं – समंदर! नहीं, समंदर मैंने नहीं देखा है। कोई चौपाया.....दोपाया.... ।

तितली – बेवकूफ। समंदर अथाह जलसागर है। उसमें गहराई है। जल–जंतु हैं। समुद्री घोड़ा, मेरे जैसी रंगबिरंगी मछली.... ।

मैं – और ?

तितली – और उस गहराई में मोती गड़ा होता है।

मैं – मोती! यह मोती क्या चीज है?

तितली – धत् नादान बच्चे। वहां चलोगे तो बताऊँगी।

मैं – हां, चलूंगा, लेकिन होश.... ।

तितली – हां, होश–हवाश में समंदर पर चलने वाला जहाज है।

मैं – जहाज! यह जहाज क्या है?

तितली – जहाज जल पर तैरने वाला घर है। वहां भी तुम्हारे घर जैसा इंसान रहते हैं। मां–पापा, चुन्नू–मुन्ने... । एक दुनिया रहती है। घर की छत को मस्तूल कहते हैं और तुम होश की चाहत में किनारे बैठा शिशु मानव हो।

मैं – हे तितली रानी, मैं बात की बतंगड़ को समझ नहीं पाता हूं। होश के आने–जाने का मतलब ठीक से समझाओ न।

तितली – होश हें...हे...हें। पास आता जहाज को देखो तो पहले मस्तूल दिखाई देगा। उसके बाद घर...मां–पापा, चुन्नू–मुन्ने। दूर जाता जहाज को देखो तो पहले घर ओझल होगा। उसके बाद मस्तूल। बस, दुनिया वाले तेरे पास आयेंगे तो होश आता जायेगा। दुनिया वाले तेरे पास से जायेंगे तो तेरा होश जाता रहेगा... । हें...हें....हें।

मैं – हे, तितली रानी इस दुनिया में क्या इंसान ही रहते हैं या और कुछ?

तितली – नहीं। यहां और भी रहते हैं, पहाड़, पत्थर, नदी–नाले, पशु–पक्षी, फल–फूल, लता–लरंग.... ।

मैं – इनमें कौन सी चीज सबसे सुंदर है?

तितली – फूल।

मैं – फूल कहाँ खिलते हैं?

तितली – फूलों की घाटी में।

मैं – यह फूलों की घाटी कहां है?

तितली – सुदूर जंगल के बीच में। वहां जाना चाहोगे?

मैं – हाँ।

और हम दोनों फूलों की घाटी की ओर कूच कर जाते हैं। लेकिन दुनिया वालों, वहां भी मुसीबत हमारे दांए–बाएं खड़ी है। पहाड़, पगडंडी, दुर्गम रास्ता। कभी सूरज को आगोश में लेने वाली गगनचुंबी पहाड़ की चोटियां तो कभी मीलों दूर सपाट मैदान पर पुरसा भर उगे हरियाली घास। मैं चलते–चलते थक कर चूर–चूर हुआ जाता हूं। मेरे द्वारा अब एक इंच भी आगे नहीं चला जाता। थक हार कर मैं फिर तितली रानी से गुहार लगाता हूं।

मैं – तितली रानी, अब मैं जाना तू महा ठगिनी है। तुमने सुंदर–सुंदर फूलों की बात की थी। यहां तो सर्वत्रा पथरीली–रसातल को जाती घाटियाँ दिखाई देती हैं। कहाँ गये तुम्हारे वे सुंदर सुंदर फूल?

तितली – हे नादान बच्चे। तुम बिल्कुल अज्ञानी हो। तुम नहीं जानते। फूल घाटियों के ढलानों पर, खाइयों के मुहानों पर खिला करते हैं। चलो, बस चोटी के उस पार। अब फूलों की घाटी आने को ही है।

मैं – हे भगवान! इतने पत्थरों, घाटियों के बाद फूल प्राप्य हैं?

तितली – हूँ तेरा भगवान यहाँ आने से रहा। वह मर गया। तुम्हें जीना है तो यही पत्थरों को देख–देख कर मन को हरा करना है, समझे?

मैं – हे तितली रानी महाठगिनी, पत्थर देख कर मन कैसे हरा होगा?

तितली – हे नादान बच्चे, तुम यहाँ पहाड़ में हो। प्रकृति की गोद में हो, प्रकृति तुम्हारी मां है। मां की भाषा सीखो। मां के हाथों घाटी में चलना सीखो। हां, अब देखो ढलान के नीचे लाल, पीले, नीले....।

मैं – और मैं वहां का विहंगम दृश्य देख कर उछल पड़ता हूं। फूल...फूल... .लाल...पीले...नीले...फूल ह...ह...ह...। अब तितली रानी को दाद देते हुए मेरा मन मचल उठता है, सच तितली रानी सच। अब मुझे पत्थर पर भी हरियाली दिखाई देती है, कांटों के बीच हंसते–बिहंसते फूल।

शत–शत नमन तुझे, तितली रानी शत–शत नमन....।

लेखक बाईन रः रोग

सरते गेइंग जगर तना। ओकावाईंग कजि जदा एना रे सरते मेनः। ने कजि रे ओड़ोः एटः माने–मोतोलोब बनोः। आर कईंन पतिया चियाः चि आईंग दो अईयाः जी–कुड़म रः जगारेईंग जगर तना। अईयाः राम कानी उदुबेईंग सनंग तना।

मेन्दो आपे पढ़ाव–लिखाव सेंणा होड़ो को जयः रे चनः ईंग कजि, उदुबो गिउः गे सनंग तना। एन का रेवो अले हातु होड़ो को दो डोन्डो–मोन्डो मंगरा बुधुवा गेपे मेता लेया। अईवोगे इनकु मेसे रेनिः गे तनिः।

हे तोबे दो अईयाः जी कुकुरू, कुड़म कपटा रे गिउः साते–साते रे ओड़ोः मियद चीज मेनः। आर एना दो बोरो तनः। मनातिंग पे चि अईंग आर आपे ताला रे मियद बोरो सोरो लेकन पचिरि तिंगुआ कना। पचिरिया ते हन परोम अपे मंगोलिया रेन होड़ो को तन पे। नेते अले चीनी को तनको। अपे दो मंगोलिया रेन दुश्मन को बन्दूक जोका केयाते मेनः पेया। नेते अले चीनी चेले चमटा को बोरो सोरो तेले उकु बेड़न तना। मोसा–मोसा जी जी रेगिंग उडुःईया चि नः दो अबु ताला रे नेकन पचिरि को का ताईन होना चाहिए। चियाः चि सिदा जूग नः दो चबा जना। लेकिन मियद मोरोए जंग चकाः चिल कए पोआः दड़िया? एना मेनते अपे जपः रे ओकोआ कजि मोने जाःईया एन रे बरिया गे टेकद बईयाः काना–बोरो आर गिउः। चिलका दो उम्बुल रे जेटे। सुकु रे दुकु, सेंगेल दः...। मेन्दो तिसिंग गे नेका मेने कजिओ का गे। ने अलय–बलय जी रे सिरमा बितव जना। जी रे शान्ति, सुकून का नम जना। ने लेकन अलय–बलय सोमय रे मोसा मोसा दो अबुआः भोगोमन सिंह बोंगा गेईंग दोष जईया चि हे भोगोमन आईलेकन होडो कोगे चियाःते अकडुःबकडु बोकाम बईजाः कोआ? अम अईयाः जी होड़ो मो के हरसिंगार बा तेदोम बा दड़िया! हरि बा रः मुंदुरा दोम हका दड़ियाः। मेन्दो नेका कम रिका केदा। भोगमन....अईया! जी मिसा अयर मिसा तयोम सेसेन तना। अईंग होड़ो होन तनिः बिर जजवर को लेल कोपे। कोते मोने कीया, पक्का मोने कीयातेः सेनोः सुर–सुर तना।

मेन्दो ओकोआ कजि काने–काने कजिया पेयांईंग मेन जदा एना कजि काजि नाःव गे बोरोगे अटकरोः तना। नाअः नेया बोरो ओड़ोःगे पुरः मरंग वोः तना। नेया कजि, कजि ते बईयोः तन नागे का कजि ते। चियाः चि अईंग नः दो अबु तला रः एन चीनी पचिरि के धसव मोनेया कःईया। अईंग खूब अकादन्दा रेईंग टोः जना। नेया अलुः बलुः को लेल तेगे मुसिंग कुडिः मेतईंग तना –

'चि चिलका तिसिंग दो अम हपे–हपे गेम तई बेड़ान तना। चिनाः कजि मेनाः? अईग सः ते जॉन गलती जाः होबा जना।'

'कागे गतिंग का। आईंग सः तेगे जाः जाँन गलती होवब तना। इदो ड़ोः अईंग वो कईंग ठोर जदा।'

'नाः नाः एन होड़ो हिजुः लेना।'

'ओकोए?'

'इनिः गे। गुचु हरा तदिः। रेल लाईन परोम रिनिः।'

'ओ, अच्छा अच्छा। बुझाव जनाईंग। तरन रे मियद बुगुलिः हका तदा? इनिः गेदंग?'

'हे! इनिः गे। अमः ओकोए तनिः?'

'जाँएवो का गे। अईंगः सोंगे, बस।'

'हें...हे...हें.. पुरः गे बुगिन सोंगे तम।'

'चिलका ते?'

'चिटिः ओम नुका तदा।'

'चिटि? ओकोरेः?'

'हेनेः बबुआः इसुकुल बुगुलि रे।'

'चिटि उडुंग केया तेईंग लेल जदा। कुलनिः दो दरियागंज, दिल्ली। मेन्दो भीतर रः चीज लेल केयाते अईयाः जी कुकुरू रेन केयद गे अपिर जना। जी रे ओकोआ बोरो तईकेना, शक नई केना एना गे होबा जना। अईगः बोरो ओड़ोः पुरः हरा जना। चिलका दो गितिल पीड़ी रे लोलो होएवो लिंगि तना। एन शैतान लिफांफा चनः तई केना एन लिफाफा भीतररे मेने में अईयाः जी–जीबोन रः सोबेन असरए–भोरसा कोरः तोरोए पेरेः केया तेको कुल तदा। कानी ओला कन लेंगा ती अतोम सः रे खूब सुगाड़ा वणिता रेको ओल कुल तदा – कमि रे का हिजुः जन लेका ते नेया ले कुल रूड़ाम तदा – सम्पादक।'

नेया जगर अईउम केया ते अईयाः जी दो हइउडु गिड़ि जना। चिलका दो मियद पढ़ाव होन फेल सर्टिफिकिट सब केयाते उडुः तना। मेन्दो कागे। नेकाव कागे चि सोबेन इमतंग ने का गेको कुल रूड़ा जदा। कानी कितब कोरे कुले सिदा रे अईंग मियद बंगाली बाबुआः ओलेईंग पढ़ावा कद तई केना। इनिः ओल लः चि सेकेड़ा–सेकेड़ा मरंग बबई का ठीकिया। एना मेन्ते एटेः एटेः रे हुपुडिंग–हुपुडिंग कितब कोरे गेईंग कुल बेड़ा जद तई केना। कानी को छपाव को छपा बेड़ा लः। मेन्दोईंग अटकर केदा चि ने मनवा जी पुरः गे बैमाना। जी रः मोने कोरः टुन्डु कोतः? सोबेन रिम्बिल गे अयागः गोटा

दिसुम गे अयागः। गोटा जलाकर गे अयागः। मियदेः नमे रेदो उपुनिया नमें रः लाबोआ। ने निर तन लेकन दुनिया रेः भला ओकेएः तिंगुआ कन मोनिया? एना मेन्ते अईवोगे ओल पढ़ाव रः दुनिया रे हनुमान गाड़ी लेका कुड़िल मोने किःईया। जी जी रे कचपचाव किईयाः हाँ, इसु होबा जनाः न दो। यदि नेकागे जीबोन बितव इदिवोः रेदो मुसिंग दिन ने लेखक बिना मलिकयाः सेता लेकाए गोए सेंगेरोवा।

चौबे मियद अईयः गुरू लेकन साहित्य रेन सोंगे तनिः। कोलकाता रेगें नुकुरी तन दिपिला नि गेचा साहित्य संसार रः मिद कटा चपद रः ठाँवोः ओम दड़ि लिईयाँ। नि कोलकाता शहर रेन साहित्य कमि तन तला रे पुरः गे मरंग होड़ो तनिः। नियाः जी कुड़म रे दो बुगिन आर दया–धोरोम कोगे पेरेया कन गेया। आर हे, दया–धोरोम देंगा नेकन जी बेगर ओकोए लेखकेः आईयां, सकावगा? का जाः बु मेन लेया। ओह अम अईवाः भोगोमन लेकन होड़ो। एन रेगे अईंग कानी–छापा कोअः ओड़ाः कोतेम इदि किःया। ओको रेदो साहित्य कमि कोअः दुनुब पंचाईटी कोरेम इदि किंःया। ओको रेदो अईयाः जाँ लेकन कानी कोगे अमः कितब रेम हपा रिका केदा। आर एना कोरः जो दो नेया चि तिसिंग अईंग ओको तः रे मेनईंग दो मेनईंग गे। हाँ, अईवो हले मियद हुड़िंग हुड़िंग लेखक दो हे गे।

लेकिन हे, ओकोए अईंग के लेखकेः पतियाईग च का। अईंग एना रे जेतन दुखु–हुड़िंग जी बंगःईया। मेन्दो अईयाः जी दो लेखकेः मनातिंग जःईया। नेया गे बोड़ मरंग पेड़ेः दो। चेतन ते रकब रः सीढ़ी दो नेया गे....। सेंणां कन होड़ो कोअः कनाजि नेया – रोला जो आर फिटकिरि बेगरो रंगा रकाबोः का। मेन्दो नेया चिलकाले होबाबगा? अईंग दोईंग कजि गेया। रोला, फिटकिरि, बेगर चिलका ते रंगा रगाबा मगर ने लेकन उकुआ कन, दनंग कन कजि कोरे गेचा जीवोन रः जी केटेः दो उकुआ कना।

मुसिंग चौबे जी अईंग के कोलकाता रः नंदन तेः इदि किः ईंग। साहित्य पंचाईटी रे। नंदन कोलकाता रः मियद ते मियद संस्कृति दुब जारू ओड़ा तनः। रबिंद सदन सिसिर मंच, फाईन आर्ट ने लेकन दुब जारू सुसुन दुरंग ओड़ाः को ने नंदन कुण्डम कोरेगे मेनः। दुरंग हरिया को, कलाकार को साहित्यकार को नेतः हिजुः केयांते जी रः सिद्धि को नम जदा। नेतः हिजुः केयाते निकु जीबोन रः पुन्डि कागज लेले लेकन छवि को बई जदा।

गोंट रे दुबा कन मियद होड़ो कजि तनेईंग अईउम जःईया–तिसिंग गपा दिसुम रे हिंदी भाषा रः खूब गे बे पुछव होबाव तना। आर ने बे–पुछाव कोरः कारण दो सम्पादक को गे खोम जिम्मेदार दो कागे। नेया कोगे कारण दो चि तिसिंग दिसुम रे हुडिंग लेका बारि बुगिन हिंदी पत्रिका को सरेः जना।

सम्पादक को ढलावा कन हीरा गे ओड़ोः गलाव सनंग कोआ। पत्रिका का अकिरिंगोः रः बोरो इनकु केः बोतोंग जः कोआ दो। चियाः का? कुईला ते हीरा साला रे सम्पादक कोआः जिम्मा कागे?

एन गोंट रे बरिया लेका दिसुम जोनोका रः पत्रिका कोको लुतुम लः। आर एना कोईंग अईउम केद चि अईयः जी रे अर्जुनः सार लेका हाई गोए लेकन दिसुम जोनोका बुगिन पत्रिका कोरे गे मद बिउर बेड़ा तना। जी जी रेगे लोबो कोलोः तेई।ग उडुः तना, ओह री एन पत्रिका कोरे मियद लेका रेवो होनंग अईयाः कानी को हवा कोः रे। तोबे अईंग खूब फोखतो ईंग हिसबे ना। फोकोतो बारिवो का गे, अईंग अईंग गे खूब मरंग लेखकोईंग हिसब ना। एना मेन्ते गे एन हुलंग रोड़ तन बन्दा रेन हाई लेका रः रः असरए रेईंग अईयाः कुड़ि केईंग कुलि लिया--

'ओड़ोः चनः कोए ओम तुका लः इनिः?'

'हे मियद किताबोः बगे तुका तदा।'

'कोरेः?'

'एना दो बबुआ गे जाः सबा कदा। चितरे ईंग लेलेयाए मेन जद तई केना।'

बबुआ दँड़ा रे बाहरेईंग उडुंग जना। आरिंग नम किण। हटिया रः कनटाड़ा उम्बुल रे, दुड़ा कोते टोपेया कन, तिन्जुला बई केयातेः दुबा कना। बुलु चेतन रे पत्रिकाए दो तद चि खूब ध्यान ते कोवोः गिड़ि तद लोः ए ओल बेड़ा तना। आर ध्यान जिमिउग जोर चि मेने पे सत्तर सिरमा होबा कन बुड़िया अयाः सकिंग जई को नगेन अँड़दि केयाते विदाई जोम मण्डि नगेन कलुः ए तुकुई तना। आर इनिः के हुड़िंग खींस हुडिंग सुकु तेईंग कुलि किया--

'चनम चिका तना बेटा.....?'

'नेयाईंग बई तना।'

'चनःम बई तना?'

'नेया।'

'इतुन लेकांते इनिः गुरूल गुरूलेंइंग लेला कःईया। लेलाकीयाते मोलोंग ईंग तबिड़िन जना। मगर हे, अबु ओकोन ओकोन समय कोरे मोलोंग बु तबिड़िन तना? अचंभित कोः रे। होन कोआः खयरव ते। नेरे बेटाः कमि ते खदख तेईंग कोंका गिड़िवोः तन रेव नेरे पुरः गे सुकुईंग नम जदा। अपि सिरमा होबा कन ने कोड़ा होन चनःए चिका तन तई केना? अपेयः जी को नेया इतुन नगेन कुलबुलव तना जाः।

हागा को ओड़ोः मिसि को, नि दो दुनिया रेन मरंग लेकन रंगा कमि निः

पिकासोअः अपुतेः उडुँग जना। आर एम एफ हुसैन साहबः काका तेः बई जना। रंग, दः कुची आर कैनवास को कोतः तेः नम केदा, लंदन, अमेरिका, फ्रांस ते आउलः जाः? का कागे जपः रे ओते हासा पसरव कना। ओते बिला कना। बस! ने पार्टी लेका बिला केन ओते हसा रेः बिला कल ओते हसा रे चनः चनः बनोः?

ओते हसा रे चिकन चिकन रंगा बनोः?ने ओते हसा रः गोनोंग गे पुरः मेनः। जाः बु मेन लेया चि नेया मेन तेगे दुरंग हरिया को कवि, कानी कार की कजि तुकादा– ने ओते हसा ते मोलोंग रे टिकन पे हे दिसुम होड़ो को चियाचि ओते हसा को मयोमेः नम तना.... ।

हसा लोः ते दः ए जमा केदा। आर रंगा रकब जना।

दः कोतः रेम नम लः पेंटर बाबू?'

'हेनेः हेन्डेईंग डोडोः लः। एनाः दः..... ।'

आर अईया पेन्टरः ते पेन्टर बाबुए बई जना। साते ते अइयाः आबाव हेगे। हे ने लेकन होन के अगर अपु कए मेतई रेदो हंगी रेः धसव गोएन का। तिसिंग ने हुड़िंग आबा ते नेया सेंणाईंग नम केदा चि हासा रः गोनोंग दो पुरः गे मेनः। हासा रः रंगा तेज मेनः। चितकार रः जीकुड़म गे कैनवास। कोशिश रे एकेला तन ती डँड़ोः गे बुची.... । झूँड़आ ते तसदेः तुदाउ लः। कुचीः बाई केदा। आर ने पत्रिाका रः सकम कोरे गे गन्डे– मुन्डि लकीर रचः केया तेः पेरेः तदा।

'अच्छा बेटा, नाः दो नेया कितब अईंग गोमाई में।'

'ने गा आबा, अमो चितल बई में।'

'हे, कजि रे हजार–सौ उडुः बार केयाते बोः बारिंग एकेलाईया। मोचा रे उसुकुर कजि तेयाः अलंग का तई केना। आर एन लोः गेईंग हेबे किः चि जोआ रेईंग चोः किया। आर माते तः ईंग इदि तुकाईयाः। आरिंग कजियाई तना ने तम निः नः दो पेंटर दो का पेंटर बाबू तनिः।'

कुन्डम सः इदि केयाते पत्रिका ईंग लेल जदा जी दोपोल केन रिका जना। ओको लेकन पत्रिका कोरे अईयाः कानी को छपा कन लेल मोने लिंःईंग, नेया दो एनकन पत्रिका गे तनः। दिसुम जोनोका पत्रिका। मगर दिसुम जोनोका पत्रिका कोरः चाईल–चोलोनोः चिलका लेलेपे। पेंटर बाबुः पेंटिंग वे दुकुआ कन ओल कोईंग ओटाः बेड़ा जद लोः ईंग ओटाः नम तदा –

1.अखिलेश कुमार बड़जात, लखनऊ

अंग्रेजी में डी.लिट्। अब तक चार हिंदी उपन्यास प्रकाशित। हंस, वागर्थ, कादम्बिनी में दो–दो कहानी प्रकाशित।

सम्प्रति – मिनीसोटा विवि शिकागो (अमेरिका) में अंग्रेजी का प्रोफेसर।

2. रामशरण पट्टीदार, पुणे

आग का दरिया (मासिक) में सम्पादक

हंस में यह दूसरी कहानी प्रकाशित।

पता – जोड़ा मंदिर रोड, पुणे–5

3. डॉ. नन्दकिशोर चौहान (यूरोलॉजिस्ट) इंदौर

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित।

कथामृत की ओर से 06 में सम्मानित

सम्प्रति – जेनेरल हास्पिटल, इंदौर।

ने मपारंग लेखक कोआः कानी कोरेन होड़ो को को मपारंद गेया। नवा युग रेन को तन को। टाका–पैसान होड़ो को तन को। इन कुआः हिंदी जगरो मपारंग गेया। इनकुआः अलंग रे हिंदी भारत चाहे हिंदुस्तान रे का नमोआ। मगर इंडिया चाहे हिंदुस्तान रे नमोआ ने होड़ो कोरे गांधी, बिरसा, अशोक लेकन को सोबेन को सोया सेरेद जना। मगर गान्डीह, बीरसा, अशोका इंडिया रे बोः दोदो केया तेको जगर जदा। निकुआः नगेन गंगा गड़ा रोड़ जना। मगर गंजेस इंडिया रे लिंगि–लिंगि ते लन्दन रः टेम्स गड़ा रे जमा जना। गंजेस आर टेम्स गड़ा किंगआः जपागर बुअईउम लेया–

'हाई जी–टू (जीतू)।'

'हाई रोमियो।'

'हाउ आर यू?'

'फाईन'

'तोबे अमः पेरेन्ट्स को चनः रेस्पोंस को ओम केदा?'

'मॉम दोए राजी जना।'

'एण्ड डैड?'

'डैड गेवोए मनातिंग, आई हॉप।'

'क्वीक प्लीज जी–टू। क्वीक। आई लव यू वेरी–वेरी मच। आई अम बेगर काई जीद डरिया।'

'हॉ, डैड केई मनातिंग रिकाईया। अलंगअः विवाह होबाव गेया।'

'व्हाट वी–वाह?'

'ओह नो मैरेज पोसिबल एमंग अस।'

'प्रोमाईज।'

'या–ह प्रोमाईज।'

'बाई ओ.के.।'

'बाई।'

'ने पत्रिाका रः जोनोक ईंग लेल किद चि इसु दिनाते दुडुमा कन बोरो ओड़ोः बिरिद जना। चियाः मेनते चि नेरे न होरी नम जना। न हीरा। न हरि। नागे रिक्शा चलब निः कल्लु काका। न उरिः गाड़ी रः रीं–चों अईउम जन। नागे हवड़ा स्टेशन रे कमिनाला निर तक आदिवासी कुड़ि होन कोआः दुकु कनाजि को नम जन ओकोन को चि रेंगेः ते बलय तन अपन–अपन एगा–अपु कोआः भार खोम नगेन असम भूटान पंजाब को निर तना। नागे कोतः रे रेंगेः ते गोएन तन सिउः कमि होड़ो कोआः वर्णिका गे मेनः। ने दिसुम जोनोवा पत्रिका पढ़ाव केयातेईग हईउडु गिड़ि जना हाले को....।'

एन हुलंग अलेयाः राजधानी रांचीया तिंग हिजुः लेना। खर्चा–पत्ती ले केयाते अईयाः कुड़ि पुरः गे हिसब–कितब निः तनिः। रांची सेनोः सिदा रे आलतु–फालतु का खर्चा रःए मोन्तोर किंःग। मेन्दो हागा–मिसि को अईउमेपे, लेखक आर जुआड़ी मियद डन्डाः ते दलकिंग लेकन होड़ो किंग तन किंग। बिनगा निमिउंग गेचि अलिंगः मोने बिनगा–बिनगा मेनः। अईंग कितब किरिंग रेन बुलरा होड़ो। एना मेन्ते कुड़िया मोन्तोर तव कईंग तोल जना। आर बरिया–अपिया लेका दिसुम जोनोका रः पत्रिका कोईंग किरिंग आउ लः। आर नेते नसीब नेका जुड़ि जना चि राहु, केतु आर शनि मिद लाईन रेगे को हिजुः जना। अईयाः कनाजि रः दिशा आर ने पत्रिाका कोरः होरा मिद रे जमाव तना। आर एना दो ने युग रः हिंदी अलंग चाईल। सेंणा कन होड़ो कोआः कनाजि दो नेया चि नेया दो हिंग्रेजी को मेतः। नेया अबु के अपनाव होबावगा। नेया तिसिंग गपा सोमय रः दरकार तनः। नेकन जगर कोते हिंदी रः होरा चकरोंगा। दिल मांगे मोर, ठंडा–ठंडा कूल–कूल रः कमाल चनः हुडिंग गे तनाः? नेकन जगर ते बाहरी दिसुम रे हिंदी रः होराव चकर जना। आर पैसा सन्जु तेयाः बुगुलिवो चकर जना।

हे, मगर 90 तयोम ते दिसुम रे हिंदी चिमिउंगेः सेव अयर केदा कुम्बुडु–कुम्बुडु हापे–हापे। मेन्दो अले हातु होड़ो कोदो हिंग्रेजी अलंग काले बुझाव तना। अले दो दः ओते आर बिर ते जीदेन तन होड़ो को। ने ओते हासा रेले ओमोना कना। अलेया रंगा रकबा कना। एना मेन्ते ने दिल्ली, मुंबई कोलकाता कोरः पब्लिक स्किूल कोआ ते उडुंग कन होला–होला रेन छोकोड़ा–छोकड़ि कोदो डोन्डो नादान गेले हिसब जद कोआ। सेतः रे उडुंग कन होन अईउब सः ओड़ाः ए ठोर नमे गेया, नेका अलेया विचार मेनः।

लेकिन दिसुम रे अयर ते हिंग्रेजी आर अंग्रेजी रः लड़ाई जोर ते

सेसेन लेका अटकरोः तना। सगुन रः कजि दो नेया गेचि ने लड़ाई रे लेखिका किंग चिता मुग्दल आर मृणाल पांडे अले जमा रे मेनः किंग। निकिंग मां तकिंग वो हेगे। मां तकोअः विचार दो का रेवो ओड़ा–दुआर लोः जोका कना। इन कुअः बुद्धि–विचार ओते हासा ते परका बनोः। इनकिंग कजि तदा–अईंग के हिंग्रेजी रः जेतन उडुः बनोः–चित्रा मुग्दल। हन्ते पाण्डे जी कजि तना– ओको इमतंग ओको दिसुम अयाः भोरसा आर पेड़ेः रे तिंगु न तोबे दो इनिः अयाः अलंग आर राईन–जाईन कोरे सुकु–रसिकाए नमेया। नवनीत सितंबर 08। आखिरी टुन्डु रे दो नेया जगर चि ने लेकन नवा जूग रेन होरा अंद तद कोड़ा होन कुड़ि होन को लंदन रः टेम्स गड़ा रेको ठुकुसा कोः चि ओड़ो गंगा गड़ा रे रूतु ओरोंग नगेन को हिजुआ।

'इमिन रेवो, साहित्य होएवो रे जनव सयद जद ने होड़ोआः जी हार कए मनातिंग जना। आर ने जिलिंग–चकर हेन्दो–हिपिसिंगा जगर अईएम केयाते, लेल केयाते मुसिंग अईयाः कटा जः केयातेः कजियाईंग तना–अलंग दोलंग सोंगे तना। सोंगे अईयाः दुकु कई उदुबई रे दो ओकोएईंग उदुबईया? अम दो मरंग लेकन, तेबः तद लेखक तनि । दुनिया के अईयाः दुकु दो उदुबई में।'

इनिः भोरसा ओम तन लोईंग कजियाई गंतना, अच्छाईंग लेलेया। जगर को अयर ते सेसेन इदि तना।

'वागर्थ रे चलावगा?'

'वागर्थ! हे, चौबे जीवो नेया रः जगर बेड़ा जद तई केना।' मेन्दा....। मेन्दो हिलसा हाई गोटा हुगली गड़ाए पोन्डे गिड़ि तदा। चना ने भद्रजन बंगाली को अईलेकन मोटो मोलोंग को जगह को ओमाईया?

'अच्छा तोबे कादम्बिनी रे?'

'हे चलाव दो चलवगा। मेन्दो एन डेन सम्पादिकः जुलतन मेद मुड़ा लेल केयाते जोर बोरोगे हिजुः तना। कुड़ि पेड़े दुनिया रे कोड़ा पेड़ेः'

'चिकका ते सेसेना? इनिः होकई में।'

'अच्छा हंस रे?'

'हे, नेरे कोशिश केया ते लेल लेम। होबा दड़ियावा प्रेमचंदेयाः बोंगा ते अईयाः दुकु तेः दुकु रे दो।

अम अईयाः दुकु हरगिड़ि निः वो हेगे हले। अमतः ते अईयाः अर्जी मेनाः चि ने लेखक ई रः रोगवा ते बनचाईंग में। अम दो अईयाः भोगोमन लेकन होड़ो। चाहे नेया छपाव का छपाव। कुड़म रे हम्बल दिरि दोए दोवा कदा।'

छपास रोग

सच कहता हूं। जो कहता हूं उसमें सच्चाई है। इसमें किसी की दो राय सुनने को तैयार नहीं। तैयार होउं भी कैसे? मैं तो अपने मन की बात कहना चाहता हूं। अपनी राम कहानी सुनाना चाहता हूं। मगर आप पाठकगणों के सामने क्या कहूं? कहते भी शर्म आती है। वैसे भी हम गांव वालों को आप शहर वालों के सामने मंगरा–बुधुवा ही कहा जाता है। मैं भी उन्हीं में से एक हूं। हां, मेरे मन–कपाट पर शर्म के साथ–साथ एक और चीज दस्तक देने लगती है। वह है 'भय'। मानो आप और हमारे बीच भय रूपी चीन की दीवार खड़ी है। दीवार के उस पार आप मंगोलिया के आक्रमण सैनिक बंदूक ताने हुए हैं। इस पर हम चीन के चेले–चमटे, दुम दबा कर पलायन की मुद्रा में हैं। कभी–कभी मन ही मन सोचता हूँ कि अब हमारे बीच यह बदस्थिति नहीं रहनी चाहिए। क्योंकि अब गंगा मईया से बहुत पानी बह चुका है। लेकिन अकेला चना घड़ा कैसे फोड़ सकता है? तो मैं जो आप के सामने कहने जा रहा हूं उसे कहने में कंबख्त यही दो चीजें आड़े आती हैं – भय और शर्म। जैसे छांव पर धूप। सुख पर दुख। आग पर पानी...। लेकिन मेरा मन आज ही ऐसा है, सो बात नहीं। ऐसा शंकालुमन ढोते–ढोते अरसा बीत गया। मन को शांति नहीं। सुकुन नहीं। इस कशमकश, उधेड़बुन में कभी–कभी अपना ईश्वर (सिंगबोंगा) को ही कोसता हूं कि हें सिंगबोंगा, मुझ इंसान को ऐसा अकडु–बकडु क्यों बनाया? तू मेरे मन को हरसिंगार से तो हंसाता। कानों पर अमलतास का मुंदरा तो झुलाता। पर तू ने ऐसा नहीं किया, ईश्वर...। कभी आगे तो कभी पीछे चलता है, मेरा मन। मैं इंसान हूं न। जानवर को देखो, जिधर मन किया, चल दिया। पक्के इरादे के साथ।

लेकिन जो बात आपको बार–बार कहने का वादा कर रहा हूं उसे कह डालने में अभी भी बहुत डर लगता है। अब तो यह डर और भी भयंकर रूप धारण करने लगा है। इस बात को उगलते बनता है न निगलते। क्योंकि मैं हमारे बीच पनपी उस चीन की दीवार को भी मिटाना चाहता हूं। मैं अजीब स्थिति में फंस गया हूं। रात–दिन मन उदास–सा रहने लगा है। मेरी गुमशुम स्थिति को देख कर अक्सर पत्नी टोका करती है–

'क्यों जी, आजकल तुम खोये–खोये–से रहते हो। क्या बात है? मुझसे कोई भूल–चूक हो गई है?'

'नहीं प्रिये, नहीं। शायद मुझसे ही चूक हो रही होगी। पता नही? मुझे

भी पता नहीं।'

'अभी–अभी वो आदमी आया था।'

'कौन?'

'वही दाढ़ी वाला। लाईन पार का।'

'ओ, अच्छा–अच्छा। समझ गया। कंधा से एक झोली लटकाए रहता है, वो न?'

'हां, वही। तुम्हारा कौन उ?'

'कोई नहीं। दोस्त है। मित्र है, बस।'

'हें...हें....हें...बाउत अच्छा दोस्त है, तब तो'

'क्यों?'

'दे गया है।'

'कहां है?'

'उ बबुआ का इसकुल बेग में रखी हूं।'

'पत्र थैली से निकाल कर देखता हूं। प्रेषक–दरियागंज, दिल्ली है। लेकिन अंदर की चीज देख कर मेरा शंकालु मन और मुरझा जाता है। मेरे मन में समाया हुआ डर और भयानक रूप ले लिया। जैसे तप्ते रेगिस्तान पर गर्म हवा बह चली हो। वह मनहूस लिफाफा क्या था जिसके अंदर मानो अपने जीवन की सारी उम्मीदों की राख भर कर भेजा गया है। लौटती डाक से अपनी ही रचना आयी थी, उसमें। रचना के हाशिए पर बड़े ही सुंदर अक्षरों पर लिखा था – उपयोग में न ला सकने के लिए हमें खेद है– सम्पादक।'

'वह भयानक वाक्य पढ़ कर मन और उदास हो गया। जैसे कोई अनुर्त्तीर्ण छात्र हाथ में पर्चा लेकर दुविधा में खड़ा हो। लेकिन नहीं। ऐसा नहीं कि हर बार इस तरह का खेद पत्र आता रहा हो। कहानी पत्रिकाओं के पन्ने काला करने के प्रारंभिक काल में, मेरे मगज ने एक बंगला विद्वान की सुक्ति पढ़ लिया था – 'तड़ा–तड़ि बोड़ो होवा उचित नांए, याने जल्दी–जल्दी बड़ा होना ठीक नही। इसी सुक्ति का अनुसरण करते हुए शुरू में छोटी–मोटी गुमनाम पत्रिकाओं में रचना भेजता रहा था। रचनाएं छपी भीं। लेकिन लगा कि मानव मन बड़ा ही बेईमान है। इच्छाओं की सीमांत कहां है, मानव को? अनंत आकाश ही उसका है, अथाह सागर ही उसका है, विशाल धरती ही उसकी है, एक पाए तो चार की आस में उलझे। इसी भागदौड़ की जिंदगी में

भला कदमताल किसे पसंद है? सो, मैं भी साहित्य की दुनिया में हनुमान डेग भरने का मन बना लिया। मन कुलबुलाने लगा – बहुत हो गया। अगर ऐसा ही दिन बीतता जायेगा तो पक्की बात है कि एक दिन यह लेखक कुत्ते की मौत मर जायेगा।

चौबे जी मेरे गुरू मित्र रहे हैं। कोलकाता में, नौकरी के दरम्यान इन्होंने ही तो साहित्यिक दुनिया में पदार्पण कराया था। ये कोलकाता के जाने–माने साहित्यकारों, आलोचकों एवं सम्पादकों में गिने जाते हैं। इन पर, सज्जनता, सहृदयता तो उनके अतिरिक्त गुण हैं ही। क्यों? सहृदयता के बिना लेखक, विद्वान भी हुआ जा सकता है? शायद नहीं। हरिमन, कभी आप मुझे अपने संपादकीय दफ्तर में ले जाते। कभी साहित्यिक गोष्ठियों में ले जाते। कभी मेरी टूटी–फूटी रचनाएं अपनी पत्रिका में स्थान देते और जिसकी सुपरिणति यह रही कि आज जो मैं हूँ, सो हूँ। एक छोटा–मोटा लेखक मैं भी हूँ जनाब।

पर हां, कोई मुझे लेखक माने या न माने, मुझे कोई दुख नहीं। पर अपना मन तो मानता है और यही मेरा लेखकीय संबल–सहारा है। आत्मविश्वास उंचा उठाने की पहली सीढ़ी है कि नहीं?

विद्वान लोगों को कहते सुना है – हर्रा लगे न फिटकिरि, फिर भी रंग चोखा होए। आह! मैं तो मुंह खोलूंगा ही। हर्रा, फिटकिरि के बिना रंग कैसे चोखा होगा? पर इस अनहोनी की दरिया में होनी के तिनके का सहारा ही तो जीवन का उत्सव है, उद्गम है।

एक दिन चौबे जी कोलकाता के नंदन परिसर में ले गये। एक साहित्यिक गोष्ठी में। नंदन परिसर यहां का एक मात्र बांग्ला संस्कृति केंद्र है। रवींद्र सदन, शिशिर मंच, फाईन आर्ट, वगैरह–वगैरह इसी परिसर में स्थित हैं। कवि, कलाकारों, साहित्यकारों को यहां आ कर सुकून मिलता है। यहां आ कर ये जीवन के सादे कैनवासों में आकर्षक रंग भरते हैं।

गोष्ठी में एक विद्वान लेखक को कहते सुना – आज देश में हिंदी की दयनीय स्थिति है और इस हिंदी दुर्दशा को न्योता देने में संपादकों को भी कम दोषीदार नहीं माना जा सकता। इसी का परिणाम है कि आज देश में राष्ट्रीय स्तर की हिंदी पत्रिकाएं गिने–चुने भर रह गयी हैं। संपादक तराशे हीरे ही चाहते हैं। पत्रिका की साख गिरने का भय जो उन्हें सताता है। क्या कोयले से हीरा चुनने का कोई साहित्यिक दायित्व नहीं है उनका?

'वे उन गिने चुने राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं के नाम गिना रहे थे।

और उसी से मेरा लेखकीय वृद्धि का दायरा दो गज बढ़ गया है। सो, बढ़ गया तो अभी तक बरकरार है। तब से मेरा मन, अर्जुन की तीर की भांति, मछली की आंख सरीखे उन राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं पर ही गड़ा हुआ है। मन कहता है – काश, एक प्रति भी उनमें छप जाए तो अपने को धन्य समझूंगा। नहीं, सिर्फ धन्य ही नहीं। तब, अपने को एक बडा लेखक के रूप में भी समझूंगा। इसी लिए उस दिन पत्नी के प्रति मेरी जिज्ञासा सूखते तालाब की मछली की भांति जल रूपी आस में पड़ा था। पूछा–

'और कुछ दे गया था, वो?'

'हां, एक गो किताब दे गया था।'

'कहां है वो?'

'शायद बबुआ ही पकड़ा होगा। चित्तर देखेंगे बोल रहा था।'

बबुआ की खोज में मैं बाहर निकल गया। और पाया कि कटहल वृक्ष की छांव तले वह धूल–धूसरित हो, टांग पसार कर बैठा हुआ है। उसके ऊपर वह पत्रिका को खोला हुआ खूब मनोयोग से उस पर कुछ लकीरें खींच रहा है और मनोयोग ऐसा कि मानो सत्तर बसंत देखा हुआ नानी अपने पोते की बारात–विदाई के निमित्त भोज का दोना सी रही है। मैंने उससे बदहवास होकर पूछा–

'क्या कर रहे हो बेटा?'

'इसको बना रहा हूं।'

'किसको बना रहे हो?'

'इसको।'

मैंने उत्सुकतावश उसे देखा। देख कर अपना माथा पीट लिया। हां, हम अपना माथा कब–कब पीटते हैं? अंचभित होने पर। गुस्से से मुग्ध हो कर। यहां मुन्ना के किये–कराये पर गुस्से से पागल हुए भी, उसमें मुझे गजब का आनंद की अनुभूति हो रही थी। तीन साल का यह बच्चा क्या कर हा था?

आपका मन कुलबुलाता होगा?

भाई साहब लोग! यह तो विश्वविख्यात रंगकर्मी दिवंगत पिकासो का बाप निकला। और एमएफ हुसैन का चाचा बन बैठा है। कैनवास, तूलिका, रंग, जल, तेल, ये सामान कहां से लाया, लंदन, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, जापान, दिल्ली, मुंबई आदि जगहों से लाया होगा? नहीं जनाब नहीं। सामने माटी का बिखराव था। धरती की फैलाव थी, बस। इस धरती पर क्या–क्या नहीं है?

इस माटी में कौन–कौन रंग मौजूद नहीं हैं? इस धरती का मोल ही अनमोल है। भाइयों। शायद इसी लिए कवि कथाकार रो–धो कर विदा हो गये – इस धरती से तिलक करो, धरती है बलिदान की, वंदे..... ।

माटी संग जल मिलाया और रंग चोखा हो गया।

'पानी कहां से मिला पेंटर बाबू?'

'वो, हुँआ पेशाब किया। उसका पानी से..... ।'

और मेरा बबुआ, बबुआ से पेंटर बाबू बन बैठा है। साथ–साथ मेरा बाप भी। हां, ऐसे बेटा को कोई बाप न कहे तो क्या कहे, वो? आज इस नन्हें बाप से मुझे सीख मिली कि माटी का मोल अनमोल होता है। माटी का रंग चोखा होता है। चित्रकार का मानस–पटल ही कैनवास होता है। प्रयास में हिलते–डुलते हाथ ही कूची....। झाड़ी से घास उखाड़ लाया। कूची बनाया और उस पत्रिका के पन्ने–पन्ने पर अंकित लेखकों, कहानीकारों के चित्रों, लिखावटों के ऊपर टेढ़ी–मेढ़ी लकीरों से भर दिया।

'अब, बस। यह किताब मुझे दे दो।'

'लो, तुम भी चित्तल बनाओगे?'

'हां' में सहस्त्र सोच के दबाव में सिर हिला भर दिया। मुंह में प्रशंसा के शब्द नहीं थे और इसे गोदी में ले कर मां के हवाले कर दिया – लो, अब यह बबुआ नहीं, पेंटर बाबू है। घर के पिछवाड़े जा कर पत्रिका को उलट–पुलट कर देखा तो मन फक से रह गया। जिस तरह की पत्रिका में अपनी रचनाएं देख पाने को मन तरस रहा था, कमबख्त यह तो वैसी ही पत्रिका थी। राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका। पर, आज राष्ट्रीयता भी क्या बला है? राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं का चाल–सुभाव, माप–दंड भी कैसी विचित्र हो गयी है। पेंटर बाबू के पेंटिंग से आहत अक्षरों को जोड़ तोड़ कर देखता–पढ़ता हूं।

1. अखिलेश कुमार बड़जात, लखनऊ

अंग्रेजी में डी.लिट्

अब तक चार हिंदी उपन्यास प्रकाशित

हंस, वागर्थ, कादम्बिनी में दो–दो कहानी प्रकाशितढ

2. रामशरण पट्टीदार, पुणे

आग का दरिया (मासिक) में सम्पादक

हंस में यह दूसरी कहानी प्रकाशित

पता – जोड़ा मंदिर रोड, पुणे–6

3. डॉ. नंदकिशोर चौहान (यूरोलॉजिस्ट), इंदौर

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित

कथामृत की ओर से 06 में सम्मानित

सम्प्रति : जेनेरल हास्पिटल, इंदौर।

इन महान लेखकों के पात्र भी महान हैं। मॉडर्न हैं– कूल वर्ग के हैं। इनकी हिंदी भी महान है। ऐसी महानता, ऐसी हिंदी भारत या हिंदुस्तान में नहीं मिलेगी। मगर इंडिया या हिंडुस्तान में मिलेगी। इन पात्रों के लिए गांधी, बिरसा, अशोक सब के सब सड़–गल गये। मगर गान्ढीह, बीरसा, अशोका, इंडिया में सिर उठा कर बोल रहे हैं। इनके लिए गंगा सूख गयी हैं। मगर गंजेस इंडिया में फ्लो करते–करते लंडन की टेम्स नदी में ज्वाईन करने लगा है। गंजेस और टेम्स की कन्वरशेशन सुनिए –

'हाई जी–टू' (जीतू)

'हाई रामियो'

'हाउ आर यू?'

'फाईन'

'तो तुम्हारे पेरेंट्स ने क्या रेस्पांस दिया?'

'मॉम तो राजी हो गयी हैं।'

'एण्ड डैड?'

'डैड भी मान जायेंगे, आई हॉप।'

'क्वीक जी–टू। क्वीक प्लीज। आई लव यू वैरी–वैरी मच। मैं टुम्हारे बिना जी नहीं सकटी।'

'हां, हां, डैड को मनाऊंगा। हमारा विवाह हो जायेगा।'

'व्हाट वी–वाह?'

'ओह नो, मैरेज इज पौसिबल, टू इचअदर'

'प्रोमाईज।'

'य–ह प्रोमाईज'

'ओके, बाई।'

'बाई'

यहां की हवा का रूख देखकर मेरे मन में अब तक सोया हुआ डर

फिर से जाग उठा। क्योंकि यहां न होरी मिली। न हीरा। न हरि। न रिक्शा खींचने वाला कल्लुआ। न बैल गाड़ी की रीं--चों की आवाज। न ही हावड़ा स्टेशन पर पकड़े गये आदिवासी बालाओं की दर्दनाक दास्तान जो अपने--अपने गरीब मां--बापों की बोझ हल्का करने हेतु हरियाणा, गुड़गांव, असम, भूटान को पलायन कर रही थी। न कहीं (एकाध आखर ही सही) हम भारतीय किसानों की दुर्दशा का बखान मिला। राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका पढ़ कर मन उदास हो गया, मेरे भाईयो।

उस दिन हमारे राजधानी रांची से हो आया। खर्चा--पत्ती के मामले में मेरी पत्नी बहुत ही कठोर औरत है। रांची जाने के पहले, उसने आलतु--फालतू न खर्च करने की सख्त हिदायत दे रखी थी। लेकिन भाईयों लेखक, जुआड़ी और शराबी एक ही जमात के जीव हुआ करते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि उनके जुनून के माप अलग--अलग हैं। मैं किताबों का शराबी हूं। सो, पत्नी के कठोर हिदायत के बावजूद एकाध दो राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाएं ले ही लीं। और इसमें योग ऐसा पड़ा कि राहु केतु और शनि एक ही सीध पर आ डटे। मेरे इस दास्तान की दिशा और इन पत्रिकाओं की रूझान एक ही ओर थी। वह थी-- आज के हिंदी भाषा की विवादास्पद शैली। विद्वान लोगों का कहना है कि यह 'अंग्रेजी' है। इसे हमें अपनाना ही चाहिए। आज यह समय की मांग है। इससे हिंदी का दायरा बढ़ेगा। 'दिल मांगे मोर' 'ठंडा का मतलब कोका कोला' का कमाल क्या कम है? विदेश में हिंदी का दायरा भी बढ़ा और उनके मैनी--पॉकेट का दायरा भी।

हां, 90 के दशक के बाद से हमारी हिंदी कितनी तरक्की कर डाली है, चोरी--चोरी, चुपके--चुपके। पर हम गांव वालों को अंग्रेजी भाषा समझ में नहीं आती। हम जल, जंगल, जमीन पर जीते हैं। इस देश की माटी से जड़े हैं। हमारा रंग चोखा है। इसलिए हम इन दिल्ली, मुंबई, कोलकाता के पब्लिक स्कूलों से निकले, कूल वर्ग के छोकरे, छोकरियों को नादान ही समझते हैं। सबेरे का भूला, शाम ढले घर को आयेगा ही, ऐसा हम मानते हैं।

लेकिन, देश में अब हिंदी, हिंग्रेजी और अंग्रेजी के बीच लड़ाई छिड़ने वाली है। सुकून की बात है कि इस लड़ाई में लेखिका चित्रा मुद्गल और मृणाल पांडे हमारे साथ हैं। लेखिकाएं माताएं भी हैं। माताओं के विचार घर--गृहस्थी से जुड़े होते हैं। उनके विचार बुनियादी धरातल को कभी नहीं छोड़ते।

"मुझे अंग्रेजी की चिंता नहीं है" -- चित्रा मुद्गल जी कहती हैं। उधर, मृणाल पांडे जी आत्मविश्वास पर जोर देते हुए कहती हैं – जब कभी कोई देश आत्मविश्वास से भरपूर हो जाता है तो वह अपनी संस्कृति और भाषा पर गर्व करने लगता है। (नवनीत, सितंबर 08)

बहरहाल ये भटके राही टेम्स से ठेस लग कर फिर गंगा किनारे बंशी बजाने आयेंगे ही, हमारी ऐसी उम्मीद है। "उसने यह दास्तान मुझे सुनाया। फिर भी साहित्यिक जुनून में जीने वाला यह जीव हार नहीं माना। यह लंबा दुखद दास्तान सुनाने के बाद, अंततः पांव पर गिरते हुए वह मुझसे कह ही डाला, मेरे दोस्त, दोस्त को अपना दुखड़ा न सुनाऊं तो किसको सुनाऊं? तुम तो पहुंचे हुए लेखक हो। दुनिया को मेरा दुखड़ा तो सुना दो।"

मैंने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, अच्छा देखता हूं। बातचीत बढ़ती गयी।

'वागर्थ में चलेगा?'

'वागर्थ। हां, चौबे जी भी कभी इसका जिक्र किया करते थे। पर.... पर हिलसा मछली ने बंगाली मनसरोवर को गंदा कर रखा है। क्या ये भद्रजन मुझ 'मोटा माथा' को पनाह देंगे?'

'अच्छा तो कादम्बिनी चलेगा?'

'हां, चलने को तो चलेगा। लेकिन अंदर में विराजमान मृणाल पांडे जी के चमकदार चेहरे से मन शंका भी होता है। स्त्री सशक्तिकरण की दुनिया में मैं कैसे शक्तिमान हो सकता हूं? उसे छोड़ो।'

'हंस?'

'हां, यह कोशिश कर देख लो। हो सकता है प्रेमचंद की दिवंगत आत्मा को यह दुखद दास्तान सुन कर सुकून मिले।'

'तू मेरा पतितपावन भी हो, मेरे दोस्त। छपास रोग से मुक्ति दिलाइये, हरिमन। चाहे यह छपे, चाहे छंटे। छाती पर मन–भर पत्थर तो रख ही दिया।'

जपः रिनिः

अईंग दाँणा मे दाँणा में....

का का। कागे। हे सेन होरा होड़ो अईंग के माफ तईंग में। अईंग दुरंग हरिया का तनिः। हे, मगर अम दोईंग दाँणा जः में तई केना। मेन्दो दुरंग रः रूईद रेदो का गे, चंदन दारू कोरः बिर रे।

अमः लुतुम, हातु–हातु को अईंग कईंग इतुआना। अम अले खूंट निः ओ का गे न अले जाती निः। अले खूंट रेन मियद होड़ो उदुबःईंग चि अम चंदन दारू कोते बिरा कन बिर रेम डेरा कदा। इनिः अईग के नेयावेः उदुबाःईया चि अलेयः सोबेन रसिका को, साज–श्रींगर को, अलेयः सोबेन लंदा–जगर को अमः जी कुकुरू रे हजार कपटा कोते हेडेद केसेदा कना। चनः ने सोबेन चीज को अले, कटाती ते, मेद–लुतुर ते लगड़ा, जला आर बईरा लेकन होड़ो को कम ओम रूड़ा लेया? नेया जगर कुलि नगेन गे अम केईंग दाँणां–बेड़ा जः मेया। अम दाँणा जब चंदन बिरेईंग सेनोः जना दोईंग अकादन्दा गिड़ि जना। हन्डे दो दारू–दारू कोतो–कोतो बिंग को कोलंगिया कना। सरतला कना। इनकुअः सिपु ते अईंगः जी लसुर गिड़ि जना। आर एन्तः तेईंग निर उकुन जना। एन बाद रे ओड़ोः एन कुटुंग सोंगे तः तेईंग सेनोः जरा। निसुकन इनिः मतेःईया चि अम इकिरन जलाकर तला रेम बासा कदा। दुकु रः समन्दर रे रोड़ गोएठा लेका टिपिलयंग तन जी होडोमो भला एनतःओवे सेनोः जना। मेन्दो एनतः रेवो दारू चुटी लेका कुड़ा–सुकुडु कन रः बोरोआन साड़ी अईयः जी के अलय–बलय केदा। आरेः काजि केदा, पापी होड़ो नेरे अमः चिकन कामि मेनः? नेया दो चोके–हाई दिसुम तनः। अमः दो पाप रः समन्दर रः दो का। ओहरि तईंग, हे उकु–दनंग कन होड़ो ओकेरे अमः हातु कातु दो? अमः चिलकन रूप? समंदर रः साड़ी रे मेनः चि होएवो दुदुगर रः हू–हूः रे? अईंग होएवो दुदुगर रे दाँणाईंग अचुआ कना। हाय रे गोड़े, नेरे दो करला चेतन नीम केः हड़द जमा कना। धंसी होएवो आर उपुरीया लारि को ताला रे पुरः गे हेल–मेल होबा कना। धंसी गपा दः ते होड़ो को हातु तना। अरिः मेरोम, सिम–सुकुरि सोबेन को आतु तना। जरोमा कन बाबा डुम्बुई तना। आड़ी–गोड़ा को ओदोः तना। जरगी रे अईग झाड़ा रोग सब किः आ। लाई हासु तेईंग बलय तना। अईयः जी बुड़म लो तना। हे गतिंग होको रेईंग नम में?

दिसुम रेन हागा–मिसि को, ने होड़ो दाँणा–दाँणा ते कोतः कई सेना कदा? बिर कंदर होनोर बड़ा तन रे गसा–गसा सकम गुरूडु कोईंग लेलेलः।

इकिरन जलाकर आर बुरू लेका सलंगि कुड़ा तन दः रे गोए–जीद रः सोन्जोको नपमेईंग लेल लः। होएके दुदुगर धंसी गपाः रः लारि को तुपुंगुड़ि तनेईंग लेल लः। जी लिटिब–लिटिब रिम्बिल साड़ीईंग अईम लः।

हे ंगतिंग, नः अम दाँणा–दाँणा तेईंग लगा जना। आर ओड़ाः रेईंग दुब हपेया कना। रपुद किड़की जपः रे। अले दो डोन्डो हातु होड़ो को। अले दो अलेयाः हातु गे बोड़े दिसुम ले मेतः। हातु रे शहर कोरे लेका पढ़ावा कन बाबू बाबुआइन को गे बनकुआ। इनकुआः जगह रे ओड़ाः जपः कोरे, हातु ताला कोरे पेड़ेःआन दाड़ा–कोते को लिडु– जोपोद तन, भोरसा ते पेरेया कन बोः चुटि हरि, सरजोम, एदेल मंदुकम, बारू ने लेकन बिर दारू–कोंगे अलेयाः गुरू–गोमके कोदो। अलेयाः नगेन दो निकु गे उडुः देंगा कोदो, असरए बोरसा को दो। निकुगे अलेयः दुकु तेको दुकुआ। अलेया सुकु तेको सुकुआ। निकुआः दुकु तेले दुकुआ। निकुआः सुकु तेले सुकुआ। एना मेन्ते निकुआः होरो–जंगी नगेन अले निंदा–सिंगि हातु ले पहरा जदा। बिर कोले पहरा जदा। अले निकुआ दारू सुबा कोरे जी जीनिद जकेद ले अड़ावा कन रोपावा कना।

अहा! हेनेः हरि बा चिराए जोरोए अईयः खिड़की पोंका रे बोलो–बोलो तना। बा लेल ते रसिका परिड़ि तना। ने सुकु–रसिका दिन नगेन गे चिम तंग ते। मनची रे दुब हरेल–हरेल केया तेईंग लेलाउ तन तई केना अईयः उडुः लगा तन जी ते। तिसिंग दिना ते सिदा कोरे नेया गेईन उडुः लगा तन तई केना चि ने दारू–सिंह को इदोड़ोः बई चिमि नंग होएवो–दुदुगर, चिमि नंग धंसी गमा रः को जी लः ला। चिमि नंग जेटे लोलो को सातिंग लः।

मेन्दो तिसिंग एन कन दुकु लेकन दिन का। तिसिंग दो खूब सुकु–रसिका लेकन दिन तना। सिंह बोंगा सः ते रसिका रसी लिंगि–जोरो तन दिन तनः।

....हे तोबे, कजि तने ईंग तई केना चि मनची रे दुबा कनाते एन हरि बा रः डन्टी खिड़की रे गेसा–गेसा ते भला पोटः गिड़ियोः तना। एन दिपिला जी रे नेकाईंग ठोर जद तई केना दिसुम रः मियद ओते कूंड़ रे दुब हपेया कन चि हसुर तन सिंगि केः लेल डुम्बुई जःईया। मेन्दो अचका गे मेद को चिलका जना, नेका अटकर जना चि लोलो गितिल रे मिद टिपः सिसिर दः उईउः जना। नेका अटकर जना चि रोड़ बड़े दरू रे सुड़ा गोतो उडुंग जना। अईयः गोसोवा कन जी आला रूड़ा जना।

ओड़ा तेईंग उडुंग लेना। आर दारू बुटा तेईंग सेन जना। सुड़ा

सकम कोईंग हम्बुद जदा। सकम कोईंग चोः जदा। नेते हेन्ते दारू कोईंग हम्बुद बेड़ा जदा। आर रेईंग लेल जदा सोबेन दारू सिंह नेका गे पुरना सकम को बगे केया ते नवा नवा सुंड़ा सकम कोते नवः लेका को सिंगर साजेया कना। आर अकोवाः बोर बाबू कोअः लेल दायेम नगेन पन्ति–पन्ति नेको तिंगुआ कना। अईयः डोन्डो जी उडु–उडु ते दो बलु गिड़िवो तना। आरेः उडुः तना, ओहो, ओको बोर सिदा हिजुआ?आर कोन्या केः चोईया? मोने मोने रेगे अलंग पुतिद जवा–

जपः रेन सोंगेम बईया कना
सुकु–रसिका तेम पेरेया कना
रसिका दुरंग गे दुरंग गुतआ कना।
ओहो रे लुतुम माईंग चि कागे बसंत बा तईंग दो!
कुटुंग–कुपुल लेकम मेतः ले
उडुः उडुः तेम बलय तः ले
लिबि लिबि होएवो रेम कजि तुकाः ले
ओहो रे लुतुम माईंग चि कागे बसंत बा तईंग दो।
नाः नाः गेचम दुडुम एवोना कना
ओको चिमतंग दोम निर अदेना
एना तेगे तिसिंगेम हिजुआ कना
ओहो रे लुतुम माईंग चि बसंत वा तईंग दो।

पड़ोसन

मैं ढूंढता तुझे था...

नहीं नहीं हे अनजान राही, मुझे माफ कर देना। मुझे कविता गढ़ना नहीं आता। हां, तुझे ढूंढता तो था। मगर कविता की क्यारी में नहीं, वरन चंदन के वन में।

तेरा नाम–धाम मुझे पता नहीं। तुम मेरे बिरादर के हो न जाति–गोत्र के। मेरे बिरादर के एक मित्र ने बताया कि तुम चंदन के वन में वास करते हो। उसने मुझे यह भी बताया कि हमारा श्रृंगार रस, हमारी सारी हंसी तुम्हारे मन के हजार द्वारों के अंदर कैद हैं। क्या तुम उन्हें हम अपाहिज इंसान को न लौटाओगे? इसी सवाल के जवाब खोजने के निमित्त तुम्हें खोजता–फिरता हूं।

जब चंदन वन गया तो गजब हो गया। वहां, डाल–पात पर नाग–नागिन फन फैलाये लिपटी हैं। उनके विषैले फुंफकार से मेरा मन आहत हो उठा। मैं वहां से भाग खड़ा हुआ। तत्पश्चात फिर मित्र की शरण गया। इस बार उसने बताया कि तुम अथाह समंदर के अंदर वास करते हो। दुख के गंदे नाले पर उपलता मेरा काया वहां भी जा पहुंचा। पर वहां भी उतुंग लहरें पर खेलता भयानक शोर ने मेरा दिल दहला दिया और कहा, पापी इंसान यहां तेरा क्या काम! यह तो मीन विरांगनाओं का देश है। तेरा देश तो पाप का समंदर है, जल का नहीं।

उफ! हे अजनबी राही, कहां तेरा देश? क्या तेरा भेष? समंदर के शोर में या बरसाती झंझावात के जोर में? मैं तुझे बरसाती झंझावत में ढूंढने चला।

हाय! यहां तो करेला पर नीम चढ़ा। अंधड़ हवा और आवारा काले बादलों के बीच घोर सांठ–गांठ, घोर षडयंत्र! मुसलदार वर्षा से जन–जीवन अस्त–व्यस्त। किसान उदास। खेत–बाड़ी, घर–द्वार, गाय–बाछुर, कुत्ते–बिल्ली सुअर–मुर्गी, सब के सब नदी में बह गयीं। खड़ी फसल डूब गयीं। मेड़ें टूट गयीं। मुझे निमोनिया हो गया। मेरे मन– समंदर पर दुख–अशांति के हजार लहरें थपेड़े मारने लगीं। हे रसिक राज मैं तुझे कहां–कहां ढूंढूं?

दुनिया वालों! इस सर्वशक्तिमान अभीष्ट को ढूंढने में मैंने क्या–क्या सब्द नहीं सीखा! जंगल–जंगल पता करने में झर–झर झरते उम्रदराज पत्तों का झरना देखा। अथाह समंदर की गहराई और उतुंग हिमालय शिखरों पर जीवन–मरण का अपूर्व मिलन देखा। बरसात के अंधड़ हवा में उड़ते बादलों के दर्द भरा दास्तान सुना।

अब में हार मान कर अपने देश के घर में दुबका पड़ा हूं। टूटे कोठरी के सामने। हम गंवार ग्रामीण अपने गांव–परिसर को ही अपना देश मानते हैं। ईष्ट मित्रों के नाम पर कोई शहरी बाबू–बाबुआईन नहीं वरन ये सशक्त बांह फैलाए दायित्वपूर्ण सिर ऊंचा किये अमलतास साल, सेमल, महुआ, कुसुम

आदि ही हैं। हमारे लिये ये ही हितैषी हैं। शुभचिंतक हैं। ये हमारे दुख में दुखित होते हैं। हम इनके दुख से दुखित होते हैं। इसलिए ये हमारे रखवाली के रूप में गांव–घर के चारों ओर पहरेदार बन खड़े हैं। हम उनके नीचे शरणागत बन अड़े हैं। जीवन–मरण तक अड़े हैं।

अमलतास का एक डंठल मेरे झरोखे के सलाखों को छू रहा है और इस रसखान की खोज खबर में हार मान कर रोज मचिये पर बैठै–बैठे इस अमलतास को निहारता रहा था, अपने उदास मन से। अब तक मैं इन रहनुमाओं के दर्द भरे दास्तान ही देखता–सुनता रहा था। कहां मुसलदार वर्षा के बौछार! कहां निर्दयी अंधड़ आंधी–तूफानों के थपेड़े! और कहां तो कलेजा सुखा देने वाली प्रचंड गर्मी।

लेकिन आज ऐसी दुख भरी बात नहीं थी। आज तो तन–मन को ईश्वरीय सुकून पहुंचाने वाली बात थी।

....तो मैं मचिये पर बैठे–बैठे भारी मन से रगड़ खा रहे उस ठूंठ अमलतास के डंठल को निहार रहा था। मेरा उदास मन ऐसा अनुभव करने लगा था जैसे क्षय रोग से ग्रसित संसार के किसी कोने पर बैठे–बैठे गोधूलि की बला में ढलता सूरज देख रहा हूं। लेकिन सहसा मेरी आंखों को न जाने कहां से शकून मिला। लगा कि तभी रेगिस्तान पर वर्षा की बूंदे पड़ी हो। उस ठूंठ डंठल पर नई कोंपले निकल आयी हैं। मेरा मुरझाया हुआ मन खुशी से गदगद हुआ जाने लगा। बाहर आ कर मैं उन नवागंतुकों से आलिंगबद्ध हुआ। चूमा। फिर पुलकित मन से उन पहरेदारों के शरण में गया। पाया कि ये भी नयी दुल्हिन बनने के आस में अपनी नई श्रृंगारों से सज–संवर कर अपने प्रियतम के स्वागत–सत्कार में खड़ी हैं। मेरा अनाड़ी मन सोचते–सोचते बेहाल हुआ जा रहा है। सोचता है– आखिर वह प्रियतम कौन भाग्यशाली होगा? और मेरे जुबान से स्वतः ही फूट पड़ा–

पड़ोसन बन के आये हो
बहार बन के छाए हो, गीत खुशी के गाए हो
हाय! कहूं कि न कहूं नाम तेरा बड़ा है बसंत बालमा।
ईष्ट मित्र बन के आये हो, डगर–डगर में सताये हो
वन–व्यारों पे छाए हो
हाय! कहूं कि न कहूं नाम तेरा बड़ा है बसंत बालमा।
अभी तो सोए से जगे हो, कभी तो पास से भागे हो
तभी तो पास आये हो
हाय! कहूं कि न कहूं नाम तेरा बड़ा है बसंत बालमा।

सरजोम सकम रेयः पुडुः

सलगा आर कटकम हातु रेयः सपागिन दो पुरः ते पुरः तीन कोस मेनः। एन हातु किंग ताला रे मियद सिलईटीदिरि रेयः टुंगरी मेनागा। नेया टुंगरी गे ने हातु किंगताला रे पचिरि लेका तिगुआ कना। टुंगरी हन परोम अईअः हातु सलगा मेनः। आर ने परोम रे मिसिर जीअः हातु कटकम मेनः। टुंगरी जपः जपः ते, सपेल मुलि मियद बुरू गाड़ाव लिंगि तना।

सिंगि तुरोः ते सिंगि अईउबोः मुलि जिलिंग कन ने बुरू जोला कोरे ओड़ोः गे हातु–कातु को मेनागा। अले आदिवासी कजिन तन को भला–बिर–कन्दर को बगे केयाते ओको रेले तईना? मेन्दो, मिसिर जीअः हातु दो सपेल पीड़ी रेगे मेनः। नेरे, अठउरि रे मिसा को पीट जदा। वृस्पैति हुलंग। अपुईंग उदुबेया नेया पीटी पुरः गे सिदाते लगावोः तना। इमतंग दो होड़ो को पैदल ओड़ोः उरिः गाड़ी सदोम कोते को हिजुः तन तई केना। अले ने बिर मुलितेन होड़ो कोअः नगेन दो नेया पीटी गे नम–उदम, आय–उपाय ओड़ोः रसिकान तेयः होरा तनः। अले ने दिन वृस्पैति हुलंग कले सिउःगा। अपेपे कजि दड़ियः चि नेया दिन अलेयः उठाउरि रेयः छुटी तनः। रूड़ुः सुस्तैन रेयः दिन तनः। आर ने लेकन रूडुन सौमय रेगेचा होड़ोआः जी आला कन तईना। एना मेन्ते, दंगड़ा तन, दंगिड़ि तन, होन तेन, हड़म तन, सोबेन को नेहुलंग सिंगि तुर तन लोः गे बिर तेको सेनोःअ। ओकोए दो हुरूमसुकु को रेगेः सेनोगा। ओकोए दो नयल मः गे सेनोगा। आर तिकिन सिंगि गाड़ा रे रेड़ा कोः चि मन्डिजोम केया ते पीटी को सेनोगा। ओकोए दो नयल गे अकिरिंग इदि जदा। ओकोए दो जलाकारी, सिकुअरगेः इदि जदा। एना को बदला रे हुड़िंग लेका टाकाए नम जदा। आर अयः होन बुड़ि कोए असुल जद कोवा। अलेयः जीबोन रेयः दो नेयागे कजि कामि। नेयागे चोलोन तनः।

गोमा हातु रेन अईयः दाई कुड़ि तनिः। अपुईंग उदुबेया निकु दो अलेय रईतिको तनको। कारण जानः गे मेनः इनकु पुरः गे रेंगेः होड़ो को तनको। इनकुतः इमिनुंग ओते हासा बनोः चि अपुते अयः होनको मजा लेकाते असुल–पढ़ाआ– लिखावा दड़िया को। मगर इनकु रे रेंगेः बलय तन रेय जां चिमिनंग गे उड़ुः बनोः। इनकु अकोअः दिरि लेकन होड़ोमों, फड़ंगा लेकन सुपु ओड़ोः पेड़ेः रेगे अकोअः सुकु–सुपुकु मेनागा। पेड़ेः गेको जोम तन। पेड़ेः गेको नूतन। नेका रेयाः मेन तेगे निकु सिरमा संगिल जलोः को सेने। जायं तः रे काको लिचुरेन। निकुअः जी–निनिद लेल केयाते आईंग मोने–मोने रेगेईंग

मेनेया ने बिर–दारू कोरेयः सकम–सकम कोरे ओला कन, ने लेकन पेड़ेः यान, लंदा रसिका तन, ने लेका गोमके–मलिकिया कन होडो कोअः सोना कजिकमि को यदि ओड़ोः होड़ो कोको ओतोंग, पढ़ावो रेदो इनकुअः जी–जिनिद इसु पुरः बुगिनोः।

गोमा दाई सरजोम सकम रेयः पुडुः बई हुन्डी केयाते पीटीः चिपिदेः इदि बिउर जदा। इनियः ददाते बिरसा नयल बई केयाते पीटी अकिरिंग इदि जदा। बोकोते सेंदेरा स्कूल सेनोः लेकए होबाव तना। एंगाते–अपुते तकिंग ओड़ाः दुअर लेले लोः सते रे बयरः रः जोड़ाः कोकिंग अकिरिंग बेड़ाए। आर ओड़ाः दुआर किंग चलवे।

कटकम हातु रे दो मिसिर जीयः गे सेसेन तना। ओड़ाः रे मियद दोकन मेनः। ओड़ोः ने चिमिन जपः जपः तेयः हातु कोरेयः नयल–फाल, जोड़ा–सिकुअर को किरिंग निःओ निगे मेनःई। नः दो नेया किरिंग–बेसा रेयः चोलोन पे मेने चाहे मिसिर जीअः सुगड़ा–दुलड़ा जगर–सिबिल। ने होड़ो गोटा जपः जपः रेन हातु होड़ो कोए हाथ चबा तदकोअ। ने स्कूल ओड़ाः वारी रे तिगुअ कन मुसिंग आबाए कजि लः ने स्कूलेम लेल जदा बेटा, हातुरेन चन्दु मिसिरः पोसब तेगे बईया कना। मिसिर जी अबुअः विधायक तः ए सेनोः जना। अर अयः हातु कटकम रे का बई केयाते अबुअः हातु रे बई रिका केदा अईवोगे जी सुकु चि, ओते हासा बनोःरेव, नेया नगेन ओतेईग ओम केदा। एन लेका ते रेया स्कूल बईया कना। ने बिर कन्दर कोरेन गेंड़ें गेंड़ें होन को, रेंगेः रबंग तन अपु कोअः होन को, जां–जेता हिसब ते स्कूल रेयः दुअर दो को तड़ोमेय। अकोअः लुतुम ओल दोको इतुईया...। गोमाः अपुते कजि तन तई केना – सेंदेरा केव ने स्कूल रे लुतुमेः ओल रिकाईया। ओड़ो....।

हूं, सरजोम सकम रेया पुडुः अकिरिंग केयातं, पढ़ाव दड़ियाईया? इनकुआः रेंगेः लेल केयाते अबाइंग कजि कोटोंग किःया।

गोमाः बरिया कमिया ती किंग, ने पुडुः को कोरे पेरेः पेरेः टका किंग आउईया। आईंग दो उडुः तेईंग बलय जना, बेटा, चियः अबु सोबेन निकु लेका कउिदम कबु इतु जोम तना? नेया कजिंग अईउम केद चि जी रेईग रोः गिड़ि जना चि हड़म चनः ए कजि केदा, सेरेंग रे सेंणा–गंगा गे लिंगि आउ जना।

सेन्देरा नाः पांच क्लास रे मेनः ईया। ओड़ोः बर सिरमा गेदो सरेया कना। एना ते दो सातवांए पासेया। कलुः –पुडुः को अकिरिंग–अकिरिंग ते

मिडिल पास। नेया हुडिंग कजिंग तनः? डाक–डकिया, हकीम, मुंसि को जपः रे मोलोंग–सिरमा केयाते पुन्डी रेदोए हेन्दे दड़ियाः। बोकोअः नगेन हुनर ते लुम गिड़िन तन दाईय जी जां– जेता होसोड़ो–हुलः दो कागे। ने लेकन उडुः विचार कोरे जुगुतु जीबोन रेयः हिता जंग को जमा कना। मेन्दो, मोलोंग रे ओला कन दुकु ओकोए मिटव दड़ियः ने हिता–जंग ओमोन बुटुः रेगे तई जना। हुड़िंग चन्डुः तयेम ते गोमाः धंधा रे बराकाइति? होका एटेः जना। ओड़ाः रे पेड़ेयान होड़ो को खोमउ जना। एयंग आबा तकिंग हड़म–दुडःमाउ जना। हारा–माताव तन सुड़ा संगेन कोतः ते सोताए नमे?

कोलकाता, मुंबई रेन बाबू–बाबुआईन को कजिया–झारखंड दिसुम दो सोरोग तनः। ने ओते भीतर रे बराकाईति मेनः। ओते चेतन, दारू कोरे तोआउ चेणेयः सुगड़ रःए। मेन्दो कागे। तोआउ चेंणेयः रः सोबेन इमतंग रसिका गे का अईमोवोः। इनिओ मिसा–मिसा दुकु रेः रः बेड़ाए। असल कजि दो नेया होबा जना–मिसिर जीअः हातु मुलि ते नः दो मियद सुनुम संडका बई जना। हातु अतोम रे संडका कोरेयः जोपोड़ेन बई जना। ने जोपोड़ेन रे रांची, टाटा, कोलकाता, मुंबई, कोरेयः संडका, जोंड़ेंन कना। मिसिर जीअः मरंग होनते कोड़ा देवनाथ रांची शहर रे मियद 'डेकोरेशन दोकन' नेः खोलव तदा। नेरे अंड़दि–कोडंदि कोरेयः सना– समपोड़ो कोआते कलुः पुडुः सोमते नमोगा। देवनाथ नेया तेगे ओड़ाः तेव ने लेकन समपोड़ो कोए आगु जदा। आर होड़ो सरजोम सकम रेयः कलुः पुडुः बदला दिकु कलुः पुडुः गेको किरिंग जना। गोमाः पुडुः जेतय काको किरिंग जना। आर इनिः ओड़ोः ए बलय एटेः जना।

देवनाथ मुसिंग पंचाईट के नेयावएः जगर लः ने सिलईटिदिरि टुँगरि गे मियद पुन्डी साहेब किरिंग जद लेका कजि अईयोः तना।

बर सिरमा बितव जना।

होन्देर सिदा पीटी रे कलुः पुडुः को दोकन तद गोमाइंग लेल लिया। जपः रेगे तिंगुअ कन सेन्देरा केईंग कुलि कयकिः या, चीया होन सेन्देरा, चिमिन लेका पुडुःकोम अकिरिंग केदा?

जवाब रे सेन्देरा मुरगुई–मुरगुई लन्दा बारिः लन्दा केया। मगर अईंग लेल नम केदा, ने अयः लन्दा रे जी रेयः केटेः तई केना। हुनर तई केना। पेड़ेः तई केना। जिलिंगचकर, सलंगि। ने सिलईटि टुंगरि लेकागे चकर। ने सरजोम दारू को लेका रे सलंगि...।

साल पत्ते का दोना

सलगा और कटकम गांव का फासला तकरीबन तीन कोस है। बीच में एक स्लैट पत्थर का टीला है जो दोनों गांव के बीच पर्दा का काम करती है। टीले के उस पार जंगल के किनारे, अपना गांव सलगा और इस पर मिसिर जी का गांव कटकम है। टीले के तराई हो कर पहाड़ी नाला भी बहता है।

पूरब से पश्चिम की ओर फैले इस बियावान जंगल में, अगल–बगल, अड़ोस–पड़ोस में और भी कई टोले हैं। हम स्वभाव से जल–जंगल जमीन पर जीने वाले आदिवासी भला और कहां बसते?

मगर मिसिर जी का गांव कटकम तो समतल मैदान पर ही हैं। यहां एक साप्ताहिक हाट भी लगता है वृहस्पतिवार के रोज। पिताजी के मुंह से सुना है यह हाट वर्षों–वर्षों से पैदल, घोड़ों, बैलगाड़ियों के जमाने से लगता आ रहा है। हम उस वन–क्षेत्र के लोगों का यही मनोरंजन और आय–उपाय का एकमात्र संबल–सहारा है। हमारे यहां वृहस्पतिवार के दिन खेती–किसानी पूर्णतः वर्जित है। आप चाहें तो कह लें कि किसानों का साप्ताहिक अवकाश का दिन है यह। फुर्सत का दिन और फुर्सत के क्षण में ही तो इंसान का दिल खिल–खिल जाता है।

सो, क्या बच्चे, क्या बूढ़े, क्या युवतियों, पौ फटते ही वन–गीत गाते हुए, जंगल की ओर कूच कर जाते हैं। कोई मधुरस लूटने, कोई हल–हेंगा लाने तो कोई साल पत्ते तोड़ने... और दोपहर होते–होते राह पर नाले में नहा–धो कर घर आते। फिर रात का बासी भात और मुनगा साग खा कर हाट के लिए प्रस्थान कर जाते, सारे सामग्रियों के साथ। विनिमय में शाम ढले कुछ रूपये नसीब होते। हमारी जिंदगी की यही राम कहानी है।

गोमा मेरी गांव की दीदी है। पिता जी ने बताया कि गोमा के परिवार वाले हमारे रैयत हैं। कारण चाहे जो भी हो, उनके पास इतनी खेती की जमीन नहीं कि सालाना उनका भरण–पोषण ठीक ढंग से हो सके। मगर उन्हें इसका कोई दुख नहीं, कोई चिंता नहीं। इन्हें अपने कद–काठी स्वस्थ शरीर, बलशाली भुजाएं, फौलादी छाती और स्वाभिमान से ऊंचा उठता मस्तक पर अपार विश्वास है। उनकी दिनचर्या देख कर मेरा मन कुलबुलाने लगता है, प्रकृति पूजक, पर्यावरण संरक्षक, साल वृक्षों के पत्तों–पत्तों पर अंकित तीन–विवेकों को यदि इंसान आत्मसात कर ले तो उसका जीवन और मंगलमय हो उठे।

मोगा साल पत्ते का दोना बना–बना कर हाट में बेच आती है। उसका बड़ा भाई बिरसा हल बना कर बिक्री करता है। छोटा सेन्देरा स्कूल जाने के लायक हो रहा है। माता–पिता गाय–गोबर संभालने के साथ–साथ रस्सी–झाड़ु आदि बेच कर कुछ आमदनी हासिल करते हैं। कटकम गांव में मिसिर जी की तूती बोलती है। घर में एक दुकान भी है। साथ–साथ इतने सारे घर–गृहस्थी, हल–बैल, खेती–किसानी के सामानों के थोक विक्रेता भी हैं। अब आप इसे व्यवसायी तोल–मोल कहें या उनकी आत्मीयता। उनकी नेक–नीयती तो देखने–सुनने लायक है। इस राजकीय मध्य विद्यालय के अहाते पर खड़े होकर पिजाती ने कहा था– यह जो स्कूल देख रहे हो, चंदु मिसिर के बदौलत ही बन पाया है। जमीन तो अपनी है। पर जमीन भर रहने से क्या होता। मिसिर जी विधायक से जा मिले। हमारे लिये यह ईश्वरीय वरदान ही तो है। इस क्षेत्र के नंग–धडंग बच्चे कम से कम स्कूल का दरवाजा तो देखेंगे.....। गोमा के पिताजी का कहना है कि छोटका सेदेरा को भी इसमें दाखिला देंगे।

'साल पत्ते का दोना बेच कर?' उनके आर्थिक हालात पर मुंह बनाते हुए मैंने कहा।

गोमा के दमदार हाथ उन दोनों में भर–भर रूपये लायेंगे। मैं तो शर्मिंदा हूं कि क्यों हम उनसे जीने की कला नहीं सीखते। लगा कि मेरे अनपढ़ पिताजी ने क्या कहा कि इस चट्टान पर ज्ञान–गंगा बहा दी।

सेन्देरा अभी पांचवे दर्जे में है।

और दो बरस ही तो बचे हैं। उसके बाद वह मिडिल पास करेगा। दोना–पत्तल बेच कर मिडिल पास। यह क्या कम है? हूँ, डाक– डकिया, हकीम–मुंसियों के सामने स्वाभिमान के साथ काली स्याह का ठप्पा तो लगायेगा न। छोटे भाई के प्रति समर्पित, आश्वस्त गोमा का हृदय कोई कच्चा–चिट्ठा तो नहीं। यहां सफल जीवन के ताजे बीज समाहित हैं। लेकिन नियति के बिगाड़ु को कौन बना सकता है। ये ताजे बीज अंकुरित होने से रह गयीं। कुछ माह से उसका धंधा मंदा पड़ने लगा है। आमदनी कम होने लगी है। मां–बाप बूढ़े हो चले हैं। आशा– भरोसा का कोमल पौधा सेन्देरा सिंचे तो कैसे?

कोलकाता, मुंबई के बाबू–बाबुआईन कहा करती हैं– झारखंड तो

स्वर्ग है। इस धरती के बाहर--भीतर बरकत ही बरकत है। ऊपर से झाड़ी--झुरमुटों में कोयल का सदा हर्षगान।

नहीं, नहीं। कोयल का सदा हर्षगान नहीं होता। दरअसल बात यह है कि मिसिर जी के गांव होकर अब एक राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरता है। यह राजमार्ग झारखंड की राजधानी रांची और लौहनगरी टाटानगर को जोड़ता है। यही नहीं, गांव के कुछ मील दूरी पर रोड जंक्शन भी है। यहां कोई कोलकाता--मुंबई से भी आ कर वनफूलों के संग हंस--गा सकता है। दूसरे यह कि मिसिर जी का बड़ा लड़का देवनाथ रांची में एक डेकोरेशन का दुकान चलाता है। यहां दुल्हा--दुल्हिन के कागजी मुकुट से लेकर दोना पत्तल तक मिलता है। घर गांव की बात ही निराली है। जब से लड़का का दुकान चमकने लगा है मिसिर जी के हाट--बाजार में भी दोना पत्तल बिकना बंद सा हो गया। आज उनके घर में चीन--मेड टार्च हैं, मच्छर मार टेनिस रैकिट है। शादी विवाह के प्लास्टिक दोना पत्तल आते हैं। और तो और देवनाथ मिसिर ने गांव की बैठक में कहा था कि यह सिलेटी वाला टीला किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी को दिए जाने की बात चल रही है। दो बरस बाद।

गंतवार के हाट के गोमा के पसरे हुए दोना--पत्तलों का नजारा देखा। सामने खड़ा सेंदेरा से पूछा-- क्यों बच्चे कितना दोना बेचा?

जवाब में मुक्त हंसी के बीच बुलंदी की ऊँचाई थी। उन गगनचुंबी साल वृक्षों की ऊँचाई से ऊपर। और इरादा उस सिलेटी पत्थर की तरह कड़ा।

• • •

हड़द सुक

नैंग नंग को परियार तेयद् ने हुडिंग दिन सिदा जकेद अलेयः हतु कटा तेव सेन तिउः खूब बलय रेयः कजि तई केना। चियः चि अले दो बुरू जोला चेतन को रे ले डी डुंगरीय कदा। हातु रेन मॉ–बोको दई तको जोला लतर बुरूगड़ा ते नू–जोमेयः दः आउ को टोगोः तन तई केना। बुड़िया बुड़िया नानी तको दो अबुंएन कोते सेनोः हिजुः को अकादंदाव तन तईकेना।

सुनुम संडकालोः ते जोड़ेन संडका बनोः जन लेका ते स्कूल को का तई केना। एना मेंते अले हतु रे सोबेन कोगे सेंणा रेयः सिबिलगे कले नमा कद् तईकेना। होन–गँडा को स्कूल सेनोः बदला उरिः मेरोम को को गुपि रिका जद् को तई केना। निकुगे मरंग जनाते अरकी बाई, पीट–पलन ओड़ोः सेन्देरा जिलु जोम बेड़ा रेंगे सुकु को नम जद तई केना।

नेसोमय ओको लेका नसीब ते, गोटा हतु रे ने हड़म गे हुडिंग–हुडिंगः पढ़ाव कना। निगे अले होन कोए सुतुः–संगोमा कद् लेका मेनःईया। सिउः चलुः कजि–कमि कोरे मेनेम चि हकीम–हुकुम, कोर्ट–कचहरी कोरेयः कजि–कमि कोरे मेनेम चि राड़ि–बाड़ि दिकु–दरोगा सिपई को लोः दुबजारूकोरे मेनेम चि हतु हगा–मिसि को सेंणा अजोम कोरे मेनेम, ने लेकन बुगिन–बुगिन कजि–कमि कोरे ने हड़मगे अले के होराए उदुबा ले तना। ओड़ोः गे, बिर–दारू को बनचव, सरना–सके को बनचव, इलि–बुल, अरकी–बुल, रनु–बुल कोवा ते बनचव रेयः सोना कजि को ने हड़म गे अजोम जः लेया। एन लेका ते नि अले तला रे पुरः गे बुगिन, सिंहबोंगा लेकन होड़ो मेनः ईया।

जनव सिरमा लेका गे, ने सालो अयः गुरिः दुबि बिउर–बिउर ते सुकु, ककारू ओड़ोः मनल–कैता कोए रोवा बिउर तदा। ने साल दो बीडीओ साहेब सःते नि मरंग जाति सुकु रेयः जगेः नम लः। आर एना कोगेः रोवा बिउरा कदा। सुकु दो पुरः गे जो जना। गोटा जाँका हका पेरेः गिड़ि जना। जोम तेव का चबव लेकाः जो जना। ने हतु रे, अले पुरः गे रेंगेः रबंग ओड़ोः डोन्डो होड़ो को मेनः लेया। रोज सेतः अईउब होड़ो को अरकी भट्टी इलि भट्टी रेगे दुबा कनेम लेल कोवा। ओकोवा–ओकोवा ओड़ाः कोरेदो मिद् सेरा चाउलि लोः गे सुकुलेटे जोम केयाते मोंड़े होड़ो कोवः लाईः पेरेगोः तना। आर दंगड़ा होन को दो जुआ पटी कोरगे दुबा कनेम लेलको। मगर, हतु रेन दंगड़ी होन कोदो एनका, दो कको लेलोः। मेन्दो अकोवः ओड़ाः कोरेयः दसा लेल लेल ते इनकुगे असादि हपेव तना। खयरब को लोः ते आसाम, भोटांग, पंजाब कोते कमिनाला

को सेनोः गिड़िन तना। आर एनसःरेगे जाएं गेको रेः रचः जदकोवा। नेय जगर को दो पुरः गे दुकु--बलय रेयः जगर को तनः। ने हड़म दो बुधन ले मेतईया।

हतु रेयः ने लेकन दुकु दसा को लेल केया तेगे (जाआ बु मेन लेया) बुधन, मुसिंग, होरा--संडका आर स्कूल रेयः दरखास्त ओल केयाते मेसो साहेब तः ए इदि तुका जना। एन हुडिंग तएयोग सिरमा कोलोः दो हतु मुलिते मियद सुनुम संड़का बई जना। तएयोग सिरमा दो मेसो सःते मियद आवासीय स्कूलो बई जना। गड़ा ते हतु जकेद मियद पीसीसी संड़काव बई जना। नः दो नु बुधन हड़मः जोर--केटेः तेगे ने हतु रेयः नगेन सान--जटा ओड़ो उतुईयः को पीट पलन ओडोः शहर ते किरिंग--बेसा नगेन को इदि--आउ जदा। मेन्दो नाःव गे इलि--अरकी, नू--जोम का बगेया कना।

तिरिंग सोहराई रेयः दिन तनः। उरिः गई कोते ओते हासा कमिया कना। नाः बाबा ऐंगा कोदे ऐंगा ओड़ा तेकिंग बोलो--साड़ोवो। एना मेन्ते उरिः गई को हेयारि--गोवारि रेयः नेग सोहराई दोः। सुकु--रसिका रेयः नेग सोहराई। जनव सिरमा लेका गे, जॉन नेग--जोग कोरे जॉन उतुईयः तरकारी को, दाली को ने हड़म हतु रेन रेगेः रबंग होड़ो कोए ओम बेड़ाको तईना। ने नेग रेव सुकुई ओम बेड़ा लेः कोवा।

हतु रे मजा लेका तेगे सोहराई नेग परोम जना। जॉए ओड़ाः रेवो दुकु--बलय रेबः जगर को का अईउम बेड़ा जना। मेन्दो गपा तेरे सेतः सौना मुण्डा बुधनः रचा रे होड़ो कोए आउ तद् कोवा। आर इनिः को एरंग--सिगिद जई। चेनः चिका जना ने लेकन बुगिन होड़ोअः ओड़ाः रे? दे बु लेल--कोएवोः लीय-- नु--बुला कन चि सौनाए खचरान तना-- हुं हड़म मुहा कारे। खूब सेंणाम बड्ना, अले जपः रे का? नेः दो अमः सोबन सेणाँ को लेल जना। सोबेन सेणाँः दो तमः कोः को दुपिल केदा। रेंगेः तना ले मेन्ते जॉ हड़द सुकुगेम ओमा लेय का? उतु दो उतु बरादुकु ते नेग रेयः मेन्ते चुन्नु साहू तः ते मिद् सेरा चाउलि ले कड़ि आउ लः। एनव तले हड़द् जना। गोटा निदा समा मेले गितिः अंग कना। नः दो ने अमगे सोबेन लेटे को जोमेमे। एन लोः दो सोबेन लेटे को तयः होड़ोमो रेः तयः तदा। बुधन मुण्डाए अकादंदा गिड़ि जना। आरेः कजि तना हेलाया सौंना नेया दोम चिका केदा? हतु--हागा मेन्ते बुगिन लेकम कजि--कुलि किः ईग रेदो काचि बई जुना? अमबारि गेदो सुकु कम जोमलः। हातु रे ओड़ोः गेको जोमलः। इनकु दो जांव काको मेन जेदा। अमः सुकु गिचि हड़द जना? सौंना (खींस केयाते) हे। अईयः गे सुकु हड़द जना। तोबे चा

नेकाई खदराव तना। कम पतिया तन रेदो निकु हतु हागा को कुलि कोम। हतु मुण्डा बरगाए कजि केदा– हेगा आबा बुधन। सौना दो ठीक गे: कजि तना। ने लेकन नेग सोमय रे निकु तिसिंग निदा गोटा ओड़ा: रेन होड़ो को समा लाई गेको गिति: अंग कना। अपे चिमद हड़द सुकु पे ओमा लेद् कोवा। लेटे तकोअ: हड़द जना।

बुधन कजि केदा, अच्छा, सुकु बदला सुकु बु ओम बदला कोआ। चाउलि बदला चौली। तौ रेव हतु रे एपेरंग–सिपिगिद ओलोका होबव। मुखियासागु मुण्डा, बुला कन चि: कजि तना–अम: नेय काजि को ने पंचाइटी कए पतिया:। जगर दो नेयगे मेन चि मिसा रपुद्जन सिम अण्डा का बई रूड़व। मिसा सेनो: जन टोटे ओड़ो: का सब रूइव। एन लेका गे, मिसा प:सा जन चाउलि ओड़ो का चाउलि रूड़व। ने लेका दशा रे ने पंचाइटी नेयय फैसला केदा चि अयर रे ओड़ो: ने लेकन होसोड़ो–हेन्दो को हतु रे अलो होबव, मेन लेका ते ने जो–बा तन सोमय रेगे, सुकु नाड़ी बुटा रेगे हद् सिदो: का। चिय: चि नेया रेय: जंग–बा को अलो तई नो:। आर हातु रेन रेगे: रबंग होड़ो कोलो: होसोड़–हेन्दो अयर रे, अलो होबव मेन लेका ते सजई हिसब अमके मियद् खस्सी आर मिद् चादु इलि ओम होबवगा।

संगि सेता को जप: रे एसेकर सेता चिलकाए दड़ि? पोंचो कोअ: कजि हिसब लेका गे कजि–कमि होबा जना। सुकु नाड़ी बुटा रेगे हद् सिद जना। खस्सी आर चाटु इलि ओम जना। बुधन हड़म पोंचो फैसला लेल केयाते हयद गिड़ि जना। सोबेन ओड़ा: रेन को गोसो गिड़ि जना। ओकोए जाआ होड़ो कोअ: जी–कुड़म रे ओला कन पतरा–पंजी को ओल–बढ़ाव दड़िया रेदो, ने सोमय बुधन हड़म: पतरा रे नेय गे ओल चिनव तना, जाआ चि होन: जो बदला नाड़ी गलती ते चन: मेन्ते सजई आईंग को आंमईंग तना?

मगर, इलि–बुल, अरकी–बुल रनु–बुल ओड़ो नू– जोम ते बुला कन मुण्डा समाज रेन होड़ो कोअ: कजि–कमि गे बिनगा मेन:। बुधन डन्डेव को ओम रिका कि:। इज्जतो को डुम्बुई रिका कि:। गपा तेरे सेत: परका स: दुक मेन्ते आईवोगे दुबि मुलिंग सेनो: जना। लेल केयाते जी रे खूबेईंग दुब जना। सुकु बुटा ते रसि जोरो तना। हाय रे गोड़े तईंग दो अले दो मेद्–लुतुर बनो: जना। रसिका रेय: रसि जोरो तला चिबई अएय: होड़ोमो रेय: मएयोम जोरो तना ओकोए उदुबा ले?

तीता लौकी

कुछ वर्ष पहले तक अपने गांव तक पैदल जाना भी मुश्किल की बात थी। क्योंकि हम पहाड़ीवासी जो ठहरे! हमारी मां–बहन पीने के पानी ढो–ढा कर सुदूर पहाड़ी ढलान के नीचे से लाती थीं। बूढ़ी मां, दादा–दादी हाथ–मुंह धोने, स्नान आदि करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करते थे।

गांव से मुख्य सड़क तक कोई सम्पर्क सड़क न रहने के कारण हम वर्षों से शिक्षा, स्वास्थ्य और पेयजल आदि बुनियादी जरूरतों से वंचित थे। गांव के बच्चों को स्कूल में पढ़ने के बदले मवेशी चराने या अनन्य घर के काम पर लगाये जाते थे। आगे चल कर यही बच्चे शराबखोरी, नशाखोरी, चोरी, डकैती, व्याधागिरि आदि में ही अपना सुकून पाते थे।

इस समय पूरे गांव में यही बूढ़ा, गंजे पहाड़ पर एरंडी के समान थोड़ा–बहुत पढ़ा–लिखा व्यक्ति है और यही हमें वर्षों से संभाल कर रखे हुए है। अभी तक, खेती–किसानी में कहें– कोर्ट कचहरी में कहें, चाहे शहर से आये पढ़े–लिखे बाबुओं से बात–विवाद में कहें या हकीम, दरोगा सिपाहियों से बतियाने में, यही बुजुर्ग संभालते थे और संभालते आ रहे हैं एवं हमें रास्ता बताते आ रहे हैं। और भी, जल, जंगल जमीन को बचाने के बारे में, सरना–मसना को बचाने के बारे में, नशाखोरी से बचाव के बारे में यही बुजुर्ग महाशय हमें गुणवान बातें, दिशा–निर्देश की बातें बताया करते हैं। इसलिए यह व्यक्ति हमारे बीच सम्मानीय ही नहीं हमारे पूजनीय देवता सिंहबोंगा के समान हैं।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी उसने अपने खुला गोबर कम्पोस्ट के किनारे–किनारे लौकी, कोहड़ा, सीम, कैथा आदि तरकारियां रोप रखी थी। इस साल इन्हें बी.डी.ओ. साहब की ओर से इन फसलों के हाईब्रिड नस्ल की बीज मिली थी। इसलिए इस बार फसल खूब फले–फूले। लौकी तो इतना फल दिये कि पूरे झांक पर लौकी ही लौकी नजर आने लगे। खाते–देखते अघाने के समान।

इस गांव में हम बहुत ही गरीब और अशिक्षित अपढ़ लोग रहते हैं। लेकिन हर रोज सुबह–शाम लोग शराब की भट्ठियों, हड़िया के गोदाम में ही बैठे नजर आते हैं। किसी–किसी घर में तो अध सेरा चावल के साथ लौकी की खिचड़ी पका–खा कर ही पांच–पांच जनों के पेट भरते हैं। किशोर तो जुए के अड्डों पर ही बैठे ठाले दिन काटते नजर आयेंगे। लेकिन किशोरियां हुनरवान होती हैं। ये घर की दशा–दिशा को समझती हैं। लेकिन इनके भी

धैर्य टूटता नजर आता है और घर का बोझ कम करने के ख्याल से ये भी काम की खोज में आसाम, भूटान, हरियाणा, पंजाब की राह पकड़ लेती हैं। ये किशोरियां उधर ही आर्थिक, शारीरिक शोषण झेलते–झेलते मर–खप जाती हैं। ये बातें बहुत ही पीड़ादायक हैं। हमने इस बुजुर्ग का नाम बुधन रखा है।

इसी दुर्दशा को देख कर ही शायद एक दिन यह बुधन सम्पर्क सड़क बनवाने के नाम पर मेसो साहब के पास दरखास्त लेकर चले गये थे। दरखास्त देने के कुछ साल बाद मुख्य सड़क से गांव तक एक पक्की सड़क का निर्माण हो गया। फिर एक साल बाद एक आवासीय स्कूल भी बना। पहाड़ी नदी से गांव तक एक पीसीसी भी बना। आज इस बुधन के बल पर हमारा गांव पहले का नहीं रहा। इसका पुराना चेहरा बदल गया है। बच्चे स्कूल पढ़ने जाते हैं। पेयजल लाने की सुविधा हो गई है। गांव तक सम्पर्क सड़क बन गई है। माताएं–बहनें कमाने खरीदने शहर को जाती हैं। लेकिन अभी नशे की लत लोगों में नहीं गया है। आज सोहराई त्योहार का दिन है। हम किसान हैं। मवेशियों से खेत जोतते हैं। साल में एक दिन इस सोहराई में हम मवेशियों का याद करते हैं। उन्हें पूजते हैं। सजाते–संवारते हैं। यह खुशी का त्योहार है। हर वर्ष की तरह ही यह दानवीर बुजुर्ग बुधन गांव वालों को तीज–त्योहार में दाल–तरकारी इत्यादि दिया करता है। इस बार के सोहराई में भी इसने गांव के दोस्त–बंधुओं को लौकी दे रखा था।

सोहराई का त्योहार हंसी–खुशी के साथ कट गया। किसी के घर से कोई दुख–तकलीफ की खबर नहीं मिली। लेकिन आज सौना मुण्डा, बुधन के आंगन पर लोगों को लेकर आया है। सभी लोग बुधन को गालियां बके जा रहे हैं। आइये इस भद्रजन के घर में क्या कुछ हो गया है। देखें–

नशे में धुत, सोना क्रोधाग्नि में जलते हुए चिल्ला रहा है – बूढ़ा नहीं तो। अपने को खूब बुद्धिमान समझते हो ना! यही तो तुम्हारी बुद्धिमानी देख लिया। अरे तुम्हारी बुद्धि तो बगुला उड़ा ले गया। हम गरीब हैं तो क्या हुआ? इसका माने कोई तीता लौकी ही दोगे क्या? क्या हम जानवर हैं? हुं बड़ी मुश्किल से चुन्नू साहू के यहां से पाव भर चावल उधार करके लाया और तेरी लौकी के साथ खिचड़ी पकाया तो वह भी चला गया। सारी रात बिना खाए ही सो गया। अब लें, ले इसे तुम ही खाओ, ले....(और उसके बदन पर खिचड़ी फेंक देता है)

बुधन को काटो तो खून नहीं। उसे पूछता है। अरे सौना तुमने यह क्या कर डाला? गांव का भाई समझ कर तुमको लौकी दिया। केवल तुम भर

तो लौकी नहीं खाया। सभी को दिया। वे सभी तो कुछ नहीं बोल रहे। तुम्हारा ही लौकी तीता हुआ?

सौना – (क्रोधित हो कर) हां। मेरा ही लौकी तीता निकला। इसीलिए तो क्रोध में जल रहा हूं। नहीं मानते हो तो ये सब से पूछ लो।

बरगा – हां चाचा सौना ठीक ही कहता है। उस दिन त्योहार जैसे दिन में ये लोग बेचारा भूखे सो गया। सुना है आप ने इन्हें पकाने के लिए तीता लौकी दे दिया था।

बुधन – अच्छा, लौकी के बदले लौकी दिया जायेगा। चावल के बदले चावल। ताकि गांव में इस तरह का झगड़ा न हो।

मुखिया – तुम्हारी ये बातें यह पंचायत नहीं मानता। बात यह है कि एक बार अण्डा फूट जाने पर दुबारा नहीं बनता। एक बार छोड़ा हुआ तीर वापस नहीं जाती। इसी तरह एक पका हुआ चावल चावल नहीं रह जाता है। इस हालत में यह पंचायत यह फैसला देता है कि आगे इस तरह का ठगी व्यवहार न हो इसलिए फल–फूल निकलने के समय ही इसे जड़ से काट दिया जाये। ताकि गांव के लोगों से धोखा–धड़ी न हो। और दण्ड स्वरूप एक खस्सी एवं एक हांड़ी हड़िया देना पड़ेगा।

सौ कुत्तों के सामने एक कुत्ता क्या कर सकता है? पंचों के फैसले के अनुसार ही सब कुछ काम कार्य हो गया। बुधन पंच फैसले देख–सुन कर बहुत दुखी हुआ। परिवार के लोग सब के सब हताश–निराश हो गये। इस समय यदि बुधन के पत्र–पंजिका में कुछ लिखा हुआ होगा तो शायद यही लिखा होगा कि बच्चे (फल) के दोष के आलोक में पिता (जड़) को क्यो सजा दिया जा रहा है?

मगर, नशे में धुत अशिक्षा में डूबा मुण्डा समाज के लोगों का विचार–बुद्धि ही अलग दिखाई दे रहा था। इसे देख कर मैं भी मन ही मन दुखित हुआ। बुधन को जली–कटी बातें भी सुनाई गई। दण्ड भी लगाया गया, ऊपर से आय का स्रोत भी काट डाला गया। फिर इज्जत भी मिट्टी में मिला दिया। दूसरे दिन सबेरे लौकी के कटे धड़ से रस रिस रहा था। ओह! हमें तो इसे जानने के लिए बुद्धि ज्ञान नहीं, आंखें–कान नहीं। पता नहीं, धड़ से यह रस खुशी का है या बदन पर से हत्या का खून बह रहा है, कौन बतावे?

• • •

लेखक परिचय

नाम : मंगल सिंह मुण्डा

जन्म स्थान : रंगरोंग, खूँटी (झारखण्ड)

शिक्षा : बी. ए.

व्यवसाय : द.पू.रे. गार्डनरीच, कोलकाता से 2005 में सुपरवाईजर पद से अवकाश प्राप्त।

प्रकाशित पुस्तकें :

हिन्दी : 1. छैला सन्दु (उपन्यास)

2. महुवा का फूल (कहानी संग्रह)

मुन्डारी : 1. कामिनाला (काम की खोज में) नाटक।

2. हड़द सुकु (तीता लौकी) मुण्डारी–हिन्दी कहानी संग्रह।

3. दुरंग को कोरे अद जना? (गीत कहाँ खो गये?) मुण्डारी–हिन्दी लघुकथा संग्रह।

सम्प्रति – फिल्म–पटकथा एवं स्वतंत्र लेखन।

Publisher :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokharanchi@gmail.com

ISBN : 978-93-81720-31-8

978-93-81720-31-8